

बि दे ह बिदेह *Videha* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

I SSN 2229-547X

VI DEHA

बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च २०१२ (वर्ष ५ मास ५१



अंक १०२)

बि दे ह बिदेह *Videha*

बिदेह <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम

मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st*

Maithili Fortnightly ejournal नर

अंक देखरौक लेव पुग सभकेँ बिदेशे कए

देख । Always refresh the pages for

viewing new issue of VI DEHA. Read

in your own script

Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur

mukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam

Hindi

ई अंकमे अछि:-

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च

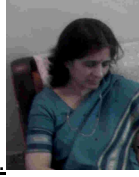


२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानक संख्या ISSN 2229-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१. कायिनी कायायनी-शोशित कथा



२.२. उमप्रकाशे सा- कथा- निर्मोहिया



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X



२.३. बि बिषय पाठक- नमेटिवा
रिखाह



२.४. शिरक्याब सा 'टिब्व'- अनदधन्या
अकासमे सामाजिक रिमर्श



२.३. शिरक्याब सा 'टिब्व'- मिथिलाक लोक
देरता



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-



२.७. नरेंद्र कुमार सा/ १.एस एच जीक माधव
स आगा रैठत बिहार प्रदेशे ये गठित होयत दस
बाथ एच एच जी २.बाज सभा चुनाव-भाजपा जदय
ये उम्मीदवारक भीड तह बाजदक अस्तित्वक संकट



२.१. शिरकुमार सा 'टिब्व'- मैथिली कथा
साहित्यक विकासमे बाजकयक योगदान(आगा)

३. पद्य



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



३.१. शान्तिनम्मा चौधरी



३.२. उमप्रकाश सा



३.३. शमित मिश्र २



उमेश पासवान



३.४. जगदीश प्रसाद मण्डल



नरीन

ठाकुर

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका* बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-



३.३.१.

चदन कुमार सा.



नरैन

कुमार “आशा”



३.३.

निशान्त सा



३.१.

डा. शशिधर कुमार



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



३.४. श्याम सुमन-कि कूचड़ १ पब चान
देखवई

४. मिथिला कवा-संगीत. रानीता कुमारी २.



बाजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) ३. डमेश
मन्दन (मिथिलाक रनस्पति/ मिथिलाक जीर-जल्लु/
मिथिलाक जिनगी)



—
भाषापारक बचना-लेखन -[मानक मैथिली], [बिदेहक
मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष
(अष्टबनेष्टपब पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.
एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql
server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.]



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA



अपन मित्रके बिदेहक बिषयमे सूचित कर ।



↑ बिदेह आब.एस.एस.फीड एनीमेटेबके अपन साइट/ ब्लागपब लगाउ ।



ब्लाग "लेखाउट" पब "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कर "फीड यू.आब.एन." मे

<http://www.videha.co.in/index.xml> ठागप केनासै सेहो बिदेह फीड प्राप्त कर सकैत छी ।

गूगल बीडबमे पठरा नेन

<http://reader.google.com/> पब जा क२ Add a Subscription बटन क्लिक कर आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेसट कर आ Add बटन दबाउ ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-



बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक
पहिल पोडकास्ट सांठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>



Vi deha Radi o

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि
पारि बहन छी, (cannot see/write
Maithili in Devanagari /
Mthilakshara follow links below or
contact at ggajendra@videha.com) तँ
एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउ। संगहि
बिदेहक सुँत मैथिली भाषापक/ बचना लेखनक नर-
पुवान अंक पढ़ू।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए
बौद्धमे ऑनलाइन देरनागरी ठाँप कक, बौद्धमे कापी
कक आ रडि डाक्यूमेन्टमे पेसुँ कए रडि फागनकेँ
सेर कक। विशेष जानकारीक लेन



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ggaj endra a@vi deha.com पर सम्पर्क
कर ।)(Use Firefox 4.0 (from
WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari /
Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/
Google Chrome for best view of
'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download
of old issues of VIDEHA Maithili e
magazine in .pdf format and
Maithili Audio/ Video/ Book/
paintings/ photo files. बिदेहक पुरान
अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो
सम्बन्धित सब (उच्चारण, रीड स्वयं साव आ
दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करवाक हेतु नीचाँक
लिंक पर जाउ ।

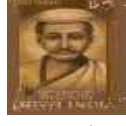
VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाटककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्थापना । भारत आ नेपालक माझमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन काविसँ महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन छडि । मिथिलाक महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैलिक पारवर्षि कावक मूर्ति, एहिमे मिथिलासँवमे (१२०० वर्ष पूर्क) अभिनोथ अंकित छडि । मिथिलाक भारत आ नेपालक माझमे पसबन एहि तबहक अन्याय प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, अभिनोथ आ मूर्तिकारक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अनुसंधान सर्गति बिदेहक सर्च-अंगजन आ नृज सर्गि आ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बेरसागठ सभक
समग्र संकलनक लेल देखु -बिदेह सूचना सर्पक
खबर

बिदेह जानकारीक डिसकसन फोरमपब जाडु ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय
जानरुत) पब जाडु ।

ई बेर मुन प्रस्काव(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्लीक
लेल अहाँक नजरिमे कोन मुन मैथिली पोथी उपहाज
खडि ?

Thank you for voting !

श्री बाजुदेव मन्दलक “खर्बूवा” (करिता-संग्रह)

13.88 %

श्री रैचन ठाकुरक “रैठीक अपमान आ छीनबदेरी”(दुष्टा
नाटक) 9.61 %



श्रीमती आशि मिश्र “उचाष्ट” (उपन्यास) 6.41%

श्रीमती पद्मा नाक “अनुभूति” (कथा संग्रह) 5.69%

श्री उदय नारायण सिंह “नटकेता”क “नो एन्ट्री:या
प्रतिनि (नाटक) 5.69%

श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रौनैत रिगडित” (कथा-
संग्रह) 5.69%

श्रीमती रीणा कर्ण- भारनाक अष्टिपञ्चव (कविता संग्रह)
5.69%

श्रीमती शैलानिका रमक “किन्तु-किन्तु जीरन
(आमेकथा) 7.83%

श्रीमती रिता बानीक “भाग रौ आ रौचन्दा” (दूठा
नाटक) 6.76%

श्री महाप्रकाश-संग समय के (कविता संग्रह)
6.05%



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

श्री तारानन्द रियोगी- प्रलय बहस्य (कविता-संग्रह)

5.69%

श्री महेंद्र मणियाक “दुतता घैर” (नाटक)

7.12%

श्रीमती नीता झाक “देशे-कान” (कथा-संग्रह)

6.41%

श्री सियाराम झा “सबस”क थोड़ै आगि थोड़ै पानि

(गजल संग्रह) 7.12%

Other : 0.36%

ई बेर रौन साहित्य प्रबन्ध(२०१२) [साहित्य अकादेमी,
दिल्लीक लेल अहाँक नजबिमे कोन मूल मैथिली पोथी
उपहाऊ अछि ?



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

श्री जगदीश प्रसाद मल्लिक जिक “तरेगन”(रौत-प्रेमक कथा संग्रह) 52.94%

श्री जीरकांत - थिथिबक रिखवि 25.49%

श्री मूवनीधर याक “पितृपितृ गाछ 19.61%

Other : 1.96%

ई रैव हारा प्रवक्ता(२०१२)[साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेल अहाँक नजरिमे कौन कौन लेखक उपहाउ छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक “अर्चि” (कविता संग्रह) 27.06%

श्री रिनित उपेन्द्रक “हम प्रेम्ते छी” (कविता संग्रह) 7.06%

श्रीमती कामिनीक “समयसँ सम्राट करैत”, (कविता संग्रह) 5.88%



श्री प्ररीण काशिक “रिषदन्ती रवमात कातक बति”
(करिता संग्रह) 5.88%

श्री आशीष अनटिन्हावक “अनटिन्हाव आखव”(गजल
संग्रह) 21.18%

श्री अकशात सौबलक “एतरेँ ठा नहि” (करिता
संग्रह) 5.88%

श्री दिनीप कमाव मा “वृष्टन”क जगने बहरै (करिता
संग्रह) 7.06%

श्री आदि यायारवक “भोखव पेसिनसँ निखन” (कथा
संग्रह) 5.88%

श्री डमेशि मल्लक “निशुक्ती” (करिता संग्रह)
11.76%

Other : 2.35%



ई रैव अन्नराद प्रबन्काव (२०१३) [साहित अकादेमी,
दिल्लीक न्नेन अहक नजबिमे के उपहाऊ छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेशि कृमाव रिकन "ययाति" (मवाठी उपन्यास श्री
रिष्णु सखावाम खान्दकव) 37.5 %

श्री महेंद्र नावायण वाम "कार्मेनीन" (कौकिली उपन्यास
श्री दामोदव मारजो) 12.5 %

श्री देवेन्द्र ना "अन्नभर"(रौन्ना उपन्यास श्री दिवान्द
पानित) 13.89 %

श्रीमती मेनका मल्लिक "देशि आ अन्न करिता सभ"
(नेपालीक अन्नराद मून- रेमिका थापा) 11.11 %

श्री छिन्न कृमाव कण्ठप आ श्रीमती शिशिराणा- मैथिली
गीतगौरिन्द (जयदेव संस्कृत) 11.11 %



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्री बामनाथ सिंह "मनाहिन" (श्री तकशी शिरशेकव
पिन्निक मनयाली उपन्यास) 12.5 %

Other : 1.39%

फेनो प्रबन्ध-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर
साहित्य अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !
श्री बाजनन्दन दास 53.7%

श्री डा. अमरेंद्र 20.37%

श्री चन्द्रभान सिंह 24.07%

Other : 1.85%

१. संपादकीय



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीसिंह खन्कूना, ISSN 2229-

आधुनिक मैथिली नाटकक आवस्य (गुणनाथ सा जगदीश प्रसाद मन्त्र रैचन ठाकुर आ आनन्द कुमार सा) , मैथिली बंगमच संस्था आ निर्देशक

गुणनाथ सा

“लोक मन्त्र” मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन
केने छथि । मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन ।
हुनकर नाटक कनियाँ-प्रतवा, पाथेय, ओ मधुयामिनी,
सातम चरित्र, शेष नखी, आजुक लोक आ जय
मैथिली सबक रैब-रैब मंचन भेल छल । रौद्रना
एकाङ्की नाट्य-संग्रह- ईमे रौद्रनाक २४ ठाँ नाटककाबक
२४ ठाँ नाटकक संकलन ओ सम्पादन अजित कुमार
घोष केने छथि आ तकर रौद्रनासँ मैथिली अनुवाद श्री
गुणनाथ सा द्वारा भेल छल ।

कनियाँ-प्रतवा- गुणनाथ सा जीक ओ पहिल पुष्पि
नाटक थिक । नाटक रूढ़िगत समन्वित करैरना घुषीय
महापराज छल । कथा काठब प्रथापर आधारित छल
आ तकर परिणामसँ मूल्या अभिनेता आ मूल्या
अभिनेत्री मनोरिकावहाज भऽ जागत छथि, तग
मनोदशक सटीक चित्रण आ रिलेक्स भेल छल ।

मधुयामिनी: एकाङ्की नाट्य शैलीमे दुष्टा पात्र, प्रकृष संग्रह
परिवारक पक्ष लेनिहार आ मूल्या तकर विरोधी ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

संज्ञा परिवारक पक्ष लेनिहारक सामाजिकपूर्ण रिजय होगत छि । "लोक मञ्च" मैथिली नाँठ पत्रिकामे प्रकाशित ।

पाथेय: एकाँठ नाँठ शैलीमे बचित, झुदा पुष्पाङ्कित सब विशेषता ईमे भेटैत । झुदा अभिनेता मिथिलाक अधोगतिसेँ दुखी भऽ गामकेँ कर्मसूत्री रैनरैत छथि, सृजन विरोध करै छथि । झुदा रौदमे पनी हुनकर संग आरि जाग छथिन्ह । भाषा मधुर आ चलायमान छि ।

दाव-बुमकब: एकाँठ नाँठ शैलीमे बचित । दाही रौदीसँ समान निम्न आ मध्य-निम्न रक्षा स्वतंत्रताक पहिनाहियो आ रौदो जीरि कोपार्जन लेन प्रवास कबरा लेन अभिशिष्ट छथि । माता-पिता रिहीन दाव बुमकबजी कनियारै नैहमे रैसा कऽ आ सन्तानहीन पिता पितृयोनकेँ छोडि नग्न प्रवास करै छथि ।

सातम चबित्र: एकाँठ नाँठ शैलीमे बचित । मैथिली बगमचपव महिना अभिनेत्रीक खलार, सातम चबित्रक प्रतीकामे पुरातन खतम भऽ जागत छि । "लोक मञ्च" मैथिली नाँठ पत्रिकामे प्रकाशित ।

शेष नखि: आधुनिक सामाजिक पुष्पाङ्कित नाँठक । पिता-माताक मूलक रौद अग्रजक अन्नजक प्रति पित्ररत



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीकृत बर्कडूम, ISSN 2229-

ररहाव । अन्नज चाकरी करे छथि, परिवर्तनशील
सामाजिक परिवर्तित शिकाव भ२ अचिन्तनीय
कार्यक्रान्त करे छथि आ अन्नज प्रतापित होग
छथि । मूदा अन्नज मवणासन पनीक प्राणवमार्थ
साहसपूर्ण डेग उठा लेत छथि ।

आजुक लोक: पुर्णक नाटक । विषय निम्नपर्याय
रैरौजगावी आ रियाहक दायित्वक रौम ।

जय मैथिली: पुर्णक नाटक । मिथिलाक भाषिक-
सांस्कृतिक समझा एकव कथारसु अछि ।

महकवि विद्यापति: विद्यापतिक नर विमर्ष ।

उदयनाबायं सिंह नचिकेत

नायकक नाम जीरन : नरन नर रिचावक अछि,
शक्तिबाय धनिक, कब्रिषित अछि आ अपन सहयोगी
रिनयपव टोबिक आरोप तगा ओकव रैष्टीक अपहर्ष
आ रैनाकोव कवरैए । रिनय आमेहवा क२ लेए ।
नरन आ ओकव मित प्रकाश आ दीपक सभल भेद
थोलेए । ओकव प्रेमिका रैनाकोवक परिणामस्वरूप
आमेहवा करैए । नरन रिम्झिपु भ२ जागए । **एक
छव बाजा:** एकल बाजा अभिमान क्रमाव देरक दिन



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मदिवा आ रैथोक पाछाँ खवाप भेलै । ओकवा एक्कै
रैथी मोहिनी छै, ठेकाक अन्तरमे ओकव रियाह नै
भूहँ पारि बहल छै । झंशी रिबँची, मेरक चतुवन
आ धर्मकर्मरानी पनौ सँगे नाँक आगाँ रैथै ।
मोहिनी आ शिक्षक श्रुतकवक रीच प्रेम होय छै ।
नो एन्ट्री: मा प्रिन्सि: पोस्टमोडर्न ड्रामा, जकव
एँसडिँ एकवा ज्वातिबीहक धुँत समागम लग घुबँ
छै । झुझा आँकि नकक द्वावपव झुगत सब अँरै छथि
आ थिम्मा-थेवहा सुनँ छथि, रौदमे पता चलै जे
चित्पुत्र/ धर्मराज सब नकरी छथि आ द्वावपव लागल
अछि ताना, नो एन्ट्री ।

जगदीश प्रसाद मन्दन

मिथिलाक रैथी-प्रथम दृश्य- महगीक विरोधमे
कर्मचारिक हड़ताल । महगीक काव- नोकरी दिस
सुकने, खेतीक क्रान्ति । भू-सम्पत्तिक क्रान्ति, दान
दहेज सब-सम्पत्तिक रैठ गतरी । रियाहक नाम-
नाम । पैसाक दूकपयोग । कता प्रेमी धन
सम्पत्तिकेँ तुच्छ बुनैत । कौबनेष्टियाक संग
कौबनेजक नकरी, जे नाच-गान सिखैत, चलि
गेलि । सब-सम्पत्तिकेँ पोकैठमाँ सेहो । सबकारी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

पदाधिकारीकेँ राजेपब रोक । अपहवक रैठ १७वी,
बंग-रिबंगक अपहवणोक कारण िसर्ह पागये नै
जानोक खेनराड़ । सबकारी अहसबक नैतिक
द्रास । चमूद्धक घटना । सबकारी तंत्र कमजोब
भेने अस्वबलक वृद्धि । समाजक रिघठनमे जाति,
सम्प्रदाय अत्यादिक योगदान, जेगसँ अज्जत-आरक
धरि खतबामे । सिनेमा, खेन-कुदक प्रभारसँ नर
पीठ १ अपन सब किछ- कल, खनदान, रेरहाव,
छोडा, राहबी हराक अनुकवणमे पगला बहन अछि ।
ठहैत सामंतीमे संस्कारक छाप । अनाव-पोखरि
सुत्रिणक सगड़ १क अछि । मिथिला नाबी शैक्तिक
प्रतीक सीता । दहेजक माबिमे जाति-पाँतिक
नास । धन-सम्पत्ति आचाव-रिचाव नष्ट करैत कोष्ट-
कचहरीक चपेटमे समाज, आपसी सगड़ १क
रुप्रभार । नरहारकमे आमेरनक अन्तार नाबीक रीच
असीम धैर्य-रान-रिधरा मनुष्यपब समाजक प्रभार ।
पटुलो-१ नखन कावगरो नडकीक मोन दहेजक आगु
चोपष्ट अछि । ओना प्रकषक अपेक्षा नाबीक महत्तर,
प्रकष प्रधान रयरस्थामे कम बहन गहना-जेरैब
सेहो अहितकब । नर पीठ १क नाबीमे नर उत्साहक
जकबत । नर-नर काज सिथैक हुनब । दोसब
अर्क- सामंती रयसन- भाँग । नर पीठ १ सेहो

25



रिसर्गति । ओकरा मेठैएरै । पाँचम अंक- आदर्श
रिवाह । नर चेतनाक जागवण जे रैरैस्था
रैदनात ।

कम्प्रामागज- सामंती समाजमे छैतैत छषि आ
किसानी जीरन, नर पुँजीरादी समाजमे छषिके पुँजी
रैनेरैक रैरैस्था, बुँझिजिरी आ श्रमिकक पलायनसँ
गामक रिगडुँत दशा, समन्वयरादी रिचाव-दर्शन ।

नमेलिया रिखाह- मिथिलाक समाजमे अरैत रिखाह-
संस्कारक प्रक्रियामे बग-रिबगक राहरी प्रभार, राहरी
प्रभारसँ बग-रिबगक रिवाद, नमेलक जन्म,
नमेलियाक रूपमे रिखाह प्रक्रियामे होगत रिवादक
रिषद चर्च ।

रिवागना- ग्रामीण जीरनक रैजारान्छुथ हएरै, सस्ता
श्रम-शक्ति भेठैनासँ पुँजीपति रक्षा द्वारा शोषण,
श्रमक नुँठसँ ग्रामीण लोक जानरबोसँ रैबव जिनगी
जीरै जेन मजदूर, कपेयाक नाचमे नीच-सँ-नीच
काज कबरैक जेन तैयाव लोक ।

সমন্বিত- সমাজে প্ৰতিটো পুঁজী বৈপ্লৱিক জেন
 ঠাইত প্ৰতি সৰ্বজনীন বিনিয়াদী সমস্যাৰ ৰূপ আ
 তৰ নিদান জেন সমন্বিত হৈছে সমস্যাৰ সোচক
 জৰুৰীপৰ প্ৰকাশ দৈত ওকৰ মন্তব্য ও আৱশ্যকতাক
 ৰূপ ।



बिदेह ठाकुर

बैथीक अपमान आ छानबदेरी: झुग हल, महिना
अधिकार आ अहुरिग्रासपव आधारित दनु नाठक मैथिली
नाठकके नर दिशा दैत अछि ।

अधिकार: अन्दिवा आरास योजनाक अनियमितताके
आव.ष्टी.आ.ग.(सुचनाक अधिकार) सँ देखाव करैरना आ
बिस्मार्स र्मानावपुवसँ दिल्ली जागरना असनी चबिब
मज्बुक कथा अछि ।

बिग्रासघात: नेशनल हागरक जमीनक अन्धारजामे ठेब
बास पाग देल जाग छै आ ओकरा हडपै लेल
पारिवारिक सङ्ग्रहक रति चठि जाग छै ।

अनंद कथाव म्मा

ठाठक मोल : काठब प्रथापव आधारित नाठक ।
गरीरनाथ आ सुमित्राक पुत्र कामनार्थ पाँच गोठ
कन्या । पहिले बैथीक बिराहमे हुनकब रहुत खेत
रिका गेलनि । दोसब बैथीक कन्यादानक लेल मात्र
राबह कष्टा जमीन रौचल छन्हि । बैथी प्रभा
कान्तेजमे पठित छथि, अपन रहिनक देओव
प्रभाकबसँ सिनेह करै छथि, छोट मांगल-चांगल भाए
महीस चबरेत छन्हि ।

29



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानुषिंह बरकूराम, ISSN 2229-

कोतकाता; मैथिली बंगमच, कोतकाता; कर्मा-सक्रिय
छात्रवृत्ति कोष, कोतकाता; आन अल्लिया मैथिल सघ,
कोतकाता; कर्ण गौश्री:जयन्त लोकरमच, कोतकाता;
मिथिला सेरा संस्थान, कोतकाता; मिथि यात्रिक,
कोतकाता; रैदेही कला मच, कोतकाता; कोकिल मच,
कोतकाता; मिथिला कल्याण परिषद, बिसवा, कोतकाता
(निर्देशन कृत्य कपसँ श्री दयानाथ या द्वाबा १९५२
अ.सँ। सम्प्रति श्री बज्जीत कुमार या निर्देशन क२
बहन छथि, ०५.०९.२०१२ केँ हुनकर निर्देशनमे तैयारी
या लिखित “उपनयनक भोज” मचित भेल।);
नकाब, कोतकाता; मिथिला सेरा समिति रैबब,
कोतकाता; उदय पथ, कोतकाता। मिथिला नाँठ
परिषद (मिनाप), जनकपुर; बामनन्द हारा कतरै,
जनकपुरधाम; हारा नाँठ कला परिषद (हानाप),
पबराहा, धनुषा; आश्रति (उपेन्द्र भगत नागराणी),
जनकपुर; बंग राईका, नेपाल; चरुतवा, शिरोमणि
मैथिली हारा कतरै, गांधी, बैरै, मैथिली सांस्कृतिक
हारा कतरै, रौतहारा, श्री सबसुती सांस्कृतिक नाँठ कला
परिषद, गाम तिराठी (सप्तरी, नेपाल); अकशोदय नाँठ
मच, बाजुरिबाज; सबसुती नाँठ कला परिषद, मेहथ,
मधुबनी; मैथिली लोकबंग (मैलोरबंग), दिल्ली; मिथिलांगन,
दिल्ली। मधुबनीक पञ्चाविडीह ठेगमे श्रीधर नाँठ
समिति श्री धरुचन्द या बसिक, शिरनाथ या आ गंगा
याक निर्देशनमे मैथिली नाँठक मचित होगत बहन
छथि। सांस्कृतिक मच, लोहियानगर, पटना; चित्रपु



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सांस्कृतिक केन्द्र, जनकपुर, गर्दनीरांग कला समिति,
पठना, मिथिलासूत्र, जमशेदपुर, मैथिली कला मंच,
रौकारो, उगना रिद्यापति परिवर्ध, रैगुसबाय, मिथिला
सांस्कृतिक परिवर्ध, रौकारो स्थापना समिति, भानुका
केन्द्र, रिवाठनगर, आंगन, पठना, नरतर्ग, रैगुसबाय,
भारतीय बंगमंच, दबर्ग, भद्रकाली नाट्य परिवर्ध,
कोशगत, मिथिला अन्वर्ध, दबर्ग, बिदेह अंतर्वर्धनीय
अ-जर्नलक नाट्य उमेर ।

मैथिली नाटकक निर्देशक: श्री कमल नाबायण कर्ण
(चीनीक ढङ्ग-अश्विनाथ या/ चाबिपहल- मुन रांग्ना किवण
मैत्र, मैथिली अन्वर्ध- निबसन नाथ), श्री श्रीकान्त
मन्त्र (चन्द्रशुभ्र मुन रांग्ना डी.एन.बाय, मैथिली
अन्वर्ध- रांग्ना साहेर चौधरी/ पाथेय- शुभ्रनाथ या/
नायकक नाम जीरन- नटकेता); श्री रिशु चटर्जी आ
श्री श्रीकान्त मन्त्र (निष्कर्षक- जनार्दन या); प्रवीर
झुथोपाध्याय; रीणा बाय, मोहन चौधरी, रांग्ना बाय सिंह,
गोपाल दास, रूपान, बरि देर, दयानाथ या, त्रिलोचन
या, शिबुनाथ मिश्र, काशी या, अशोक या, गंगा या,
गणेश प्रसाद सिन्हा, नरीन चन्द्र मिश्र, जनार्दन बाय,
श्री प्रशुचन्द्र या बसिक, शिरनाथ या, बरीन्द्रनाथ
ठाकुर, अश्विनेश्वर, सचिदानन्द, बमेश बार्जस,
मोदनाथ या, रिशु अन्वर्ध, जारेद अन्वर्ध था,
कोशीर किशोर दास, प्रशान्त कान्त, अवरिन्द बर्जन
दास, मनोज मन्त्र, रोहिणी बमण या, भरनाथ या,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह, ISSN 2229-

उमाकांत ना, तल्लन प्रसाद ठाकुर, बघुनाथ ना किवण,
महेन्द्र मरगिया, कमार शैलेन्द्र, रिनीत ना, किशोर
कमार ना, कमार गगन, रिनोद कमार ना, के.अजय,
हुवानन्द सिंह ना, नीरम चौधरी, काजल, मनोज
कमार पाठक, आशिनाबाय मी, श्री श्रीनाबाय ना,
प्रमिता ना, तनुजा शर्मा, केशीर नन्दन, ब्रह्मानन्द ना,
संजीव तमला, किसलय फुल्ल, प्रकाश ना, झुल्लुजी
संजय कमार चौधरी, कमल मोहन चून्, अश्वमान
सल्लेख, श्याम भास्कर, प्रेम कमार, संगम कमार
ठाकुर, एन.आर.एम. बाजल, भास्करानन्द ना, आशुतोष
कमार मी, आनन्द कमार ना, मनोज मनुज, संजीव
मी, स्वाति सिंह, सुर्षि, आशुतोष यादव अतिष्ठ,
अशोक अशक, दिलीप रसे, तपन प्रभात, माधव
आनन्द, नरेन्द्र मी, भावत भूषण ना, किशोर
केशीर, रैचन ठाकुर, उपेन्द्र भगत नागरिणी, अनिल
चन्द्र ना, अश्वमान सल्लेख, आनन्द कमार
ना, हेमनाबाय साहू, बामफुल्ल मंडल डोहू, धीरेन्द्र
कमार, उपेन्द्र ना, अतिष्ठ के. नाबायण, चन्द्रिका
प्रसाद ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

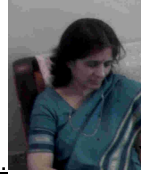


गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

२. गद्य



२.१.

कायिनी कायायनी-शोशित कथा



२.२.

उमप्रकाश सा- कथा- निर्मोहिया



२.३. बिदेह बरि भूषण पाठक- नमेलिया



२.४. शिरक्याब सा 'टैव' - अनन्धधनुषी
अकासमे सामाजिक रिमर्श



२.५. शिरक्याब सा 'टैव' - मिथिलाक लोक
देरता



२.७. नरेन्द्र कुमार सा/ १.एस एच जीक माध्यम
स आगा रैठत बिहार प्रदेशे मे गठित होयत दस
बाथ एच एच जी २.बाज सभा चुनाव-भाजपा जदय
मे उम्मीदवारक भौड तऽ बाजदक अस्तित्वक संकट

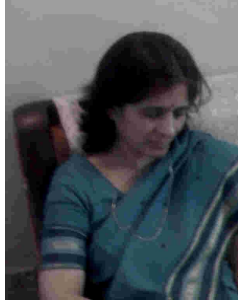


२.१. शिरकुमार सा 'टैवर'- मैथिली कथा
साहित्यक विकासमे बाजकयवक योगदान(आगा)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-



कामिनी कामाचारी

शान्ति कथा

पार्सी सम्पूर्ण होरैत होरैत. . . बाति के रौबह
रौजिअ गेलअ. . . । भवि पैठे था पौरि क' लोकरेद
त' जागत बहल . . . रुदा घनश्याम गार्डन के कनि
कात मे जेरौ लेल ठाठ केदाबनाथक हाथ कसिक
पकडि रैड ककण स्रब मे रौजल. . . 'आय अहाँ नहि
जाडु भाय. . . मन रैड उदास लगेत अछि. ।'
'उदास. .' केदाबनाथ के हसी नहि लगलैन्ह. . .
एतेक रैडका धुमधाम . लाङ्गल साँडपौप . . .
.. फिल्म स्थाव राना पार्सी. . .स्रवा .. स्रन्दवि. . . के
रौरजूदो जीनगी के ओ बस नहि प्रदान कयल ..
जेकवा लेल. . . किन्नात हुनक मोन चातक पाथी सन
लालायित बहल. . . । निहलै स दुनू सीधे ठोप ल्हाव
के अपन भरा ड्राङ्गल कम मे जाकए दवरज्जा रैद
कवि संपूर्ण सँसार स

ଓମନ ଭ' ଗୌରାଧି ।

“কী গপ কক. . . . খাফিসক . . . স্ত্রীক ..

প্রাপটিক . . . শেখবক” ।

“নেনে. . .কিছু খান .. . হুসিয়াহী. . . থিয়্যা
কহ..। ”

“খান কোন . . . রীতবাহে আর খিঙ্গা ঠেক . যথার্থ .
 . ভোগন . . .” ।

“শীতক থিচ্চা মে কী ঙ্গে . . কোন স্বখাদ . . খালী
ভট্টকার . . নিবাসা . . ভয় . . খাতক . . । .”

“ରେମ୍‌ସ. . ତখন ଗାୟକ ଥିଲ୍ଲା ସ୍ବନର୍. . . । ”

“কোন গামক । ”

‘কোনো গামক . . . নাম মে কী বাখর ঠে . . .
চবিত ত সরহক একবংগ . . . মাঠি পানি কে গমক
ত’ এক . . . আ মণিতস্ক মে রঁসর স্বস্বপ্ত আকাশ্কা.
. . . খতীত কে ফেব স জীরক চাহ . . . হ গামে কে
কছ. . . হারাকি গামক জীনগী রঁড কম দিন
রীতেবহু. . . রঁড খভিরাষ ছর সমস্য়াগ্রস্ত গাম
সরহক উথোন তের . . . খরম্স কিছ রিশেষ কাজ
কবর. . . ছদা সামর্থরান ভৈযৌ ক’ তেহেন নে
জীনগী কে মকডজার মে ওমরা গেরহু. . . জে মোন
খহুবিয়া কাঠি ক’ বহি জাখত খছি. . . দেখারঠি মে
পানি জকা. . . পায় রঁহা দেব জায ঠে. . . খহি স



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानुषिंह खन्कुल ISSN 2229-

अपन मातृभूमि . . के . . कतेक हाथ . . के काज .
. . कतेक के रोटी आदरि स भेँष्ट सकैत अछि . .
. . आस नहि छुँष्ट अछि . . . एथनो . . आरै भगरानक
कविपा जहिया तखन सक कक थिम्सा . .
. . । ’

थिडकीस दुब . . . अन्धार सङ्ग मे . . चमकैत नाङ्गछ .
. . . कोस्ट गार्ड . . रा रासायिक जहाज के निहारैत .
. . कनि कार धरि मौन बहना . . हुनको आँखि किछ
भवभावयन सन छन . . . जेना अतीत क ताप स
दृष्टि भ सीमा बिहिन होमय नेन रैष्ट ताकैत छन .
. नहु नहु . . कवि क’ झूठ खोलना . . “बाजा जनकक
जुग के सुनरै की . . . रथिमा ठरबाजन जुगक . . की
सोनिया गाँधी के जुगक . . । ”

“राह . . . इतिहासक की कार रिभाजन कयन अपन .
. . . अदभुत . . . । अदिबा आ सोनिया के मध्य
समयक थिम्सा कछ । ’ “ थिम्सा मे कार के रैड
महुर डेक . . अहि स अहं ओहि कारक बाजनैतिक
आर्थिक . सामाजिक आ मनोबैज्ञानिक स्थिति के
अवलोकन कवि सकैत छी । सुन . . .
गामक स्त्री . . समाजक थिम्सा . . पोस्ट अदिबा गाँधी
पीरियड

“एकछा दुती सोनदाय एकछा चानदाय . . दुनू एकदोसबा
नेन साम्प्रत जमबाज . . . जौ एकछा के अरसवि



ভেঙেঠেঁক ত' দোসবা কে সঁদেহ জমলোক পহুঁচা
 দৈতেথি. . . ফুঁদা .. মন্থক মজরুঁবী. . . তাহি নেহ
 কতেকো দশক সঁ এক দোসবা কে সঁহি বহন ছুতথি. .
 .। ওনা দুব্ব খপন খপন রঁহ দেথেরা সঁ রাঁজ নহি
 আঁরৈখ একঠা খপন ঘবক রঁহ .. দোসবি সমাজক .
 .।

39

“সোনদায় এহেন চ’ঠ কিএক . . . কি চান দায় হুনক
সৌতিন ডুরীহ ।”

সোন দাঘ দস ঠাম স ফুহ বিচুকা ক' আপন খনত
ঘণা

ବଗଳୀ “ଞ୍ଜା ହମବା କଞ୍ଜା କେ ନହି ଛୋଡ଼ଗି. . ଖାଉଁ ତ’



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

झ की की नाच ले नचोती । दैर रौ दैर । आरै हम
कक त की कक .. ककत पेघ झ हसदी छथि गै
मा । ” झदा के गेलय धडकडायन पोखवि ..
तानारै .. रेलक पठवी प तार ।
दिन चटैत .. रीतेत झ खरवि छैन की
सौसे गाम मे रूए छैनए नगले .. आ वाति
देखि सरैक सग खरवि सेहो निहिकिब भ सुति
बहन .. छन ।
दिन .. सपुह .. महीना रीत गेलै .. छैन समाजक
दिनचर्या ओहिना चलेत बहन .. । आ हेल एक
दिन .. चानदाय .. ओहि गाम की .. ओहि छैनक
अपन ओही दान क चौकी प रैसन देखाय पडनी
“रहिन रैजेने छन दुखित छै .. के जेते
देखय .. शोषितक हिनकोब हमरा रोकि नहि सकन
छन .. छोट रहिन .. रैछी दाखिन .. कोवा काथ क
थेलौने छियै .. । ”
मोनदाय आंगन स चाबिछा मोहारी .. आ कनि भाछा
अदौडी के तबकारी .. एकछा .. कनकछा अलमनिया
के सपना मे बाथि जखन की हुनक भनसा मे
सुतीक थावी रैछी भवन छन भातिजक
हाथे पछा देने बहथ .. ।
“ झ कोन थिम्सा भाय .. एहनो कोनो थिम्सा होय
छै .. झ त रिसद्व कप स चिया चबिब के रैखान



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकी बिदेह बिदेह ISSN 2229-

कवि बहल छी . . . जेकरा शिखर सेहो 'नेति नेति'
कवि निषेध कयने छल । ”

“ब्रियाचबिद कल त मानर मनोरिञ्जनक
बहलमय रंगिनी थीक अरुन आ रत्नमानक दीया
आ तुलानक थिम्मा छै शिखर कथा जुग
जुग स चलैत एलैए की दबिद की मातरब
.. . . . की पठन की मुख की शिखर की गाय
.. . . . सर ठाम एकरे ताँडर दूदा आधुनिक समाज
आरि एकव रिश्ता कवय नागर कि आखिब एना
किएक । त' अपने कनि अपन राणी के रिवाज
दियौ आ हमर श्रिणामृत राणी स अपन कर्ण कर्ण
के गुंजायमान कर ।

सोनदाय चानदायक संघर्ष क' कथा अपन चबमोकेर
प' चठन चठन जागत बहलै आ हिनका हुनका ..
रँडका छोटका .. सरके भारनामेक धवातन प' सर
प्रकाशक बस प्राप्त होरैत बहल .. . ।

दूदा थिम्मा त' थिम्मा नहि भ' क' जीर्णक अंग रनि
गेन छल ताहि नेन लोकसेद के तेहेन कोनो
उत्कृष्टता नहि रँचन छलै . . . ।

उत्कृष्टता भेनय दूदा तखन जखन हँसा
एसगरे जायत बहलै करपेत कनेत . .
.. . . . रोकैत पेठरुनिया देने उपस्थित
समाज स क'न जोबि क' माफी माँगेत



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चक्रान्तर ISSN 2229-547X

VIDEHA

एकटा चलो रे .. एसगरे जाए बहल दुली .. मान
अपमान स भिन्न .. भूख पियस स झुंझ .. अपन
आन .. नीक रोजाय स पृथक .. .
.. कोठबी होलन गेल .. त' डुपव चाब मे .. नाले
नार .. सुखेन जारैन थोसर .. निकारन गेल त'
कबीर मन भवि .. .
मठकडी सर मे .. सबरा स मुठ रँद कवि बाखन ..
चीनी .. चाहक पत्नी .. अचाब .. दानि .. आमिन ..
.. सत्तु .. अदोबी .. चाडुव .. घौडु .. नहि
जाने कत्तु एक चीज पतियानी स नगा क' बाखन ..
.. चौकी के नीचा .. छैठनहिया रौकस मे .. एगारक
जोड नुआ .. चाबि ठा शीर .. पाँच ठा .. साया ..
चाबि ठा आँगा .. दु ठा छैठव चानी के
हंसुरी पनवस ठाका .. रौस पैसाही .. एक ठा
मठमेन सन रँदुआ मे मुठ रँदु क' बाखन
कतेक बास अछली .. चौखली पचपैसाही .. एक ठा
नता मे नष्टपठायन ओकवा डुपव मे नीमक
पात .. रौकस के डुपव गोष्ठ्या खडही .. रौवा ..
.. केथवी
अ एतु ठा .. बाज पाँठ .. लोकक आँखि ठारुस
रँग जका रहबायन छैनक लोक संगे भवि
गामक लोक अ बानी महाबानी के साज समान देखए
लेन आरैत कार अपना झूठ मे किसी किसी के



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

गप सप्प भवने. आरै. . . आ . . पाग्व करैत . .
.गप के डनष्टैत पनष्टैत अपन रिचाव के पवम सब
मानैत. . जागत बहैत छत्र ।
“घोब आश्चर्य नै मदन भाय. . . जेकरा की नै ..
.।’ “जौ पतिनहि स बुझन बहैते. . . । नरका
घबक सीमरी राता सीरी प रैसन आन आन लोकक
संग .सोन दाय के पछु मे समय जेना ठाठ भ’
गेन छत्रे .. सहम्रा जिरहा स राजय के मौका
दगत “से सएह अरुसर कह जाग्यौ. . रडका राबू
.. तखन हमब कोन दसा राकी बखने छत्रीह .. गवनी
रिबनी मन रैगै रैनौने. . हाठन पवान पतिबने . .
.हिनका हुनका दवरज्जा प रैसन पहवि धवि. . .
.नोब रैहारैत. . थिपास करैत. . अपन दुखक
बकवा पठैत. . . . कोन गिन्जन नहि कयनथि
हमब .. हुनका गेता के रौद त’ जेना आव साँड
रैनि गेन छत्रे .. रज्जब खसौ ग सबकाव के
खेवात की रैठनाय सुक कयन .. नीक नुकुत घबक
नककपौन जनानी सर राज धाक तजि क’ पाँत मी
जाकए ठाठ । ”
“ जाए दियौ. . ग कार. . अहि सर तबहक हिसार
कितारैक नेन नहि अछि. . . आरै सोछु जे की
कयन जाय. . . । रैब त सबसवि ससबन जा बहन
छैक .।’ ममरा कका आगाँ रैठि क’ सोनदाय के



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

रतीत स रतमान मे तीव तारि क थनरा त' ओ
हडरडा गेलीह . . . गै मा . . . केना की हेते . .
. . . 'हूनक आंथि भठभठ चूरै नगलैन्ह . . . तारैत
भीमनाथ आरि क राजन "तोही जे कनरीही तथन
कोन काज हैते . . . भायजी सरै राहरे . . . ' ओ
पडफडा क' आंचरिक खुँषी स आंथि मीडैत रँजली . .
"ह ममिना रौखा . . . आंथि त हूनका भीमे देतैन्ह . .
. . . जीरितो एयह सेरा सुश्रूषा कयने छलैन्ह . . . तथन
आरै . . . की ' . .

उम्व हूनके स् 'जोगन नकडी घी आदि न '
क'हूनक आंथिबी काज जेन लोक रेद प्रस्थान करैत
गेल . . .

कहूना कवि क' बाति कष्टन . . . तीन दिन मे थहि स
उग्रस भ । एकाध नोब कानि सोनदाय अपन दान
प' रैसली . . . "गेली रैचारो . . . थही जेन दुनिया
मे थतेक छन कपठ . . . थतेक हाय हाय . .
आध्यामे सग रैवाग सेहो हूनका त्रसित कवि
जेनकैन्ह . . . "कह छै लोक . . . कबनी देखीह मबनी
रैब . . . चठपठ मे उडि गेलीह . . . हमब की गति
होयत "

"केहेन थिआ अपने पसावि बहन छी श्रीमान . . .



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानुषिंह बरकतुम् ISSN 2229-

जेकर नै कोनो ओव नै छेब. की रौचन जा
बहन छै. अहि मे कोन मनोरिज्ञानक मरकि . . .

. . . । '

“मनो रिज्ञानक मरक एके रैब थोडरै
मरकि ठूठते आकास मे पूबनमासी के चान सन .
. सच मच भ' क रैसु सोमबस क' आग्रादन करैत
बहु कनि मनन कक तखन नै मबम धवि
पहुचरै ।

तखन किछु दिन छैलक चर्च क' रिषय सोनदाय.
सोनदाय सोनदाय । आरै हुनक सरै छीत
एतय आ' महान रैबी. अधर्मी साम्ब रौना. .
“माव रौठनि माँठ रौठेन ओहि नगबक लोक के.
. देखियौ त' करेज समाद प' समाद पठाओन
गेलै. तखनो नै कियो धुवि क' अयलै. हिम्सा
रौँरा कार सन्नसोटे पैनराव छै. जाडुत सरै
पहिने थोजो प्रछावि करैत छलै. ”. ।

“जाय देखुन्ह रैहिन. ओ रैचारी के जे गति नीखन
छन से गति भेलय । '

झुदा सोनदाय के हुनक गति रा दुँगति स कोनो
तेहेन बिकीब नै छन ओ त' अपने चिन्ता मे
डुँरन. ओहि दिन स. अहूबिया कष्टैत छनीह . .
. दुँ रैजे दिन स चावि रैजे धवि सरै लोकबेद ओही



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

काज मे ओम्बायन था ओ मोंका देखि ओही कोठरी
मे पैसि . . . ठकना ठकनी गेकथा सीबक .
.मैठकडी . . . पैठैए ठा नहि . . .छोठसन ठैगा स
चाव के कोन कोनस समायि क' अगगा क' देखरथि.
. . .झुदा कठौ नै भैठैनेपहसौर रानी के रँजना
क' घब ओम्बा नीपरैत कार . . .सेहो अपने झुन्द
बहनी . . . कठौ करो हाथ नै नागि जाए ..
. . .झुदा कोन कर . . . ।
भीमनाथक माय प्रह्वरथिन्ह . . 'पाय के की कबथिन्ह
रँहिन . . . । 'हम अपने हाथ उठाक' किछ नै कवरै
.. .अहं सर के जेकरा देरौ तेरौ के अछि . नुथा
हँगा . . सर रँगि दियो . . .हम की कवरै बाथि .'
सोनदायक प्ररामी पुत सर अघरहि . . . ओहि
बहन्मय
रातारवण के चीवरौ के अम मे रथित भ' रँजनी
रौंखा रौ . . .ओ त. घब स पडा क' बाधेथामक
दवरज्जा पजा रँसखन भवि गामक लोकके
कहने बिबथि . . .जे करनामा के रौंह हमबा थाय
नै नहि दैत अछि . . . । बाधेथामक घबरानी सोहाडी
पका क' चाबि सामं थुँनकेन्ह त' रौडी न्याडी स
तीमन तबकारी . . .नताम केबा . . न् । रौ . .
.अबबनेरौ . . .टोबा टोबा क' ओकबा द अरँथिन्ह . .
. . । की पारनि की तिहार सर मे भंगठ . . .छठियो



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

मे अहिना कयलन्हि. . . पबना के पबत सीताराम
कहलन्हि जे “काकी .. अहाँ हुनका थाय लेल किएक
नहि दै डियेन्ह : राजय पडल जे रौआ आंगनि मे
पाँच पबकावक अल सुखाति बहत छै .. ओ उठा क
न लेख .. हम हाथ पकडरै तखन नै. . . । झुदा
रौआ .. हमरा रौड रैनगन कएने बहथ छथि ..
. भात रौआ पछेरै त ककवा दान प . . . कोनो
ठेकान हिनकर .. । ”

“रौआ .. तौ हुनका दू सौ अठाइ सौ ठाका द
दहन. . . जे सर हुनका खुएने छलन्हि. . . । ”
आ कही ओ अपन महान उदावता के पबिचय देलथि
त रौआ एक पहर सोच मे पडि गेलन्हि. . . जीरैत
हुनका दोबा क पाय दी . . . तैयो माय हुनका आने
माने स गबियारै. . . अपन पैरवारक दू रबखक नैना
के सेहो हुनका लग ठाठ नै होमय दैथ .. जौ
कोनो प्रतीह माथ मे कनि तेल रुड द दैन्ह .. रा
पएबजतरा के दुआहस करैथ.. पकडा गेलीह ..
हुनका रा हुनक पिया सरहक नजबि स तखन फेब
ओकर गजन गजन. . . तखन दोबा नुका क कियो
किछ समान किछ पाय देरौ स नहि चूके .. . आथ
एहेन उच रिचाव ।

“थिम्सा के अंत एयह अछि जे पचासो रबखक अपन



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

बोथारै .. कुठनीति .. रैदना .. .ग्रह्या.. . द्रुष प
पवदा देनाय सोनदाय के समाजक सर्ग अपनो
नजबि मे आरथक भ' गेल बह .. .किएक त'
चानोदाय आरै रैचारी रैनि क' सरहक सहानुभूति
हसोथि नेने बहथ .. . आरै हुनक सरहक झूठ रैन
कबरौक जकबति अहि नेन पडि बहन दुनैह जे
आरै ओहो एसगकथा भ' गेल दुनयि .. . प्रिया प्रभा
रौनिग भ' क' अपन अपन नोन मे तिनका न' एक
गोष्ट नर घोसना के निर्माण हेतु उडि चुकर दुन ..
.. .असहनीय एकाति .. . भोजीज भोजनाथ .. पीसे
कार स आरि क' नागनाथ जका शिव न' नेने दुनह
.. .झुदा ओकव अपन स्वारथ .. . । तखन उठरौ रैसरी नेन
लोकक आरथकता त' पडिते डै .. .चाहि .. कतरौ
भवन पेष्ट राता होथु .. . ।
चवथा मे पुनी जका गप कष्टैत किछ लोकक जीरन
कष्टैत बहैत डैक .. .आरै अपन पछ मे लोक समाज
के कबरौक दुनैह .. .त' दान प' रैसरी मे चाह
पानि सेहो आंगन स पठरैए नागर दुनैह .. . ।
“कथा के एम मे किछ उठपठंग तथा सोना आयन
अडि .. . जेना सोनदाय रैकर भ' क' की तकेत
बहन दुनैह .. . । ”
“अहिरैरौ .. .अहाँ एखन धरि ओहि सूत्र के गहिने
रैसर छीरैस .. .त' भेनय की जे



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानसुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

चानदाय के कान मे सौनक मोठगव मारुडी डलैन्ह .
.दप दप पीयबओ गत भेला स पहिनही स
हूनक कान स ग्वम भ' गेल डलै . . . ठोस . . एकदम
दू भवि के . . गवा मे सौनक सीकडी .
. । सौनदायके नजबि ओहि प' गीद्व जका गडन डन.
. भाँति भाँति के आसका मोन मे घेबने .
.कतहु अपन रहिन के त' नहि द' देनथिरा
बाधेआमक घबरानी चाबि साँम बाहि क' खुँककहि . .
.रएह त' ठकि हूसिया क' नहि त' नेनकेन्ह . . . । ”
आ' ओ मनोरित्तानरैना कोन गप . . एखन धवि त'
हमरा पकडि मे त' नहि आएन थडि । ”
“नहिं आयर त' स्रुखरैर दूरव सेहो अपन
भरिषक' नेन कतेक चिन्तित बहैत थडि
. । जखन चान दाग के कोठरी स जाबनि अन्नपानि सरै
निकसरत' किछ लोकक कहरो डन जे 'भबिसक
संभारित राँठिक आसका स ओ अपन सरैठा चाक
चौरैन्द रैन्दारैन्द कए नेने डलीह . . जे कम स कम
कोठरी मे पडन पडन दू ठा सौहारी त' पेठ मे
जायत . . . । किछ आओव लोकक कहरो डन जे ओ
अपन आथिबी कर्मक तैयारी अपने सोना कवि चूकर
डलीहजानैत डलीह जे आगा नाथ नै
पाछा पगहा के आगि देत . . . के क्रिया कर्म करत.



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

. कोना क' पैठ होयत .. से सरैठा रीत कवि क'
बखने छरीह .. । मर्मक गप अ भेलय जे भवि
जनीगी अरुठन रिठन सन बहियो क' हुनका अपन
अंगिका जनमक चित्रा छन .. .सोनदायक
पैरराबक लोक नुका टोवा क' किछ पाय ठाका
सदिखन दङ्गते बहन् .. . आ ओ अन्तत .. गहन कप
स एकवा ओकरा मापाम स चीज रौस्त मे रँदरति
बहनी .. .रुदा ककरो कानो कान खरिबि नै भ'
सकलै .. । ”

“रैस .. .आरै त कबीछाडु .. जे सोनदाय आ'
चानदाय मे कोन तबहक सरैष छन .. । किअक ओ
एक दोसबाक' शोषितक पियामर छरीह .. । ”
“अखन धवि अहाँ बुँमि नहि पयलहु .. .त' हमरे झूठ
स स्रन .. .सोनदाय भाङ्गज छरथि चानदायक .. .
। ”

थिस्सा स्रनिहार रारुन भ कानय नगना. “भाय ..
..अ त अहाँ हमरे पैरराबक कथा कहलहु .. .
चानदाय हमर पीसी छरीह .. । ”
थिस्सा कहनिहार के नशा सेहो चटि छकर छन
। ओहो रिद्धरन भ कानय नगना. .. . “चानदाय हमरे
काकी छरीह .. . जमीन जायदाद क' कागद प गुँठा
त' नगरा नैरथि .. . रौप पिठि .. .रुदा कहियो



घुबि क' माँकय नहि गेलथि जे पति रिहिन अखँत
नावि भाँजक खोबनाठी के ताप सहि कोना जीरैत
अछि ... । ” आ दुनु धनाठय मित्र नरी झँझु नकर
के ओही एन आब आग रिटिङ्गक रौबहरी मजिद के
अपन पैँठ हाँस मे हँक हँक क' एक पहिब
धरि कानैत बहि गेल बहथ ।

ई कनापब अपन मँतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।



ओमप्रकाश या

कथा

निर्मोहिया

हुनकर नाम हुन सदानन्द मँडल । माता-पिता हुनका
सदन कहैत हुनथिन्ह । हुनका नैनपने सँ नाँक-



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

नौठकी सँ मे पाछे तैरौक शौक छलैन्हि । कनी क२
करिता शैव सँ मे सेहो हुनका योन लागैत
बैह्लि । ओ अपन उपनाम निर्मोही बाथि लेने
छलैथ । नाम पुछुरा पब अपन नाम सदन निर्मोही
रैतारैत छलैथ । शिले:-शिले: हुनकब नाम निर्मोही
जी, निर्मोही आ निर्मोहिया प्रसिद्ध भ२ गेल छलैन्हि ।
घब-पबिराबक लोकक अगरे दौसु महिम सँ हुनका
निर्मोही नाम सँ जान२ लागल छल । हुनकब एकठा
रौल सखा छलैथ जिनकब नाम छल घुबन सदा । घुबन
सेहो निर्मोही जकाँ नष्टक करितक शौकीन छलैथ आ
एहि सँ मे भाग लेत छलैथ । ओ अपन नाम दीराना
बाखने छलैथ । निर्मोही-दीरानाक जोडी पूवा
परोपष्टा मे प्रसिद्ध छल । दुर्गा पूजा मे गाम मे
नाष्टक रीना निर्मोही-दीराना केब समुल ले छल ।
कोनो आयोजन हुए रा करौ एहिठाम रबियाती
आरै आ की कतौ अष्टुजाम होय, सँठा निर्मोही आ
दीरानाक उपस्थिति पबम आरथक बैह । निर्मोही-
दीराना गामक लेल नौशान, खेयाम, बहल, झकेश,
किशोब आदि सँ छलैथ । जखने गाम मे कोनो
सांस्कृतिक कार्यक्रम होय की लोक जन्दी सँ जा क२
अगिला सँठा तैरौक कोशिनि करैत छल जाहि सँ
निर्मोही-दीरानाक नीक जकाँ देख सकल जाय । कठ
केब ए तापेर्य की निर्मोही आ दीराना सँठक
मनोबजनक पुर्ति करैत छलैथ । नाष्टकक आयोजन
मे उद्घाटक जखने कठ की आर निर्मोही दीराना मन्त्र



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानुषिंह बरकत, ISSN 2229-

पब आरि बहल छथि की तारीक गडगडी सँ पुवा
आकाशि रँडी कान धरि गनगनाएत बँह छल । मन्च
पब आरैत देवी दुनु गोठे जनता केँ नमस्कार कऽ
कए शुक करैत छलाह- “हम छी निर्मेती-दीराना, सरँ
दूध सँ अन्नजाना, तऽ कए आरि गेल छी, मनोबजनक
खजाना । ” आ की लोक तारी रँजरँय लागै । तकब
रौद फिन्नी गाना, पैरोडी, करिता, शांखरी आदि सँ ओ
दुनु गोठे पुवा मनोबजन करैत छलथिन्ह । तहिना
गाम मे कोनो रँबियाती आरै तऽ ओ दुनु गोठे
ओहि दवरँज्जा पब पहुँचि जाग छलाह । हुनकब
सरँहक ओ सेरा निश्चिन्त बँहल छल । कियो भोजन
कवा दैत छल, तऽ ठीक, नै तऽ कोनो रात नै ।
हिनकब सरँहक कोनो माँग नै छलैन्हि । नैनपने सँ
हमरा मोन मे हिनका सरँहक प्रति रँडु आदब छल ।
हिनकब सरँहक निस्वार्थ सेरा देखि हमरा सदियन यैह
लागल जे ओ सरँ सही मे साधु छथि । हिनका सरँहक
पबिराबक खर्चा कहना कऽ चलैत छल । कখনो
माता-पिताक हुनाग आ कখনो कनियाँक रात
कथा । झुदा हिनका सरँ पब कोनो असब नै छल ।
साँझ होगत देवी दुनु झुथियार्जिक पोथबिक भिँडा
पब आरि जागत छलाह, जतय पहिने सँ छोट्टा आ
झुथान सरँ हिनकब सरँहक प्रतीक्षा मे रँसल बँहल
छलाह । तकब रौद शुक भऽ जागत छल झुथियवा
ओ शायब-द्वय केब ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

समयक गाडी तेजी सँ भागैत बहर । हम पठि क२
किबानीक नौकरी कब२ नागलौ । गाम एनाङ्ग कम भ२
गेल । शुक मे त२ नियम रैना क२ होली, दुर्गा
पूजा, छुटि मे आरैत बहलौ । रौद मे गहो एनाङ्ग
जेनाङ्ग रहु कम भ२ गेल । गाम मे धीरे धीरे सर
किहु रैदलि गेल । नाटकक चरन सेहो खतम भेल
जागत छल । ओकर रैदना मे थेष्टेव आ रौङ्गजीक
चरन रैठल जागत छल । रैबियातीक स्वागत सकोव
मे अपनैतीक स्थान पर यान्त्रीकवण जकाँ रैरहाव हु
नागर छल । निर्मोही आ दीरानाक पुढनिहावक सखा
सेहो घुठल जागत छल । घुबन सदा अपन परिवारक
दाकण स्थिति देखि नौकरीक जोगाड मे लागि गेलाह
आ कहना क२ एकठाँ प्राङ्गरेष्ट प्रेस मे दबिङ्गा मे
नौकरी कब२ नागलाह । ओ अपन रौल सखा सदानन्द
मडल उर्फ सदन निर्मोही केँ सेहो न२ जेरौक प्रयास
केलखिन्ह, झुदा निर्मोही नहि गेलखि । निर्मोहीक स्थिति
आरो खराप भेल गेल आ तमाकुनक खर्चा तक
निकरनाङ्ग भावी हुथ नागर । झुदा निर्मोही अपन
करिता शिङ्गरीक शौक नै छोडलैन्हि । एक रैव दुर्गा
पूजा मे गाम एलहुँ । साँय मे मेला घुमै लेल
गेलौ । पता चलल जे एहि रैव एकठाँ पैघ थेष्टेव
आयल छल । हम कक्का सँ निर्मोहीजी दिया
पुढनिथेन्हि । कक्का कहलखि जे ओ रैताह भ२ गेल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीसिंह बरकत, ISSN 2229-

हुथि । कतौ कोनठो मे ठाठ भ२ क२ खपन
रँडरँडागत हेतह । हम चाक कात तक२
नागलौ । देखलौ जे मेलाक एकठा खन्हाव कोन मे
ओ रीव बसक करिता पूवा जोशि मे पाठ करैत
हुनाह आ रँचा सरँ हुनकर चाक कात घेवा रँना क२
तानी रँजरेत हुन । हम नग गेलौ । निर्मोहीजीक
दाढी पूवा रँठन हुन । आँथि मे काँची, उज्जुन केशि,
हाँठन कबता.... हमब मोन ककशा सँ भवि गेल ।
हम गोब नागनिषेहि आ पुढनिषेहि- “कक्का
चिन्हलौ ? ” ओ हमबा धेखान सँ देखि रँजनाह- “अहाँ
ओम थीकौ ने । ” हम- “अहाँ अपन की हान रँना
लेने छी । कक्का आ रँचा सरँकर की हान ? ”
निर्मोही- “यौ सरँ कहुना क२ जीरि बहन छै ।
थेनाङक जोगाड कहुना भ२ जागत अछि । ” हम-
“करिता शिङ्गरीक की हान ? ” निर्मोही- “कियो
पुढनिहाव त२ बहन ने । रँस अपने बचना करैत छी
आ निह सँम मे पोखबिक भिंडा पब जा क२
असगरे पाठ करैत छी । लोक रँताह कहैत ए ।
सरँ बुडिरँक हुथि । साहिब आ बचनक महल की
रँमताह । ” हम- “कोनो नौकरी ने केनिये
अहाँ ? ” निर्मोही- “हमब जग नौकरी कबरा लेने
लेने अछि । हम अपन जिनगी गीत-संगीत आ
शिङ्गरीक नाम लिख देने छी । ” हम- “ओ त२ ठीक
अछि । झुदा कक्का आ रँचा सबक त२ सोचियौ । ”
निर्मोही- “अरे सबक देखनिहाव भगरान हुथि ।



57



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

सँ रियाह किया नै क२ जेनाथि ? दु ठा रैठा जुथान
भ२ क२ कतौ पनदावी करैत छैहि । रैठा कै
रियाहक कोनो चिन्ता नहि । एहन कोन साहिब
प्रेम ? हमर सम्भव रीयाह भ२ क२ दराङ्क अन्तार
मे तडपि तडपि क२ मरि गेलाह । हुनकर मबलाक
बाद ओ केशि आ दाठियो नै कछैनाथि । ओ कोन
रैतहपनी भेलै ? " हम ओतय सँ चलि देलहुँ ।
सोच२ नागलौ जे सर जेन ओ निर्मोहि आ हुनका
जेन सर निर्मोहि ।

समयक पहिया घुमेत बहर । १० रैवथ रीत गेल ।
गवमी छुट्टी मे रैठा सर कै न२ क२ गाम आयल
छलहुँ । एक दिन दलान पर रैसर छलहुँ की बमन
भाङ्ग कहैत अथलाह- "निर्मोहि गेल भ२ गेलाह ।
किछ दिन सँ रिछोन धेने छलाह । कोनो गम्भीर
रोग सँ पीडित भ२ गेल छलाह । " हम बमन भाङ्गक
संग निर्मोहि जीक दलान पर गेलौ । ओतका दृष्ट
रैछ कालिक छल । काकी उठा उठा देह पछैके
छलीह आ कानैत छलीह ओ राजि राजि जे जिनगी
भवि निर्मोहिया बलौ आ आगयो निर्मोहिया रनि
उडि गेलौ । हम आंगन मे पडल गलाशे कै
देखलहुँ । रैसर चचरी पर सदानन्द मंडल उर्फ सदन
निर्मोहि उर्फ निर्मोहिया शीति सँ पडल छलाथि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

एकदम शांत, बिना कोनो मोह के दीर्घ रिश्याम मे
छत्राह निर्मेही जी। पूवा गाम ओतय जूठन छत्र आ
निर्मेहीक संगीत करिताक चर्चा करैत छत्र। हम
दवानक कोठरी मे गेनहुँ जतय निर्मेही बह
छत्राह। एकठा छुट्टाहा काठक अतमीवा मे हुनक हाथ
सँ निखर ठेरी पालुनिपि पडत छत्र। किछ दीमक सँ
थाएत छत्र आ किछ कागतक सियाही पसवि गेन
छत्रे। हुनकब सिबमा तब मे एकठा कागत छत्र जे
पब किछ निखर छत्र। अ हुनकब अन्तिम बचना छत्र,
जे पूवा नै छत्र। ई मे निखर छत्र:-

अ जग छै निर्मेही, रंजन तोडि क२ उडि जाड।

आर नै घुमू, कियो कतरौ कह जे घुबि जाड।

ई कनापब अपन मंतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाड।



बरि भूषण पाठक



ममेविया रिखाह

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक तेसब नाटक । ई मैं
पहिले 'मिथिलाक रैष्टी' आ 'कम्प्रामागज' । तीन्
नाटक अपन उपन्यासिक रिस्ताव आ कार्यात्मक
दृष्टिसँ परिपूर्ण । लेखक समकालीन रिश्ते आ गद्यक
पावस्परिकतासँ नीक जकाँ परिचित छथि, तँहि हिनकब
संपूर्ण बचना-संभावमे समकालीनताक रैडर पसबन
खुद, जेह रैडरिक्, ओतरे कपगत । समकालीनताक
प्रति हिनकब नुकार ममेविया रिखाहक एकठा रिशेष
स्वरूप दैत छैक । रौबह सारक लेनाक रिखाहक
ओवियाउन करैत माए रौपक चित्र जेह हँसरे छैक,
माएक रैमावी ओतरे सुन । लेखकक बचना संभावमे
काल-देरताक लेन रिशेष जगह, तँहि ए नाटक
प्रहसनक प्रारंभिक कपगुण देखाबितो किछु आव
खुद । पहिले दृश्यमे सुशीला कहैत छथिन 'बाजा
दैरक कोन ठेकान...', अगब दुबलाथा पड़ते तँ
सुलाथा किछु ने पड़ छै... । ' आ बाजा, दैरक
कर्तव्यक प्रति ए उदासीनताक अनुभव समस्त
आस्तिकता आ भाग्यवादितारै खडित करैत खुद ।

সীপা-সীপা অঁক-রিলীন ‘সমেনিয়া রিখান’ নও গোষ্ঠ
দৃশ্যমে রৈষ্টন খন্ডি: অনেক দৃশ্যস্ব একাকী। নে
রৈহুত ছোষ্ট থা নে নমহব। তীন চাবি ঘষ্টাক রিনা
সমেনোকে ‘সমেনিয়া রিখান’। একেটা পবদা যা রীক্স
সেষ্টপব মচিত হোমএ যোগ্য। মাত্র ঘব রা
দবরৈজ্জাক সাজ-সজ্জা। তেবহুটা প্বকষ থা
চাবিটা স্ত্রী পাত্রক নাষ্টক। ছোষ্ট-ছোষ্ট বসগব সঁরাদ,
সঁঘর্ষ থা উতাব-চড়ারক সঁভারনাসঁ হকত। নে



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकी बिदेह बिदेह **ISSN 2229-**

केतौ नमहव स्रगत ने नमहव सराद । असंभर
दृश्य, राटि, हाथी-घोड़ १, काव जीपक कोनो
योजना नग । सरादक द्वारा बिभिन्न रबियाती या
यात्राक कथासँ जिक्रसा आ आद्यात आकर्षण । कथामे
चेता केव बमणीयता आ मर्यादा, तँए जोगीबाक
दिशाहीनता आ उदाम रोग नग भेटैत । गतीव
साहित्य सरदा अपन समैक अन्न, खून पसेनाक गर्भसँ
हकत होगत अछि । आ 'नमेलिया रिखाह' सेहो
पारनि-तिहाव, भनसा घबक होड़न-छोक, सोयबी,
शमशान आ पकमानक रहरणी गर्भसँ हकत अछि,
एकदम ओहिना जेना पार्लो नेकदा बिभिन्न कोष्टक
गर्भकेँ करितामे थोजैत छथिन ।

'नमेलिया रिखाह'क सामाजिक आ सांस्कृतिक आपावपव
कनेक रिचार कक । ए ओग ठामक नाटक अछि,
जतए कर्मपव जन्म, संयोग आ कावदेरतारै अंकुश
छेक, जगठामक लोक मानैत छथिन जे कथनो अहंस
अराच कथा नै निकाली । दूबलक्थो रिषाग छै ।
सामाजिक कर्पे ओ रक्षा जेकव हँसी-खुशी माष्टिक
तबमे तोपा गेल अछि । लैंगिक रिचार हुनकव ए
जे प्रकथ आ स्वीगणक काज फुट-फुट अछि । आ



‘ममेनिया रिआहक ममेना जिनगीक स्राभारिक बग
पविरतनसँ उद्धृत छि, तँए जीरनक सामान्य
गतिरिपिक चित्रण चलि बहन छि कथारै रीना नीबस
रैनेने । नाटकक कथा विकास रीना कोनो रिताड़ा क
आगु रैठत छि, झुदा लेखकीय कौशिल सामान्य
कथोपकथनकै रीशिष्ट रैनरैत छि । पहिल दृश्यमे
पति-पत्नीक रातचितमे हास्यक संग समथ देरताक
हृवता मानन बुनागत छि । दोसब दृश्यमे
ममेनिया अपन स्राभारिक कैशोर्यसँ समैकै द्वावा
तोपन खुशीकै खुनराक प्रयास करैत छि । पहिल
दृश्यमे रयजि पविस्थितिकै समझ मुक रैनन छि, आ
दोसब दृश्यमे रयजित्त्र आ समैक सघर्ष कथारै
आगु रैठरैत कथा आ जिनगीकै दिशा निधारित करैत
छि । तेसब दृश्य देशेभजि आ रिधरा रिराहक
प्रश्नकै अर्थ रिसुताब दैत छि, आ अ नाटकक गतिसँ
रैशी जिनगीकै गतिशील कवरक लेन अनुप्राणित छि
।

चाबिम दृश्यमे बाधेश्याम कहत छथिन जे कमसँ कम
तीनक मिनानी अरैस हेंराक चाही । आ, लेखक
अत्यंत चुरकीयतासँ नाटकीय कथामे ओग जिज्ञासाकै
समारिष्ट क२ दैत छथिन कि पता नग मिनान भ२
पेटे आ कि नग । अ जिज्ञासा रीबियाती-सबियातीक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

माबिपीठ आ समाजक कुरङ्ग चालिसँ निरवत रैन
बैत छैक । आ पाँचम दृष्टिमे मिथिलाक ओ सनातन
'खोष्टिकबमा' प्रवाण । दहेज, रैथी, रिखात आ घष्टकक
चक्रव्यूह । आ लेखकक कर्तृञ्ज जे ने केरत मैथिल
समाज रँक्कि समकालीन रूझिजीरी आ आलोचनाक लेन
सेहो अकार्षी अछि: कतए नै दलाती अछि । एक्के
शिरदकै जगह-जगह रँदनि-रँदनि सभ अपन-अपन
हाथ स्वतारे ।

आ घष्टकभायकै देखिअन । समैकै भागरा आ
समैमे आगि नगराक सपष्ट दृष्टि हुनकै देखाए
छनि । अपन नीच चेष्टाकै छुपरेत रातगोरिनदकै
एक छिष्टा आशीराद दैत छथिन । रातगोरिनदकै
जागते हुनकव आस्तिकताक कपातबण ई रिनदूपव
होगत अछि 'भगरान रँड ठी छथिन । जँ से नै
बहिति तँ पहाड़क खोहमे बहरैना केना जीरे ।
अजगवकै अहाव कतए सँ अरै छै । घास-पातमे
हुन-हुन केना नष्ट छै.....' रातचितक अममे ओ
रैव-रैव रूमरैक आ कबिछारैक काज करैत छथि ।
मैथिल समाजक अगिरगउना । महत्र देरै तँ काजो
कह दैत नग तँ आगि नगा कह छोटत
। । । । ।



छठम दृश्यमे रौरा आ पौतीक रातचित आ रबियाती
जएरा आ नग जएराक णुचित्यपव मथन । रौरा
बाजदेर निर्णय नग नर पारै छथिन । रबियाती
जएराक अनिरार्यतापव ओ रिच-रिचहामे छथिन 'छुगहो
आ नहिबो छै । समाजमे दुनू चलै छै । हमरे
रिखाह मे मामेष्टा रबियाती गेर बहथि । 'रूदा' थाए,
पचरै आ दुगब होगक कोनो सङ्कटित निदान नग
भेटैत छैक । रबियाती-रबियातीक ब्यवहार शीस्व
रैनरैत बाजदेर आ प्रश्नानंद कथे-रिहनिमे ओम्बा
कह बहि जागत छथि । दस रबिथक रचकारै शीस्वमे
बसग्वनो मागि-मागि कह थागरैना हमब समाज
रिखाहमे किएक ने थाएत ? तँए कामेसब भाय
निशामे खटाय-तीन सए बसग्वनो आ किनो चाबिअक
माड पचा गेरथिन आ बसग्वनो सबरा एतए ओतए
नग थातेमे जा नुका बहन । । ।

सातम दृश्य सभसँ नमठव अछि, 'रूदा' रिखाह पूरि रब
आ कन्यागतक मीका-तीवी आ घटकभाय द्वारा
रबियाती गमनक रिभिन्न बसगव प्रसंगसँ नाटक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

रौमिर नग होगत छैक । आ घटक भाषपव पियान
देरै, पूरा नाटकमे सबसँ रेशी झहरवा, लोकोजि
कहरैकक प्रयोग ओह करैत छथिन । मात्र सातमे
दृश्यकेँ देखत जाए खबमास (रैसाथ जेठ) मे
आगि-छागक डब बह छै (खनुभर केँ रहने रात
मनेनग)..... प्रकय नाबीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण
होगए (सिद्धांतक तरे पियान मूररिदुसँ हठैनग).....
आगुक रिचाव रैठरैसँ पहिने एक रैव चाह-पान भ२
जाए (भोगी आ नावप समाजक प्रतिनिधि) जग
काजमे हाथ दग छी ओग काजकेँ कगये क२
छोड़ छी (गर्भोजि)..... जिनगीमे पहिने रैव एहेन
हेवा नागर (कथा कहरासँ पहिने पियान आकर्षित
कवरौक सहर प्रयास).... आग पीरैक रैवो भ२ गेर
आ देहो हाथ अकड़ा गेर..... कष्टम नावायण तँ
ठबरो आ क२ पेष्ट भवि नेताह रुदा हमवा तँ
कोनो गर्जन गृहणी नहिये बखतीह । (प्रकाशितवसँ
अपन महत्तर आ योगदान जनरैत ओ धरि जे
हमरो कछु थाए नेन)

आठमो दृश्यमे रौनगोरिन्द, यशोधर, भागेश्वर,
घटकभाय रिखाह आ रविघातीकेँ बुनौएन केँ निदान
कवरौ हेतु प्रयासवत् छथि, आ लेखक घटकभायकेँ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानक संख्या ISSN 2229-

547X VIDEHA

पूर्ण नागै नग रैनरैत छथिन, झुदा ओकब मीठ-मीठ
शिरदक निहितार्थकेँ नीक जकाँ खोति दैत छथिन ।
ई दृष्यमे राजन रात, झुहारवा, लोकोजि आ प्रसंग,
उदाहरणक रैन ओ अपन रात मनरैए लेन कष्टरैछ
छथिन । हुनकब कहैकापब धियान दिओ- जमात
कब कबामात..., जारैत रैवतन तारैत रैवतन..., ले
पान तँ पानक उष्टियेसँ..., सतबह घाँक स्वाद...,
खनजान सनजान महाकन्या ।

झुदा घटकभायकेँ ई सुभाषितानिक की निहितार्थ ?
आ अर्थ पढ़ाक लेन कोनो मेहनति कबरौक जकबी
नग । ओ बाधेन्यामकेँ कह छथिन 'जखन रैबियाती
पहुँचे तखन शिरैत ठंडा गबम, चाह-पान, सिगरेट-
गुँठका चले । तगपब सँ पतौवा रान्हन जलपान,
तगपब सँ पनाडुओ आ भातो, पुर्छा ओ आ
कटोड़ियो, तगपब सँ बग-रिबगक तबकावियो आ
खारो, तगपब सँ मिठागयो आ माछो-मासु, तगपब
दहियो, सकड़ ढुँढि ओ आ पनीरो चले ।

नाटकक नम आ अंतिम दृष्य । रौरा राजदेर आ
पोती सुनीतक रातनिप, आखिब ई रातनिपक की
उचित्य ? जगदीश जी सन सिद्धन्त लेखक जानै



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

छथिन जे रौसम आ एकैसम सदीक मिथिला प्रकृषहीन
भ२ छकन छैक । यात्री जीक करितापब रिचाव
करैत करघित्री खनामिका कहैत छथिन रिहाबक रैशी
कनियाँ रिस्थापित पतिगणक कनियाँ छथि । 'सिंदूर
तिरकित भार' ओग ठाम सरिदा टिंताक गहीब रेखाक
प्रज बहन छैक ।

....भूमंडलीकरणक रौदो आ स्थिति अछि जे मिथिला,
तिबहुत, रैशीली, सावण आ चंपावण यानी गंगा पाबक
रिहारी गाम सब तबहें प्रकृषरिहीन भ२ गेल छैक ।
.....सब पिआ पबदेशी पिआ छथि ओगठाम । गाममे
रौचन छथि बृह्मा, पबित्यकता आ किशोरी सब ।
एहन किशोरी, जेकरा तबते तबत रिखाह भेलै या
फेब नग भेल हेल, भेलै ई दूआरे नग जे
दहेजक लेल पैसा नग जूठल हेलैक । रिखाह आ
दहेजक ई समस्याक रौच स्त्रीताकें देखल जाए ।
एक तबहें ओ लेखकक पूर्ण रौचाबिक प्रतिनिधि अछि ।
यद्यपि कथनो-कथनो बाजुदेर, छम्भानंद आ यशोधर
सेहो लेखकक रिचाव रूकत करैत छथिन । स्त्रीता,
स्त्रीता आ बाजुदेर मिथिलाक स्थायी आरौदी, आ
घटकभागक रौच बहराक लेल अतिशय पीठ १ ।
छम्भानंद सन पठन-लिखन हारकक स्थान मिथिलाक
गाममे कोनो आस नग । आ लेखक रिना कोनो



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

हो-हन्ना केने नाँकमे ई दुष्प्रवृत्तिके बाथि देने
छथि । जीरन आ नाँकक समांतवता ईठाम समाप्त
भ२ जागत छैक आ दुष्टा अर्द्धवृत्त अपन चानि
सरभारके गमेत जूझि पूर्णवृत्त भ२ जागत
थछि ।

ई कनापव अपन यंत्र

ggajendr a@videha.com पब पठाड ।



शिरक्याव सा 'ष्टव्व'

अन्धधन्यी अकासमे सामाजिक रिमर्श ::

“अन्धधन्यी अकास” आधुनिक मैथिलीक चर्चित गद्यकाव
श्री जगदीश प्रसाद मण्डनक पहिल पद्य संग्रह छछि ।
जगदीशजी सन् २००८सँ पूर्ब मैथिली साहित्यक क्षेत्र
अनर्चिन्त नाँ छलाह, झुदा गत तीन-चारि रँवखक



भारत हिनक विरिध रिमरक उपन्यास, कथा संग्रह,
नाटक, रीत गद्य साहित्य आदिसँ मैथिली साहित्यकेँ
उतव आधुनिक हागमे प्रवेशक अरसवि भेष्टि गेलनि ।

मूलतः कथाकार आ उपन्यासकार जगदीश प्रसाद
मण्डल कोनो चन्दा वा मन प्राचीनता ओ नवीनताक
सन्धिक करि नै आ नै हिनक बचनमे पबम्पवारादी
प्रीतिक कतहु दर्शन होगछ । भुरनेश्वर सिंह भुरन
जकाँ नै जगदीश नवीन प्रगीत कार्यक र्याख्याता
छथि आ नै आवसी प्रसाद सिंह जकाँ आश्व करि ।

110 करिताक संग्रह “गंधर्वनृषी अकास”मे जे आ
रैशिष्ठता प्रमाणीत कएलनि ओ अछि सम्पूर्ण समाजक
नेत्र समन्वयवादी दृष्टिकोणक दार्शनिक अरलोकन आ
अर्थनीतिक सम्यक रिल्लेषण । अनटोकेमे करिता
सरलक कर्पे हिनक विवाह सबल जीवन दर्शन प्रदर्शित
होगत अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

“मणि” रिषधव सपिर्के सेहो मनोवम रैना दैत जकव
लोभमे सपेवा सरैक अंत भ२ जागछ । ओ मणि
तँ रैजानिक दृष्टिकोणसँ कार्पनिक थिक, झुदा मणि
करितामे करि अपन मनक मनोभारकेँ मटा-मटा
मणिक रुप रेखाक सँदेशे दैत छथि । भारराचक
संज्ञा थिक-मणि झुदा जाति आ रयक्तिक बचनक
नेन भारक आरक्षकता प्रासांगिक होगछ । जखन
अन्तमनमे दिव्य ज्योति जागत तँ तन अरक्ष
अज्जरित रहत । नम्मी तखने ओतीह जखन
कर्मपथ उज्जरित रहत । कर्मपथकेँ प्रकाशित कबरौक
नेन स्रस्र मोनक आरक्षकता होगत छैक ।
पहिने आ अरधवना छत्र जे स्रस्र शिबीवमे स्रस्र
मनक निरास होगत छैक, झुदा आधुनिक रैजानिक
दृष्टिकोणे आ मिथ्या प्रमाणित भ२ बहलैक । रयस्त
जीवन शिरीमे मोन अस्थिर भ२ गेल छैक । रिन्न
कर्मक अधिक प्रापतिक भ्रमसँ मनमे रिचनन
स्राभारिक जगसँ मोन अस्रस्र । जखन मोन
अस्रस्र तँ शिबीवक अस्रस्र हएँ कोनो अजगृत
नै । ‘चिन्ह रिना ओषधि भावी’ रैजानिक दृष्टिकोणसँ
अक्षरशः सत्य मानल जाए । सोडियम कार्बोनेट
धोरिया सोडव थिक आ सोडियम रांगकार्बोनेट
पेठक अम्लीयताकेँ दूब करैत अछि । मात्र ‘राग’



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

माथिलि बिदेह **ISSN 2229-547X**

शिरद हठनास जौ उलठा सेरन हएत तँ जीरन राग-
राग भऽ सकैत छि ।

झुदा सामाजिक जीरनमे धोरियो सोडव अनिरार्य
किएक तँ मात्र पैठक अम्लीयता दुब कएनासँ शिबीरक
मोअन नै धोअन जा सकैछ । तँए जीरनमे सरहक
नेन समाहसब स्थान देन जाए । श्रेष्ठ जीरन
मानर कहँ छै मानरता उद्धर्ष्य जकब ई पातिसँ
बचनात्मक समन्रयरादी न्याय दर्शन प्रदर्शित होअत
छैक । समाजक आगाँ पातिक लोक जखन कात
लागन रक्काँ मर्माँ हत करैत छि, तखन कातक
लोक सेहो उग्रता प्रदर्शित करैत छि । ई
प्रकाबक अदना-रँदनाक भार जगदीश जीक ई
करितामे नै भैठैत । ए तँ सकावात्मक सोचक
आशिरादी दार्शनिक जकाँ अपन करिताक गति श्री
करैत छथि-

मनुखक भेद रिभेद

मेठरैक छी पर्य ओकब



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवसिंह खन्कूना, ISSN 2229-

संभरत: ब्रह्माक रवद पुत संभरै आदर्शरादी रैनरौक
संदैशे देननि अछि । ओना अर्काक मिनएरौक अममे
एकठाम छुकि गेल छथि

जखने मन मणि रैनत छिठकत ज्योति धवतीपव

अपने रौष्ट अपने देखै हँसैत चरै पृथ्वीपव

एठाम पृथ्वी पवक स्थानपव 'पवतीपव' जौं निखत
बहिनै तँ शिरद सामंजस्य भे सकेत छल । ओना
करिक दृष्टिकोण भे सकेत छैक जे किछु आव
होन्हि ।

गंभीर आशु कार्यक मान्यता समाप्त होगत मैथिली
साहित्यमे रिचाव मुक्तक पद्य रिवले भेटैत अछि ।
जीवन आ आप्यात्मक संरंध चरन्त समाजक रीच
देखेमे आरि बहल छैक । सब दिशि भागमभाग
सोचरौक लेल ह्वसत नै । मैथिली साहित्यमे
छायारादक काल निरपेक्ष तँ नै कएल गेल अछि,
झुदा अनछोकेमे किछु साहित्यकाव ई कार्य रिषापव
सम-समैपव बचना कइ दैत छथि । 'चल रे जीवन'



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

करिता आध्यात्मिक दर्शनसँ कमशील जीरनक सपि
कबरौमे पूर्ति: सफल मानन जा सकैछ । महाकरि
आवसीक कहँ छनन्हि जे सब लोकमे आशुत्र
होगत छैक हुदा लेखनीसँ अभिर्यक्त कबरौक लेन
अन्तमन आ आत्माक मिनन जिनकामे रहत रहत
‘आशु करि’ मानन जेतार । जगदीश तँ आशुकरि नै
छथि, हुदा ‘चर रे जीरन’ हिनक शक्ति अन्तमन आ
आत्मीय मिननक पवित्रा मे आशु करिता अरुण्य भऽ
गेन । जीरनमे गति सराधिक उपयोगी आ सम्प्रभु-
सरशक्ति मान तत्र थिक । जग रसुनधवाक माथपव
हमर अस्तित्व अछि ओ कथनो नै कहैत छथि ।
ग्रह-नक्षत्र सब सदिखन गतिमान, अन्तिम कार धरि
जीरन गतिमान, हुगलापव प्राण गतिमान होगत
अदृश्य चक्रमे प्रवेश कऽ जागत अछि ।

“यात्रीकेँ आवाम कहाँ छै

यात्रा पथ रिश्राम कहाँ छै । ”

जे अभागन छथि ओ स्वतन्त्र बहथि हुदा हुनको
शरीरमे शक्ति, जल, पारक, समीर, कषिबक संग सब
अंग मोरिक कपसँ गतिमान बहत अछि । ‘सूर्य-
तरंगन सेहो चलै छै’ वैज्ञानिक मान्यतासँ सरथा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

अनुचित मानन जागत अछि । सूर्य ने तँ उगैत
अछि आ ने डुमैत अछि । तँए करिक एक पातिकेँ
मात्र उत्साह रर्षनक लेन करितरक किछ मंद रात
मानन जाए । रास्तरिक कपसँ आ असत्य मात्र
करितेमे स्फुम्य जौं कथा बहितए तँ अप्रासंगिक
मानन जा सकैत छन ।

जेना जगदीश कथामे शिर्द समंजन क२ लैत छथि
उना करितामे कतह-कतह गुनबा जागत छथिन्ह ।

“समए सग चन, भूत सग चन

गति सग चन मति सग चन ।”

सभठाम सग उदेश्य आ कथोपकथनक लेन सर्रथा
उचित, रूढ़ा स्वरवात्मक पद्यमे कथोपकथनक सग-
सग अर्काव आ दुंदक समंजन सेहो आरक्ष्यक
होगत अछि । आ करिता कोनो अतृप्ति करिता ने
तँए दुंदमे आरंभ कवरक लेन करिकेँ विशेष प्रियान
देराक छननि । जगदीशक शिर्द-कोषमे मैथिलीक
आष्टी शिर्द सभ भवन छन्हि तँए हिनकासँ आव आशि
कएन जा सकैत अछि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

रौत मनोरिज्ञानक दृष्टिसेँ ए पद्य उपह्यक्त मानन
जाए । जे रौत आ हारारस्थानक संधि भऽ सकैत
अछि किअक तँ ई अरपिमे जीरनक गति-चक्रै
बुझै रीशेष अनिराय होअछ । ईसँ भाषा-साहित्य
रिकास सेहो होअत छैक । आवसी प्रसाद सिंह,
सोहन दात द्विरेदी, सुमित्रा नंदन पंत आ हविरशि
बाय रचन सन हिन्दी साहित्यक “आशुकरि” लोकनिक
ई प्रकारक पद्य प्रारंभिक आ माध्यमिक शिक्षामे
रीशेष लोकप्रियता प्राप्त कएने अछि ।

“दृष्टि नै कहियो सब-ताब

हृदय नै कहियो जिनगी रैहार ।”

जखने जीरनमे गति मति आ नियतिक विरेशी
अलग-अलग भऽ जाअत अछि तँ जीरन उदासीन आ
पश्याम कष्टदायी, तँ करिक ई उक्तिसेँ रिचारक
संग-संग शिक्षा मुक्तक सेहो मानन जाए । गति रिन
पहिले जिनगी अक्षिय केव अकर्मण्यता आ पश्याम
जिनगी रैहार, अंकगणितीय आधारपव दृष्टिकोणसेँ
प्रमाणित कएन गेल जे सरथा उपह्यक्त नगैत
अछि ।



जीवन जीराक कलासँ संरक्ष कारयमे प्रायः करि
लोकनि सुर्याकेँ नायक रैना क२ करिता निथैत
छथि । हिन्दी साहित्यमे जानकारी बल्लभ शिखरी
आध्यात्म दर्शनक सम्मिलन- “मेरे पथ में न रिबाम
बहा” सँ कएनि तँ मैथिली साहित्यमे कालीकान्त झा
रूच- “मृगी जकाँ हम कापि बहल छी, खाँखुबसँ तन
जापि बहल छी” कएँ समाजक बग्न दशिसँ रैति क२
जीरे छैत छथि । झुदा जगदीश ई समाजक
मेरकेँ साह कबरक जेठ उद्विग्न छथि । धोरै घाँ
करिता कोनो मेर रस्त्रक मुल नै, बबन समाजक
धत-धतपब लागल रुचकेँ साह क२ क२ ई सँ
रचरक प्रेरणा थिक-

“धोगरै घाँ ओ घाँ छी,

पाप धूआ पन रैनेत बहत

खजान-जान बाति दिन

बगडाँ सान चढरैत बहत’



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

मैथिली साहित्यमे बीतिक विभाषीय नाटक, प्रीतिक
महाकार्य अर्थहीन रैवागी कार्य शीस्र कथनो
रिनोदी, कथनो चरन्त करिता आ कथनो नाम-गाम
आ ठामक पद्यसँ भवन पद्य संग्रहक प्रधानता अछि
किएक तँ भनमानुस जे लिखत रहै कोसक पाखव
मानन जाएत । तँए अन्तरक ई साहित्यमे
नीतिशीस्रसँ सन्निहित पद्यान्तरकेँ 'धोरै घाँठ' सन
करिता पुनः करैत अछि-

उना-पका बातिकेँ

साने सान सूर्ज स्रडकेँए

स्रथ आवामक पनव छी न

हँसि-हँसि बाति दिन स्रडकेँए ।

कोनो आरक्षक नै जे जाज्वरन्मान नम्बरक कर्मसँ
निकसैत प्रन्तरक सन्तर्षा पविषाम उन्तमे रहैत । सूर्य
ज्योतिक प्रतीक छथि, स्रदा कथनो तँ हिनको किवर्षा
जीर-अजीरकेँ उना-पका दैत अछि तत्पश्चात्
अन्तार । हिनक प्रतिभा आ कर्मपन करिकेँ कोनो
सन्देह नै तँए भनमानुसोक अन्तार कर्मक रिरोध



कवरक चाही । ईसँ समाजमे दृष्टिकोणक रिजय
प्रासगिक हएत । वृष्क मात्र गगनगामी..... एकब एक
दृष्टि एकठा उद्देश्य होएछ पर्वच शोब रिचननसँ
भवन लम्पन बथेत छि । एक धरनि अकास आ
दोसब पतार प्रकृतिक बग रौसक गिवह जकाँ
प्रत्येक दृश्यपब पठास्केप । नाटकक अंकमे एकसँ
रैसी दृश्य होएरक चाही, झुदा प्रकृति अर्थात् रिपता
अपन प्रत्येक अंककेँ अलग-अलग दृष्यसँ आरिद्ध क२
रिभिष नाटकीय पविदृश्यक मंचन करैत छि । ई
पद्यक प्रत्येक छंदमे रिशेष अर्थ न्यापन छि जे
पाठकक मस्तिष्कपब ज्यामितिक दरार अरशिय
रैनाएत-

जहिना डाबि करैछन नीची

थोपिते थोएछा पकड़ैए

निच्छाँ-डुपब ससबि-ससबि

अपन-अपन राँठ पुरैए

भावतीय संस्क्रतिक सर्ग आ दृढग्य बहन जे
पबम्पबारादी दृष्टिकोणक किछ अरामित तत्रसँ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

लोक परेशान तँ छथि झुदा कियो ओकरा समाप्त
होमए देरै नै चाहैत छथि । 'काष्ठ' प्रथा' ई
कपेमे सभसँ निश्चित मानल जाए । 'सास-प्रतोट'
रातमे करि ओना स्पष्ट कपे काष्ठक परिणाम
सुरक्षक उद्घाटन नै कएने छथि, झुदा पबक रैथीकेँ
रैथीक कपेमे सुरक्षा कवरि स्वस्थता समाजक नारी
लेन असहज होगछ । ए रिडरना जे अपन सतानक
संग जे सिनेह बैहछ ओ दोसराक सतान जे आर
आत्मसात भऽ गेल छथि तिनका लेन असहज ।
ओना एकरा सार्थ सेहो नै मानल जा सकैछ किएक
तँ प्रतोटक आरक्षकता रक्षा रैथीसँ रैसी होगत
छैक । ईमे प्रतिद्वन्द्वताक भार बैहैत छैछ ।
मनुष्यकेँ अपन अधिकार तँ मोन बैहैत छैछ झुदा
कर्तव्यरूपक ज्ञान जिनकामे नै बहैत हुनका
पारिवारिक शान्तिक सपना देखनाए सरिता अन्वित आ
भ्रामक ।

प्रतिद्वन्द्विता ई खेतमे सास-प्रतोट दू दोषी झुदा
सासक दोष रैसी किएक तँ आनक रैथी अपन घबरे
अनलाक रौद हास-परिहास सासक झुथसँ पहिने
निकलैक संभारना बैहैत छैक-



उसाव प्रविषा रैस सासु

पड़न प्रतोहूँ देन धाही

थकड़ा क२ मकड़ा रौजनि

देहक पानि न२ गेन हाही ।

ककरोपव जौ नूँका हेंकर तँ प्रत्याभवमे पाथव
अरुण्य भेँत, किएक तँ कियो-ककरोसँ कम नै ।
अधनाह देखोसँ सँस्काव मनुक्खमे पहिने अरैँड तँ
नरकी कनियाँ कोना छुप बहतीह-

पानिये तँ पसवि देहमे

पीर गेन सलठा पाणि

की कवर, हुरिते कहाँ अडि

कहाँ पड़न डी जानि... ।

ई प्रकारक आरोप-प्रत्यारोप ग्रामीण समाजमे
रौरोरवि देखए मे अरैँत अडि । पविषाम पविहासक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

सर्ग-सर्ग अपन दैनन्दिनीमे लागनि प्रतोह् सान्त्वमे
रसनि ननदिके रीचमे सेहो न२ अरैत छथि ।

करिक कहँक उद्देश्य छन्हि जे स्रस्य जडाँ सँ
स्रस्य वृष्क रिकास हएँ प्रासंगिक तँ सान्त्वमे अपन
मर्यादाक सम्बन्ध बाथि प्रतोह्क सर्ग ओहने रैरैहव
कवरक चाहियनि जेना रैरैक सर्ग करैत छथि ।
प्रतोह्के सेहो सान्त्वमे अपन माँक छरि देखँक
आरक्षकता छैक ।

प्रयोगात्मक रूपेँ आरि ई प्रकारक अनछेष्टन क्रिया-
कराक संभारना क्षीण भ२ बहलैक किएक तँ
परायनरादी समाजमे सान्त्व-प्रतोह् एक सर्ग बहतीह,
रिबले अरसवि भेटैछ । जगदीशजी गाममे बहि क२
साहित्य साधना क२ बहल छथि तँ ई प्रकारक घटना
गाम-घबमे घटित होगत देखावा करिक लेल
कोनो अजगृत नै । करिताक रिमर आ शिल्पसँ
रैसी महत्त्वपूर्ण अछि करिक उद्देश्य । एते दृष्टिसँ
जौं देखल जाए तँ करिता नीक छैक । भाषा
रिज्ञानक रूपमे अछुत किएक तँ अपन गद्य जकाँ
एठाम जगदीश पाही, अकड़ा, मकड़ा, हाही, नसिया,



निचेन सन ब्रुप्त होगत शिर्द सभसँ पद्यकेँ राडित
करेँ रौबि करिता श्रैणीय रैना देननि ।

“रौड एत रैष्टेरी” शीर्षक करिता ई संग्रहक सभसँ
नीक रिम्रकेँ केन्द्रित क२ क२ लिखल गेल अछि ।
जीवन दर्शन आ आप्यात्मक तान्त्रिक रिरचन अत्यन्त
रिस्मयकारी ह्यायारादसँ भवन मानल जा सकैछ ।
“पवदा”मे ओमबाएन जिनगी जकाँ रतिमान मनुक्थक
जीवन भ२ गेल अछि । प्रयोगात्मक करेँ आर
कोरबक कनियाँक ओ कप कतए जकब कल्पना करि
कएने छथि, ह्रदा गायक समाजमे एखनो कोरबमे
ब्रुकाएल कनियाँ भेटैत अछि । कोरबक कनियाँ तँ
मर्यादाक अनुपातनक लेल ब्रुकाएल छथि ह्रदा कर्म
पथपर रिचवण करैरैना मनुक्थ कष्टि क२ किएक बहि
बहल अछि ? जे किछ नै जानि बहल अछि
अशिक्षित मुक अननुआवसँ सामर्थ्यशील मनुक्थ किएक
तकबाब क२ बहल छथि ? अपन-अपन कर्मक संग-
संग माए-रौपक कर्म ओ धर्म सतानक सहनताक रौष्ट
उज्झल करैत अछि । ईठाम धर्मक भार संप्रदाय नै
अपितु मानवीय मूल्यक सम्यक अनुपातन मानल जाए ।
रिनिगित पथपर जौ चवण बाखल जाए तँ ब्रुगध



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

बिनेनाग स्राभारिक था जखन बुगप रीना जाएत त
राष्ट कबुष अरशिय भ२ जाएत-

राष्टे रीना बुगप

राष्टे रिसवि गेल

जेमहव जे चनन

तेमहरे पहुँटि गेल... ।

कर्मक रीखा जाँ सत्र तम ओ बज बस बसस
बोवन नै जाएत त मनोकामना भ्रम रनि अपन
सिद्धि अशिमे रूप्त अरशिय भ२ जाएत ।

कोना बचनाकाव जौँ सुर्य नायक रनि करिता
निथेत छथि त कोना अचबज नै, झुदा रैसीठाम
करि सुर्यकेँ बीति ओ प्रीतिक नायक रना क२ करिता
निथनाहेँ ओ रोरोरि मैथिली साहित्यमे देखएमे
अरैत अछि । अपन आलोचना कवर सँरहक नेन
सँभर नै, ओना कतौ-कतौ हास्य बसक करितामे
करि लोकनि अपन मजक अरशिय उडरैत छथि झुदा
एना कवर करिताकेँ लोकप्रिय रनाएँ मात्र मानन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

जाए । ‘अपनेपव हँसै छी’ शीर्षक करिता मुनतः
रत्नमान शिक्षा प्रणालीपव करिक आलोचनात्मक कार्य
श्रीनीमे प्रभाव थिक । सूर्यकेँ नायक रीना क२ टोबिक
डिग्रीक आधारपव शिक्षा मित्रक नौकरी प्राप्त
कवरौमे हेब-हेब देखाओत गेल छुट्टि । गाममे बहि
क२ रिहावक शैक्षणिक प्रणालीपव कहुँ छिप्पणी
न्यायोचित । शासन तँ कतरौ मजगुत मानल जाए
रूदा जखन रैरस्थे भ्रष्ट, तखन अमानदारीक दारा
केनाए भ्रामक सिद्ध होएत छैक । साम्यवादी
रिचावधायक अक्षवर्षी सम्पोषक करि कोनो
वाजनेतिक दल रीशेषपव छिप्पणी नै केने छथि ।
अर्थनीति जौं भ्रामक हूअ तँ ई नेर सम्पूर्ण
समाजकेँ दोष देल जाए । लोक जखन सूर्य भ्रष्ट
भ२ गेल छथि तँ प्रजातंत्र रा शासन तँपव दोष
देरि अन्वित-

नाथे कपेयामे

दशौ कष्टा जमीन गमेनौ

थर दक्षिना देने रीना

थर भागक भाव उठेलौ.... ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

रिचावमूलक पद्य देशिकारक दशिक एक कर्पे सत्यशिः
चित्रण करैत छि। चाककातक पविदृश्य हेतव भ२
गेलैक, ई दशिके सोम राँठ अकन्याकावी नगनाग
कोनो अन्नचित नै। दोष्टगव तीक्ष्ण रान चला क२
भ्रष्ट लोक अपनार्के सत्य सारित कबरामे कोनो
अर्थे नै हूँत छि किअक तँ धनक सँग गालक
जमाना एक तँ दोबि आ दोसव सीना जोबि। ई कहुँ
सत्यकेँ साहित्यमे कोनो स्त्रीकाव कएत जाए आ तँ
भरिष्यक गप्प हूँदा यात्री आ आवसी जकाँ अपन
लेखनीक सँग जीरनमे सम्यक साम्यरादी जगदीशिक आ
करिता समाजक लेल दिशो निर्देशि क२ बहलैक।
उना आ अलग राँत जे रर्तमान पविदृश्य त्रासिक
बाज्यकाति जकाँ नै जखन कसो आ रागठेयवक
आखब-आखबसँ समाजमे काति आरि गेल छल।

आशिरादी दृष्टिसँ जौँ सोचल जाए तँ साहित्य
समाजक दर्पण अरुण्य प्रतीत हएत, हूँदा प्रत्येक
पाठक एकव सम्यक् तत्रकेँ जौँ अपन जीरनमे
उताबि लेखि तखने आ सँभर मानल जा सकैछ।



समाजक माने सरहक दृष्टिकोण आ आचार-रिचारक
सभ गेष्ट कप र्यापक अर्थमे मथन कएल जाए ।
जगदीशजी 'धोरै घाँ' करिताक बाद 'धोरिँ घाँ'
करिता सेहो लिखने छथि । 'दर्शन' कोनो पोथी
पढ़ि नै उपेय कएल जा सकैछ, आ तँ जीरनकेँ
देखैक अपन दृष्टिकोण होगत छै । उदयनाचार्य
कोनो काशी आ प्रयागमे बहि 'न्याय कस्मा'जनि' सन
पोथी नै लिखने बहथि । राजपूत कालक 'कवियन'
हुनक साहित्य सृजनताक गहरव छनि । तँ
जगदीशजी ठैम्स नदीक सभ्यताक आधुनिक रिमरक
आशि केनाए सरथा अनुचित हएत किएक तँ मिथिलाक
आँधी गाम 'रैबमा' हिनक साहित्य साधनाक केन्द्र
रिन्दू छन्हि । दर्शनक तीन रयस होगत छै-
नीति, श्रृंगार ओ रैवाग्य । सामाजिक जीरनमे
बहनिहार मनुक्खक नेर तीनूक सम्यक कार ओ भार
होगत छैक । जीरन एममे सततन रैनएरैक नेर
तीनू रयससँ अलग-अलग सत्र बज ओ तमो ग्वा
छैपकैछ । 'सात्रिक भार' करिता सत्र ग्वाकेँ आपाव
रैना क२ लिखल गेल छै । सात्रिक भार
रिवासतपब आपावित होगत छैक । जाहि ठामक
भूमि सात्रिक, हरा पानि सात्रिक माने नैसर्गिक
संस्कार सात्रिकतासँ भवत होगछ ओगठाम एकव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्करण ISSN 2229-

प्रभार अरुणभारी होगत छैक । नम्र, सनकप आ
दृष्टा सेहो मनुक्खक सभ्यक शिशिरत कर्म दिशि न
जागछ, झुदा ई नेन सभ्यक अन्तरांगिक आदिपव
रुक्तीतरक रिचाव निर्भव होगछ । स्वभाव-रुतार
आदि सगहि चलेत छैक झुदा ई नेन दृष्टिकोणक
जाहि रूपसँ देखल जाए रहल रूप दृष्टिगोचर
हएत । करिनाक भार दर्शनपव आधारित सबन
शिरदमे झुदा रिचाव रौपक नेन गुठ छैक तँए एकवा
रेशी लोकप्रिय नै मानल जाए पर्वत साहित्यिक
रिकासक नेन आ जीवन-दर्शनक नेन हाकतिसगत
करिता थिक ।

दिर्य प्रकृष ओ जे सोनह कनासँ पविर्ण होथि ।
'दिर्य शक्ति' शीर्षक पद्य सबन रूपेँ पठनाक बाद
किछ रीशे नै देखबामे अरैछ झुदा जेना करिक
रुक्तीतर अन्तर्मुखी तहिना पद्यमे गुठ बहस्य
नम्र छैक । दिर्य शक्तिसँ पूर्ण हेतुनाक बाद
मनुजमे प्रथम ज्योतिक आरव पनकि जागत
छैक । नीक-अपनाह रिचाव सभ्यसँ उत्पन्न होगत
छैक झुदा गंगा माने परिवर्तक पवित्रायक सभ्यसँ



आरंभ जनभावक कोथिमे सरहक नोन समान स्थान ।
जग भूमिपव रसुदेर रिवाजथि रएह रसुपा..... ।

नन्द आ रसुदेरक प्रसंग तँ रतमान सामाजिक
परिदृश्यमे 'उपहास' जकाँ भऽ गेल अछि झुदा करि
आशीरादी छथि.....

पाँचम कला रनि जे रीआ

मनुज मन रिबजेए

डेगे-डेगे डगबि-डगबि

सोतहम कला परैए...

जगदीश जीक जे कार्य सृजनता ओ र्यगनाक
रिशेषता छन्हि ओ थिक हिनक आशीरादी सकावात्मक
दृष्टिकोण । अपन पद्यमे कतौ करि सामाजिक
दर्शासँ निवासी नै छथि । कावक अकावकेँ अपन
पद्यमे देखैत तँ छथि झुदा ओहिसँ उद्दिग्न नै ।

'उड़ि आधन चिड़' करितामे रतमान मानरक मनोरुति
उमरि लेखनीसँ करिताक कपेँ उहृत कऽ करि
पलायनवादपव तीक्ष्ण प्रहार कएनि अछि । ई



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवसिंह बरकत, ISSN 2229-

परायनमे मात्र अपन माँस पनायन नै अपितु
संस्कार आ मानवीयमूल्यक पड़ ागन सेहो देखाएन
गेन अछि । 'चिड़'क उदाहरण मात्र करिक छायावादी
दृष्टिकोण छन्हि, कटेष्ट तँ संसृष्टिक पभावभरकै
मानन जाए । जे चिड़ अपन डीहो-डरबकै रिसवि
सुरार्थ आ प्रतिमतक नहरिमे जतः घोर भवते
ओहि बास कबत ओहि चिड़क मधुव सबसँ मूल
समाजकै कोन काज-

ओहन स्मृति स्मृते की

जे मने मन घुबिआगत बहते

पसवि नै परैत जे कहियो

तरे-तब थिआगत बहते.... ।

करिसँ रैशी समाजक न्नेन रिडरना जे रैसँ भँकन
रैसँ अपन मूल रैसँपव श्रिष्टा तँ रयक्त करैत
अछि, झुदा जग पथमे पहिने रैव उदयायन आदितिक
दर्शन होगत अछि ओग पथपव फेब धुवँ पथ
भ्रष्टक न्नेन असँभर जकाँ नगैत अछि । अपन मूल
संस्कारक पभावभर कवर उचित नै मात्र स्मृतिँ मूल



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

माथिलि बरबन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

माथिले माभुत कोना उपेन हएत । उँए 'परायन'
कोना कर्पे उचित नै ।

मिथिलाक माथिले-पानिसँ हल्लैत-हल्लैत हिन्दीक चर्चित
उपन्यासकाव हनीश्वर नाथ रेणु आंचलिक रनि गेलनि ।
जौ मैथिलीक गप्प कबी उँ कथाकाव उँ कथा
जगतमे नलित, बाजकमल, धूमकेतु, रुमाव परन आ
कमला चौधरी सन प्रोजेक्ट आंचलिक कथाकाव भेल छथि
झुदा आंचलिक कार्य जगतमे समग्र सामाजिक
दैनन्दिनीकरै छुट्टैत करिमे यात्री (चित्रा) ओ आवसी
प्रसाद सिंह (सूर्यझुथी)क पश्चात् जगदीश प्रसाद
मण्डलकरै मानल जाए । 'सान-पाव-पावा' करिता
कोना कैँचीक शानपव आधारित कार्य बून नहि आ उँ
माननीय मृत्यु ओ सरेदनाक शानपव आधारित पद्य
अडि-

जे पावा सिबज्ज गंगा

कमला कोशी ओ महानन्दा

ओ पाव कहिया धवि ठमकि



मानैत बहत हंदा ?

गंगा, कमला आ कोसीक किछेबमे रँसर गाम सभ
मिथिलाक पवित्रिक भीतव अरैछ ई तबहक उल्लेख तँ
रँहूत बास करितामे भेटैत अछि, हंदा ईठाम
‘महानन्दा’क चर्च क२ करि पुरैबिया रँहाबक ক্ষेत्र
किशेनगंजसँ आगाँ धरिक लोककेँ आग्निसूत क२ देलन्हि
जे अछि मैथिले थिकेँ ? मात्र पद्यमे नयातमकता
भबरौक लेल एना नै कएल गेल । करि मोन भारुक
होगत छैक, भारमे रँहनाथ करिक प्रवृत्ति हंदा
मिथिलाक संस्कारसँ भवन बहनाक रौदो आ क्षेत्र
साहित्यमे अपच जकाँ छल, तँए करिक भारनाकेँ
सम्मान कबरौक चाही ।

‘जहाँ न जाए बरि रहौ जाए करि-’ आ राक्य जे
कियो लिखने होथि हंदा आ सर्रथा रिचाबमूलक
अछि । ई संग्रहक किछ पद्य जेना पपीहाक गीत,
रिखधबक रीथ, नंगबकष्ट घोड़ । आदि पढ़नासँ
स्पष्टतः बुझना गेल जे ढायावादी दृष्टिकोण
वचनाकारकेँ छोटि सर्रहक लेल पूर्णतः बुझनामे नै
अरैत छैक । ‘कोशली’ शीर्षक करितामे करि
चन्द्रभानु सिंह ‘मैथिली’क सबसतारकेँ स्पष्ट रूपेँ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पाठक रा त्रीता तग पवसि देने छथि झुदा पपीहा
गीत शीर्षक पद्य कोनो टिड-छन्झलीक स्वरपव
आधारित संस्थाति गीत नै आ तँ सम्पूर्ण दर्शन थिक-
जीवन-मरणाक दर्शन । धवती अकाश, जल-थल कानि-
अकानि सन सहचा १ रिपरीतार्थक जीवन दर्शन.....

ई कनापव अपन मतिर

ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



शिरक्याव सा 'ष्टव'

मिथिलाक लोक देरता ::



कोनो साहित्यक समृद्धिक आपाव महाकार्य, प्रेरण
कार्य उपन्यास रा कथाक उन्नत आधुनिक रिरचनकेँ
मानन जागत अछि । ई दिशामे मैथिली এখন रैड
पाड्ड अछि किएक तँ समग्र साहित्य रिषाक
परम्परागत कपसँ आ भाषा रौमन मानन जा
सकेछ । साहित्यक रिकास तखने संभर जखन
भाषाक दीर्घकालीन संभारना परिवर्तित होएत ।
प्रवना पिठ १ सखड़ा बहन छथि आ नरका पिठ १मे
शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी तखन मैथिलीक अस्तित्वपर
अपने आप प्रश्नचिन्ह लागै दर्शनीय । गाम-घबक
नेना-भुठकारकेँ जौ छोट दिने जेए तँ मैथिल
परिवारक शैशवक मातृभाषा निश्चित कए रैदनि
बहन ।

प्रारंभिक शिक्षाक माध्य अंग्रेजी आ हिन्दी थिक । ई
दिशामे साहित्यसँ रैशी आरम्भिक अछि भाषाकेँ
रैचाएँ । मैथिली तखने अपन अस्तित्वकेँ दृढ़
कएँ बाधि सकतीह जखन नरका पिठ १मे मातृ आ
रातसय सनेहक वेदना छथि । एने जेन आरम्भिक
अछि रौन मनोरिज्ञानकेँ स्पर्श कबएँना रौन
साहित्यक प्राप्ति ।



ई दिशामे कहरोक लेन तँ रहुत बास कार्य भेल
अछि पर्वत रास्तरिक रौन साहित्यमे आधुनिक
पिठ कि बचनाकावक समूहमे अग्रगन्या छथि श्रीमती
प्रीति ठाकुर । हिनक तेसब पोथी 'मिथिलाक लोक
देवता' श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ 2010 ई.मे रौन
भेल ।

टी.एस. अरियष्टक Tradition and the
individual talent (1917 AD) क अनुसार
कोनो करि, कथाकाव रा कलाकाव सरयामे पूर्ण अर्थ
नै स्पष्ट करैत छथि । हुनक कलाक तुलना मृत
करि रा कलाकावक बचनसँ कएलाक बाद हुनक
मुल्यांकन कएल जा सकैछ । जौ ई मतकेँ प्रासंगिक
मानल जाए तैयो प्रीतिजी अतुलनीय छथि किएक तँ
हिनकासँ पूर्ण ई प्रकारक चित्रात्मक आ दयात्मक
शैलीमे रौन गद्य पहिले मैथिलीमे लिखल नै गेल ।
आ अम्बरबशी: सत्यो थिक किएक तँ आदि प्रकम्पक
माथपर पाग बखरोक साहस कियो नै कह सकल ।
संगहि ई तथ्यकेँ जानल सेहो आश्चर्यक जे अन्य
भाषा समूहसँ तुलनाक बाद प्रीतिजी कतए छथि ?



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्करण ISSN 2229-

‘सामा चकेरौ’ पबम्पवागत जनश्रुति आ पौराणिक कथाक आधारपर मिथिलाक गाम-गाममे प्रचलित कार्तिक पूर्णमासीक पारनि थिक । ई कथाकेँ ई पोथीमे सम्मिलित कऽ प्रीतिजी कोनो नर बचनान्तक कार्य ले कएनि परब छनछोकेमे नरका पिढीकेँ अपन संसृतिसे अरुण्य अरगत करा देलथिन । अनचारकेँ शिर्दक प्रयोग ई दुआरे कएलौ कि एक ठँ रहूत बास गामसँ आ पारनि ब्रह्म भऽ बहल अछि शिवबमे तँ एकब अस्तित्वक कल्पना कवर सैहो असंभव । आन ठाम जकाँ मिथिलामे सैहो पलायनवाद हारी भऽ गेल छैक । कोनो आरुण्यक ले जे पलायनक रौद लोक अपन संसृति तकेँ दडभंगिया प्रभारमे माँपि कऽ बाधि सकथि । तँए एहेन पारनिक चर्च आधुनिक पिढी लग आरुण्यक । जखन चर्च छएत तँ भऽ सकैछ जे प्रवासी नेनामे ई प्रकारक संसृतिसे जुड़ल बहराक प्रेरणा जागए । मधुश्रीरणी रा कोजगवाक सदृश सामा चकेरौ कोनो जाति विशेषक पारनि ले थिक रबन् आ सम्पूर्ण मिथिलाक प्रतिनिधित्व कएने अछि ।

साहित्यानुवागी लोकनि ई पोथीकेँ बचनान्तक कथा (creative story) ले मानताह आ ध्रुव सत्य



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

किएक तँ एकव कथा सभा नूतन कल्पना नै भ२ क२
पवम्पवागत शैली आ कथाक प्रतिकल्प थिक । ई
दूधारे बचनाकावक आलोचना सेहो सभर अछि ।
झुदा आ धियान बाखर सेहो आरक्षक जे अरौप
नेनारै कलिष्ट साहित्यसँ कोनो सिनेह नै होगछ ।
आते तँ महकारक पाँतिसँ रैसी 'आनी-मुनी हम नै
जानी' सदृश अर्थहीन पाँतिसँ सिनेह बथैत अछि । तँ
चारनि राठनि डेढ़ रितना, जेहन कबनी, चाबि रैठेही
रंगियाक गाछ आदि जनश्रुतिसँ संरक्षित कथानककें रात
मनोरञ्जनसँ संरक्षित माननाथ उचित रहत । लेखिका
पहिनहि अमानदारीसँ आ सूरिकाव कएने छथि जे रात
कारमे रूठ-प्रवानक झूठसँ जे सुनने छलीह तकवा
अपन शैर्दमे कथाक रूप द२ देलथिन ।

ई पौथीक संरक्ष पक्ष अछि कथा चित्रात्मक रिरचन ।
मोती सायब, नातरन राँरा, गवीरन राँरा, रिहना, सीता
आ सुगंगा, आयाची मिश्री, पक्षधर मिश्री आ उगना सन
कथा चित्रकें तैयार कवरामे कतेक मेहनति आ
समय लागल हेतनि ओ तँ लेखिके कहि सकैत छथि ।
पर्वत आ चित्र अपन रिरक्ष मुक शैलीमे नेना-भुठकाक
संग अरक्ष्य रातनाप कबत । आलोचनात्मक पक्षसँ
जौं देखल जाए तँ एकवा आन भाषा साहित्यक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

कामिक्ससँ रैसी नै मानल जाएत । झुदा एहेन दीर्घसूत्री आलोचके क२ सकै छथि । किएक तँ ओ कोनो कम्प्यूटरक खेत नै अपन मस्तिष्कमे उपजल रौनड्रानक चित्रात्मक शैली थिक जे समालोचनाक भयसँ झुकल बहैत लेखिका मात्र नैनाक लेल कहने छथि ।

बग समजन सेहो नीक लागल । अंतिम किछु चित्र द्वैत-स्याम रूपेँ देल गेल जगमे नैना स्वर्य बंगरागन क२ सकैत छथि ।

ई पौथीक कथानक पवम्पवागत अछि झुदा शैली आ चित्रांकन नर तँ अपन उद्देश्यमे बचनकाब सहल छथि ।

दूरल पक्ष जे चित्रक संग जे किछु कथा देल गेल अछि ओकरा आब रिसुत कएल जा सकैत छल । जेना मोती सायबसँ न२ क२ मीरा साहेब पबिक चित्रकथामे कथानक एकाएक रँदलि जागत अछि । जे सार्वशि जकाँ नगल । झुदा आशि करैत छी जे नैना सबकेँ नीक लागि बहल होएतनि ।



ई कनापब अपन मंतर
ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



नरेंद्र कुमार सा/ एस एच जीक
माध्यम स आगा रैठत बिहार प्रदेशे मे गठित होयत
दस लाख एस एस जी २ बाज सभा चुनाव-भाजपा
जदयु मे उम्मीदवारक लीड तऽ बाजदक अस्तित्वक
संकट

१

एस एस जीक माध्यम स आगा रैठत बिहार प्रदेशे मे
गठित होयत दस लाख एस एस जी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानुषिह बरकूम् ISSN 2229-

रिहाव मे महिला आ ग्रामीण क्षेत्रक विकासक लेल स्वयं
सहायता समूह (एस एच जी) के मजबूत हथियाव
रैनाउन जा बहन छि। एहि राहु बांश्रीय ग्रामीण
आजीरिका मिशनक अंतर्गत दस लाख स्वयं सहायता
समूह गठित कयल जायत। एहि समूह स अंगिना दस
वर्ष मे गोठेक एक करोड महिला सबके जोडबैक
लेल तैयार कार्य योजना के बाजु सबकार मजबूत
दह देलक छि। मिशनक कार्यान्वयनक लेल रिहाव
ग्रामीण जीरिकोपार्जन प्रामोहन समिति गठित कयल
गेल छि। आ राबस्था गबरी रेखा स नीचा बहय
राना (रौपीएन) परिवार के आर्थिक कर्पे मजबूत
कबबैक लेल लागू कयल जा बहन छि। तैयार
कार्य योजनाक अंतर्गत जीरिका, ग्रामीण विकास
विभाग आ महिला विकास निगम द्वारा चलाउन जा
बहन एसएचजी एकहि माडल पर काज कबता मिशनक
अंतर्गत चालू वित्रीय वर्ष 2011-12 स वित्रीय वर्ष
2021-22 धरि प्रति वर्ष एक-एक लाख स्वयं सहायता
समूहक गठन कयल जायत। एहि तबहे एहि दस
वर्षक दबमियान दस लाख एसएचजीक गठनक समूह मे
महिला सब के स्वरोजगावक राहु बैक सब स
आर्थिक मदति दे आउन जायत। एहि लेल
9200.23 करोड षेकाक उपर्रि कयल गेल छि।
सर्गहि समूह द्वारा उपोदित सब जिला मे दु-दु षे
हाष्ट रिकसित कयल जायत। देखबै मे आयल छि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

जे महिना सभ एस एच जीक उपयोग गवारी स
नडरौक हथियावक कप मे क२ बहन छथि । केबन
आ तमिनाडु आदि आन प्रदेशे सभ मे सेहो एस
एच जीक नीक परिणाम सोना आयन छति । एहि
माध्यम स महिना सभ सबक चेहरा रँदनि देननि
छति । एहि के ध्यान मे बाथि रिहाव मे सेहो
गवारी उन्नतन आ महिना सशक्तिकरण के रँद राँ
देरौक उद्धृष्ट स पैघ सखा मे महिना सभके एस
एच जी स जोडन जायत । उल्लेखनीय छति जे
जीरिका, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोज्जाव योजना आ
महिना विकास निगम द्वारा संचालित एस एच जी गवारी
महिना सभक आर्थिक उन्नति मे महत्वपूर्ण भूमिकाक
निर्वाह कयनक छति । एहि माध्यम स महिना सभ रँक
स कर्ज न२ उपोदनक काज प्रारंभ कयनक छति ।
जाहि स हुनक जीवन खुशहाल भेल छति ।
बांष्ट्रीय ग्रामीण आजीरिका मिशनक काज गामक सभ स
निर्वाह गेल स प्रारंभ होगत छति । एकब अंतर्गत
मात्र समूहक गठन नहि कयन जागत छति रँकि हुनका
सभके खेतीक उपज रँद यरँ, श्री रिपि स खेती
कवरँ, सभ नेता के रिद्यारय पढ़ यरँ आ अपन
दुखत कवरँक नेत्र प्रेषित कयन जायत । रिहाव
मे मिशनक फ्रियान्सनक नेत्र जीरिका के नोडन
एजेन्सी रँनाउन गेल छति । एहि माध्यम स एस एच



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवसिंह बरकतुल, ISSN 2229-

जी गठित कयन जायत । संगहि रैबोजगाव सभके
बोजगावक सृजनक लेन प्रशिक्षित सेहो कयन
जायत । आजीरिका मिशिन मे जीरिकाक कतेको
प्राकप के सम्वित कयन गेल अछि । मिशिनक
अंतर्गत जीरिका प्रदेशक सभ 534 प्रखंड मे स्वयं
सहायता समूह गठित कबत । प्रदेश मे जीरिकाक
प्रारंभ वर्ष 2006 मे 42 प्रखंड मे कयन गेल
छन । रौद मे वर्ष 2010 मे कोसी क्षेत्रक 13
प्रखंड मे एकव रिस्तार कयन गेल छन । जीरिकाक
माध्यम स महिला सभ अपन पयब पब ठाठ होयत ।
एहि समूहक माध्यम स महिला सभ मे जागृति आओत
आ आपा आरौदी अपन हुनक तथा ज्ञानक प्रयोग क
रिहाव के आगा रैद तीता जीरिकाक अथा नस्का
ग्रामीण क्षेत्रक अर्थरारस्था के मजगुत क रिहाव के
आगा न जयराक अछि । जीरिकाक प्ररंध निदेशक
अवरिन्द कुमार चौधरीक कहै छनि जे प्रदेश मे
स्वयं सहायता समूह महिला सभक तकदीर रैदनि देनक
अछि । एस एच जीक माध्यम स रिहाव मे नर कहानी
निखन जा बहन अछि । जीरिकाक कार्यक्रम महिला
संशुद्धिकर्षक दिशा मे रैसी प्रभावित सारित भेल
अछि । आर महिला सभ घर स राहब निकनि बहन
छथि आ दस्तुत क रैकक संग कारोराव सेहो क
बहन छथि ।

जीरिकाक अंतर्गत प्रत्येक समूहक सफलताक अपन



कहानी छि । एहि कहानी के मीडिया मे सेहो
जगह देरौक आरथकता छि जाहि सँ आन
महिनाक लेन प्रेक्षाक अस्त्र रनि सकय । रिहाव मे
गठित उठाओन पैघ डेग होयत । रिहाव सबकाव
द्वारा चलाओन जा बहन जीरिकाक अनुकवण क२ भावत
सबकाव एकवा देशे भवि मे लागू कवरौक निर्णय
लेनक छि आ एकव नाम आजीरिका बाखन गेन
छि । जीरिकाक माध्यम सँ महिना सब मे जागृति
आओत आ ओ गवरी सँ झुजिक कावगव हथियावक
कप मे एकव अपनाओत । महिना सबक आर्थिक
उन्नति मे एकव महत्वपूर्ण भूमिका होयत । प्रदेश मे
ग्रामीण विकास रिभाग महिना विकास निगम आ जीरिका
द्वारा गोठेक एक लाख स्वयं सहायता समूह संचालित
कयन जा बहन छि । गोठेक पचास हजार एस एच
जी के रैक सँ मदति दे आओन गेन छि । महिना
सब रिना डब समूह सबक संचालन क२ बहन छि ।

२

**बाज्य सभा चुनाव-भाजपा जदयू मे उम्मीदवारक
बीड त२ बाजदक अस्तित्वक संकट**

प्रदेश मे बाज्य सभाक छह सँक लेन होमय रना
मतदानक लेन नामांकन पत्र भवरौक काज प्रारंभ
होयरौक संगहि भाजपा आ जदयू मे बाजनीतिक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

गतिरिषि मे तेजरी आरि गेल अछि । नामाकिन पत्र 19 मार्च धरि भवन जायत आ मतदान 30 मार्च के कवाउन जायत । रिधानसभा मे संध्याक समीकरण राजगक पक्ष मे अछि आ दुओ सीट पब भाजपा आ जदयूक कड़ा होयराक संभारना अछि । पछिना 22 रर्य मे पहिने रैब बास्थ्रीय जनता दल अपन एकठे उम्मीदराब के उच्च सदन मे पठेराक स्थिति मे नहि अछि । दुह सीट पब भाजपा आ जदयूक मध्य एखन धरि सीटक रैरावा पब अंतिम निर्णय नहि भेल अछि ।

राज्य सभाक एहि द्विबार्षिक चुनाव मे जदयूक चारि आ भाजपाक दु उम्मीदराबक जीत सुनिश्चित अछि । हुना भाजपाक तेसब सीटक दारा कयना पब जदयू रिधान पविषद चुनाव मे रैसी सीट बाधि सकैत अछि । हालाकि भाजपा मे उम्मीदराबक रैठेत संध्या के देखि भाजपा नेत्रर तेसब सीटक प्रति एखन धरि कोनो सक्रियता नहि देखौलक अछि आ दु सीटक लेल 16 उम्मीदराबक पैनल केन्द्रीय नेत्रर के पठा देलक अछि जाहि पब 14-15 मार्च के नर दिल्ली मे पार्टीक केन्द्रीय चुनाव समितिक रैसक मे अंतिम निर्णय लेल जायत । प्रदेशे एकाग्र द्वारा पठाउन गेल नाम मे पार्टी प्ररजा बरि शैकब प्रसाद, बास्थ्रीय कार्य समितिक सदस्य आब.के. सिन्हा, प्रदेशे महामंत्री मंगल पाल्ठय, पुर केन्द्रीय मंत्री हुनीनार, पुर प्रदेशे अध्याक्ष गोपाल नावायण सिंह, रिधान पार्षद रंगा



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

प्रसाद, रौनेश्वर सिंह भावती आ किरण घग्ग, मुदूना
सिन्हा, रिन्दा प्रसादक नाम प्रहृथ अछि । ओना बाङ्गर्तीय
महामन्त्री धर्मेन्द्र प्रधान आ अरुण जेठानीक नामक चर्चा
सेहो चलि बहल अछि । हानाकि श्री जेठानीक नाम
थज्जवात स सेहो चर्चा मे अछि आ न्यावखड से
निरर्तमान सदस्य एस एस अरुणानियाक समीकरण
न्यावखड मे फिब नहि रैसना पब ओ रिहाबक रौब
धर नर दिल्ली जा सकैत छथि ओना ज्जा पार्टी दु
सीठक लेल अपन उम्मीदराब देलक तह बरि शिकब
प्रसाद, आबके, सिन्हा आ धर्मेन्द्र प्रधान मजगुत
दारेदाब छथि । उम्मीदराबक एहि भड मे ज्जा पार्टी
के तेसब सीठ हाथ लगैत अछि तह ओहि स्थिति मे
रिधान पार्श्वद सञ्जय नाक मजगुत दारेदारी भह
सकैत अछि । श्री नाक नाम पब जदयू सेहो
सकारामेक कथ देखा सकैत अछि ।

दोसब दिस, जदयूक सञ्चारित दारेदाब अन्धमन्त्री
नीतीश कुमारक आशीर्वाद प्राप्त कबरीक लेल एडी-
टोपी लगौने छथि । जदयू उम्मीदराब पब अन्तिम
मोहब अन्धमन्त्री स्वयं लगौताह । उम्मीदराबक चयन
मे जदयूक बाङ्गर्तीय अधिष्ठा शिवद यादरक भूमिका
उपचारिक भह सकैत अछि । रिधान पविषदक भेल
चुनार मे जाहि तबहे जदयू कोनो सदस्य के
दोरोबा अरुसब नहि देलक ज्जा एहि हार्दिकता पब
बाज्य सञ्चार उम्मीदराब तय भेल तह दलक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

निरर्तमान सदस्यक उम्मीदरावी पब तनराव नैकि
सकैत छि। दलक सूत्र स भैठैत जनतरक अनुसाव
जदयु चावि सैठ पब चुनाव नडरौक तैयारी कयने
छि। जाहि नेत छषि मंत्री नरेन्द्र सिंह, ग्रामीण कार्य
मंत्री डा. भीम सिंह, पूर् मंत्री वाम नन्दन सिंह,
बाष्ट्रीय महासचिव के सी लगी पत्रकाव हबजद
अहमद, पूर् मंत्री वामनाथ ठाकुर, आ शिकीर अहमद
प्रदेशे रगिष्ठ नावायण सिंह मजगुत दारेदाव छथि।
संगहि प्रदेशेक आन कतेको नेता एहि मजगुत
दारेदावक खेन मे अपन गौठी नान कबरौक जुगत
भिड़। बहर छथि। सूत्र स भैठैत जनतरक अनुसाव
आंध्र प्रदेशे स कांग्रेसक पूर् राज्य सभा सदस्य गिरीश
रुमाव सगी सेहो सभारनाक द्वाव खुजल छि तह
निरर्तमान सदस्य महेन्द्र सिंह उर्फ किंग महेन्द्र सेहो
उच सदन मे अपन स्थान स्वस्थित बथरौ मे सहन
भह सकैत छथि। राज्य सभाक ए द्विर्षिक चुनाव
जदयुक अनिर सहनी, अली अनवर आ महेन्द्र सिंह,
भाजपाक बरिष्कब प्रसाद आ बाजदक बाजनीति
प्रसाद आ जारिब हुसैनक कार्यकाल समाप्त होयरौक
काव कवाओत जा बहर छि। बाजदक एक रत्ना
एहि चुनाव मे बाजदक दिस स मजगुत उम्मीदराव
देरौक मे छि। रुदा पार्टी नेतृ हजीहत स
रैचरौक नेत एथन पबि मौन छि।



ए कनापब अपन मतिर
ggajendra@videha.com पब पठाड ।



शिरमाव मा 'ष्टिबु'

मैथिली कथा साहित्यक विकासमे बाजकमरक
योगदान ::(आर्गा)

सन् 1954 मे “अपवाजिता” कथाक संग बाजकमर
जीक मैथिली कथा साहित्य जगतमे प्रवेशे भेल ।
हिनक मूल नाँ मनीन्द्र नावायण चौधरी छन्हि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्करण ISSN 2229-

1929मे जनमन ई साहित्यकारक लेखनीसँ मैथिली साहित्यकेँ लगभग 36 गोष्ठ कथा भेटैल । मात्र 38 रँबखक अपन जीवनकालमे बाजकमन मैथिली गद्य साहित्यकेँ किछु एहेन छति दइ देलनि जेसँ प्रयोगकेँ रौदक धरातलपर प्रतिष्ठित कबरौक श्रेय साहित्यक समालोचक लोकनि ई साहित्यकारकेँ निर्रिराद करै दइ बहरन छथि ।

हिनक तीन गोष्ठ कथा संग्रह ललका पाग, एक आन्तर एक रोगाह आ “नि नमोही रौतम हममब” पुस्तकाकार प्रकाशित छन्हि । एकर अतिरिक्त हिनक एक गोष्ठ पोथी “छति बाजकमनक” मैथिली अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि जेगमे 13 गोष्ठ कथा आ एकटा उपन्यास आन्दोलन संकलित अछि । ओना छतिबाजकमनक छठ गोष्ठ कथा “ललका पाग”मे सेहो छपल अछि ।

बमानाथ नाक मतेँ बाजकमनक कथा मूल उद्देश्य मनोरंजनमय प्रणालीसँ आरोपित मर्यादा ओ आदर्शक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

पाछाँ नुकाएन आन्हबकेँ नाउठै कबरै अछि । डा.
डी.एन. न्या सेहो ई मतसँ सहमत छथि ।

“ललका पाग” कथा हिनक लिखल कथा सभमे अपन
लिखिष्ट स्थान बनेत छन्हि । ई कथाकेँ मैथिली
साहित्यक किछु श्रेष्ठ कथामे स्थान देबै सर्रथा
न्यायोचित अछि । कथाक आरंभमे मैथिली स्त्रीक
चिन्हबैक लिखिष्टमे कोनो अचबज नै । विप्रबाक
तुलना जग रत्नाक मैथिली नाबिसँ कएल गेल कथाक
भूमिकामे ओग रत्नाक स्पष्ट उल्लेख तँ नै कएल
गेल छदा ओ लिखिष्ट परिवारक कन्या छथि ।
अनुपायमे पण्डित पिताक मृत्युक पश्चात् तिक
अपन मागक सर्ग गाममे बहैत छलीह । अग्रज
मिथुबनाथ बाबू धन उपार्जन लेल चलि गेलाह ।
किछुए वर्षमे तिक हारती रयसमे प्रवेश क
गेलीह । दस-एगावह वर्षक बाद जखन मिथुबनाथ
अपन गाम घुबि अएलनि तँ मातृसिनेहक सर्ग-सर्ग
तिकक हाथ पीछब कबरैक जिम्मेदारीक आभास
भेलनि । रास्तरिकतो छेक जे जखन ओ कथा
1955मे बिदेह लिखिष्टमे देल गेल ओग कारकेँ के
कहए रतिमान समेमे सेहो अपना सरहक समाजमे
कन्याक जन्म कारिसँ बिबाहक चिन्ता अतिभारककेँ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानक संख्या ISSN 2229-

सतरैए नगैत छन्हि । तिक तँ माघमे 14मे रर्यमे
प्रवेशे क२ जेतीह । उद्धश्ये जौं सार्थक हूथए तँ
सफलता निश्चित भेटैरै करैत छिट्टि । चण्डीप्रबक
बाम सागब चौधरीक स्वपत्र बाधाकान्तसँ स्र. पण्डित
हेकनाथ माक प्रती विप्रबाक रियाह सम्पन्न भेल ।
मासुब आरि तिक कनेको सतरैध नै छथि किएक तँ
जीवन शरीरक कोनो ज्ञाने नै छन्हि । अज्ञानतामे
रौढ़ीक पट्टाबामे पोथवि देखि अपन रैमात्र मासुसँ
हेनरौक कनाक जिज्ञासा कएनि । यएह जिज्ञासा
हुनक जीवनक जेल कार भ२ गेलनि । चननप्रवराणी
मासु बोरे-बोरे समस्त गाममे अहराह पसावि
देखिन जे बातिमे नरकी कनियाँ पोथविमे छूँकि
बहल छलीह । बाधाकान्त ई घटनासँ मर्महित भ२
गेलन्ह । आरि प्रश्न उठैत छिट्टि जे चननप्रवराणी
एना किथए कएलीह ? ओ अपन पतिपुत्र भाय डा.
शंभूनाथ मिसबक स्वपत्रसँ बाधाकान्तक रियाह कबरैए
छाँत छलीह । ईठाम कथाकार कनेक छूँकि गेल
छथि । ई उद्धश्येकेँ कतौ स्पष्ट नै कएल गेल ।
माए जौं अपन रैष्ठिक रियाह कोनोठाम कबरैए छाँत
छलीह तँ विप्रवासँ कोना भ२ गेलनि । जखन की
चननप्रवराणी परिवारक अतिथारिका छलनि । हुनक
पतिक हुनकापब कोनो विशेष अनुशीसन सेहो नै

113



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

कावक बाखन वनका पाग जखन विप्रवा बाधाकान्तके
दोसब रियाहक नेन प्रस्थानकानमे दैत छथिन त
बाधाकान्तक द्वाद पविरतन भ२ जागत छति आ
पतिव्रक वनका पागक मर्यादा बखराक नेन ओ छप्प
भ२ आंगनमे आरि क्रमपव रैस जागत छथि । एह
घठनकाक्रममे कथा रास्तरिकतासँ रैसी कल्पवृक्षक
प्रस्प प्रतीत होगत छति । जे बाधाकान्त मात्र
पोथवि स्नानक दंडमे विप्रवास नारीक अधिकार छनि
नेरौक निर्णय केरनि ओ अंगुलिमार जकाँ क्षणहिमे
कोना रैदनि गेलाह । ओ धुर सत्य छति जे मैथिल
ब्रौह्म पविरावमे वनका पागक स्थान विशेष छैक आ
ओ पागकेँ सहेजि क२ विप्रवा धएने छलीह ।
भगरत परीक्षा जकाँ सौतिन अनरौक नेन पतिक
हाथमे पाग देरौक निर्णयमे अंगुलिमार कपी
बाधाकान्तकेँ ब्रह्मसँ दर्शन भेलनि । जौँ एकवा संभरो
मानन जाए तैयो कनेक कमी ओ जे बाधाकान्त
विप्रवाक वृत्तनामे कामाख्या दागक संस्कारकेँ सोचि-
रिचावि रिशिष्ट मानि दोसब रियाह कवरौक निर्णय
कएनि । कोनो क्षणहिमे नै । ई रियाहक सूत्रधर
हुनक रैमात्र माए छलथिन । चननप्रवरातीकेँ अछैत
बाधाकान्त माथपव रिन पाग धएने कोना बिदा भ२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चक्रान्ता, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बहल दुनाह, ए त सद्यः कथाक रूत कमजोब पम्न
थुडि ।

भाषा रिज्ञानक आधारपव जौ मुन्याकन कएल जाए त
कथाकाव पबम्पवारादी मैथिल साहित्यकाव जकाँ
गद्यकेँ अधोषित त्रुंगवक कप देरौक प्रयास
कएलनि ।

तिकक तुलना राश भुष्टक श्यामांगी नायिकासँ कबए
कान ए उद्धश्य स्पष्ट भइ जागत थुडि । झुदा
जखन निथेत छथि जे “मिथिलाक छोट १ सभ अहिना
करैत थुडि ।” त स्पष्ट भइ जागत दुनहि
आत्मिक कपसँ किछ आव कहए चाहित छथि । ईठाम
छोट १क स्थानपव ‘कन्या’ शैर्दक प्रयोग सेहो
कएल जा सकैत दुन जे रैसी नीक लगितए ।
कामाख्या दागक रिषयमे बाधाकान्तक मौन सिनेहमे
मिथा आ जाइ..... निथरौक उद्धश्य स्पष्ट नै
भइ सकल ।

ए सत्य थुडि जे बाजकमन मैथिलीक सँग-सँग
हिन्दीमे सेहो निथेत दुनाह, झुदा हिन्दीक प्रति



मापन सिनेह मैथिली कथामे परिवर्द्धित भ२ गेल ।
ए मैथिली साहित्यक लेल दुर्भाग्यक गप्प जे ई
भाषाकेँ दुर्भाषी बचनाकाब मात्र अपन नाँ-गाँउक लेल
हथियाब रनेननि मात्रभाषा सिनेहसँ साहित्यिक बचनाक
कोनो संरंध नै । ओना ई प्रकारक कथ्य यात्री आ
आवसीक बचनामे नै भेटैत छि । कथोपकथनमे
विरोधाभास देखलाक बादो एकबा नीक बचना मानल
जा सकैछ कि एक तँ कथा रँछ आकर्षक छन्हि । जौ
रिम्बरक रिस्मिषाकेँ शिल्पक रूपमे देखल जाए तँ
बाजकमनजी स्थापित शिल्पी छथि ए लेलका पाग
प्रकट भ२ गेल ।

दमयन्ती हवष- 'दमयन्ती हवष' लेल सभामे कोनो
विरणै नारीक चित्र-हवषक वृत्ति छि नै । ए तँ
समाजक पाग-चानन- ठोपपारी किछ कथाकथिक
लेलमानुषक रास्तरिक मापन चित्रकेँ नाँउ कवरक
कथा थिक । कथा नायिका छथि तेगस-चौरस
रँवथक- दमयन्ती दूरेतिन दम्पति अथवा समाजक
कोप भाजन रनेनि दमिछाँ । ई नायिकाकेँ गामक
बस्सक लोकनि खलनायिका रना देलनि, जे दोसबक
शोषण तँ नै करैत छि छुदा अपन चित्र हनन



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

क२ ग्राम्य समाजके रिगलित क२ बहनीह जे कोनो
अर्थमे उचित नै । ई जेन दोष ककवा देन
जाए ? सामर्थ्यहीन मायके रा ओहि जेन दोष ककवा
देन जाए ? सामर्थ्यहीन मायके रा ओहि समाजके
जकब छारबिमे नैनपनसँ सोनेन अग्रछ नारीक
अरस्थामे प्रवेशे क२ गेली- दमियाँ ।

मिथिला समाजक र्चन कोनो करितामे जतेक
घृतगन्धा ह्वाँ दूदा आ अस्फुरणी: सत्य अछि जे
जग समेमे आ कथा लिखन गेल ओग समेमे परीक्षा
समाप्ति आ नर कस्सामे प्रवेशिक मध्यक समय छारक
जेन मस्ताएन साँठसँ रेशी किछ नै छन । जौ
बहिनए उँ ह्नुनराँव वामपुवमे किछए रौआगत
बहिनथि । “ह्नुन भैया ओगपाव जएरह ? ”
रेदर्यासक मत्स्यगन्धा अत्यादि संवादसँ नारी रिमर्शक
रिद्धन बकप प्रदर्शित होगत छैक । कथाकार उँ
कथाक प्रारंभमे अरश्वे आ निश्चय केने हेतह की
कथा नायिकारकेँ रेशिक कपमे प्रदर्शित क२ कथाक
अतिश्री कएन जाए । दूदा आदर्शरादी रिचावधारसँ
एकठा रेश्याक भूमिका रूपर रूड कठिन कार्य भेल



हएत । शिने:-शिने: 'गाड़ ीमे भीख माँगेत छौड़ ी'
सदृशी दमयन्तीक रूपक रिद्वेषणमे नाबी जातिक
अपमानसँ रेशी समाजक कष्ट सत्य अजोतमे आरि
गेन ।

सुरेच्छासँ अमर्यादित आचरणक आरवणमे दमियाँ नै
गेलीह । 'हे महादेव, चाबिदिनसँ हमरा अँगनमे चूल्हा
नहि जबरन अछि' सन सराबसँ अ पवित्राश्रित होगत
छैक ।

गूढ़ मथन कएलासँ कथामे किछु रिशेष नै ।

अपन रैष्टीक भवण-पोषणक नेन देह व्यापारकेँ
केन्द्र रिन्दू रैना क२ लिखन गेन कथामे कोनो
सम्यक समाज रिमर्श नै । कोनो आदर्श पथ नै मात्र
मथल्लयष्ट समाजकेँ पाठक धरि पवसर गेन । यायारबी
जीवन चक्रमे घुमैत जयद्रथ आ कथाकावक सराद
कोनो समाजक नेन आदर्श प्रस्तुत नै कएलाक ।
देनक तँ समाजकेँ अ सँदेशे जे जेँ कोनो अरना
मिथिलाक गाममे बामराँ सन दुःखिता पतितक
कथाकथिक बस्सक लग अपन आत्मबस्सक अँचव



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पसावतीह तँ ओ आँचव खाँच नोरामे कोनो सँकोच नै कबतथि ।

‘मायसँ कोन काज अछि’- नायिका कथाकाबकेँ देखि हुनको ग्राहकेँ बुझली । ओ कोनो भ्रम नै । अस्मत्तर रिहीन नारी तग देहलोगरूपे मन्त्रुख पहुँचैत छथि ।

‘हम स्त्री नै छी, हुन भैया । हम तँ माँसिक कुष्ठनि हाँडि छी । हमबापव दया कबरौक कोनो प्रयोजन नहि’- मर्महित कबरौक नेन चेतनाशील मन्त्रुखकेँ ओ राक्षस भारी पड़त । दुपुन रँवथ पुरि ओ कथा लिखल गेल । ओओ समेमे समाजक ओ दशा छल ? तखन तँ रत्नमानकाक जीवन शीर्षकेँ दोष देरि उचित नै । जखन जड़ि ए पथभ्रष्ट तँ छीपक विषयमे नीक कल्पना कबरि सेहो भ्रामक अछि ।

सम्पूर्णकथामे न्याजी आ चौधबीजी, मात्र पँचैती कालमे सुकुलक प्रणानाध्यापक यादरँजी आ एकठाम खरौस कँजा धानक अन्या रक्षाक पात्र छथि । तखन ‘ब्रह्मा जानति ब्रह्मणः’ कोनो कलिहासमे प्रासंगिक मानल जाए । समाजमे नीति शिक्षाक आचार्य जेँ कनीतिक



प्रधानाचार्य भ२ जायि तँ ब्यरस्थे चौपष्ट किअक नै
हएत ।

रैब-रैब जखन-जखन नाबी रा शुद्धक चर्च होगत
खुद्धि तँ तुलसीदासक 'छैन गरब शुद्ध पशु नाबीक'
उद्धरण देन जागत खुद्धि । महाकार्यक बचनमे
कोनो विशेष पागक दुखसँ निकसन ई राणी द्वारा
मानस प्रकषक चरित्र..

सकैत छथि । चौधबीजी रँजनाह 'घोब कनिहाग आरि
गेन खुद्धि तुलसीदास ठीके निखने छथि...' आ उचित
नै लागन । तुलसीदास तँ एकठाम निखने छथि जे
'पीबज धर्म मित्र एक नाबी, आफत काल परेखहुँ चाबी'
एकब उल्लेख किअक नै कएन जागत छैक ? ओना
ई कथामे नाबी आ धर्ममे सहचरी रँनेरौक कोनो
गुंजागशि नै छन । दुदा तुलसीक विषयमे निखरौक
काल आ प्रियान बखरौक चाही जे वामचरित मानस
जनभाषाक प्रति खुद्धि जगसँ सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति
प्रभावित भ२ बहन, कोनो विशेष जातिक
आधिकारिक भाषा संस्कृतिमे निखन नै गेन । तँ
रौन्मिकि वामावशसँ रैशी पाठक धरि एकब पढ़ूच
बहन ।



कथाक रिम्रि रिल्लिषण कचिगब नागन, जे बाजकमनक
रिषेय कथा निखरौक कलाक पविषाम मानन जाए ।
हिनक कथामे कोनो हास्य समागम नै बहितहुँ
जनप्रिय बहन । तकब मौद्रिक कावण थिक गद्य
कार्यात्मक रिश्लेषण । राणिज्यक द्वाव बहितहुँ
बाजकमन अंकगणितीय रा सांख्यिक लेखा जोखामे नै
पढ़नाह किएक तँ 'आश्वकथाकाव' छथि । कथाक अंतमे
रएह पंचैतीक निर्णै जे हमरा सरहक समाजक
रूपाधि छन । कानूनकेँ चनौती देरौक नेन पंच
पवमेश्वरब रनि किछ लोक पान चिरौ कइ अतिश्री कइ
बहन छनाह । रर्तमान समैमे ए सभर नै छैक
किएक तँ मन्त्र सैनो 'चेतनाशील' भइ बहन आ
प्रजातंत्र दीर्घ सूत्री समाजक पागधारीसँ भविगब भइ
गेन । झुदा अंतमे कथाकाव रिसवि जागत छथि आ
मत्स्यगंधाक हँसि प्रह्ला बहि गेन । बाजकमनक प्रश्नसँ
कथाक अतिश्री कवरौ पाठकेँ भ्रमित कइ दैत अछि,
झुदा कचिपूर्ण । निर्णै तँ हमरा सरहक समाजमे
उमवाधने बहि गेन छन तँ सभरतः प्रह्लासँ कथाक
अतिश्री कएन गेन भइ सकैत अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्करण ISSN 2229-

अ कानि र्गगा- मैथिली साहित्यक र्गग सदियन अ
झाति बहन जे जौ कोनो साहित्यकावक एक गोष्ट
छाति साहित्यके आव सुरासित क२ देने अछि त
आगाँक बचनामे कथ्य ओ शिल्पसँ रेशी कथाकावक
नाँ मुन्याकिन केन्द्र रिन्दू भ२ जागछ । ई
अन्तर्द्वन्द्वसँ बाजकमन सेहो नै अछोप बहनाहै ।
‘आकाशि र्गगा’ त्रैगाविक रिन्दूके स्पर्श करैत समाजक
अंतर्ब्याक चित्रा कबरामे सफल कथा थिक, ईमे
कोनो सन्देह नै । झुदा जौ अंतःकवणसँ अरनोकन
एकर जाँ तँ ‘रैव दुआविपव उतवव नहि की छीकक
ध्रनि’ जकाँ कथाक प्रारंभे डायारादी शैलीमे कएन
गेन । ‘रिरेकानन्द चौधरी नहि मिथ्या कहनहुँ, आर
जमीन्दाव नहि साधारण नागरिक । नागरिको नहि
साधारण गामीण सन शिर्दकोशिसँ राक्य रैनाएँ
अप्रामाणिक मानन जाँ । कथाकाव स्वर्य दृग्भ्रमित तँ
नै छथि किएक तँ हिनक प्रतिभापव सन्देह नै ।
तखन पाठककेँ दृग्भ्रमित कबरौक उद्देश्य स्पष्ट
नै । कथाकावकेँ एकरेव स्पष्ट क२ देरौक चाही जे
रिरेकानन्द की छथि ? जौ अ कार्य बहिति तँ
स्मय छन, झुदा कथाक ई कपकेँ की मानन जाँ ?
सचाव तखने नीक नगैत छैक जखन मुन आद्य पदार्थ
अस्मृत हूँ । मङ्गलक र्गग गानी साग तबकारी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

पवसराक राँदो भोजनमे विशेष स्राद नै भेँत ।
कथोपकथनपव शिल्पक भाव एक निश्चित सीमाने तक
शोभायमान नगैछ । रिरैकानन्द चौधरी अपन
अक्षरिणी मदातसार् सँध समाप्त भऽ गेलनि ।
रिरैकानन्द अपन रैँठी अन्नपूर्णा संग बहए लगलाह ।
एकठाँ जमीन्दारक रैँठी अन्नपूर्णा पित्र आशोक
रिपवीत गवीर राँतक बाधाकान्तक संग रिखाह कऽ
लेत छथि । राँप-रैँठीक सँध समाप्त भऽ गेलनि ।
कालान्तबमे रैँठी अन्नपूर्णा एक राँतक आशोकक माए
भऽ गेलीह । पतिक देहारमानक राँद दबिदास
नढ़ेत माय अन्नपूर्णाक चरित्र चित्रामे कथाकावक
सँध दृष्टिकोण नजरैत अछि । नाबी-रिमर्शक
दृष्टिसँ कथा रोचक झुदा नाबीक जीरन दशो समाजमे
उदासी डेक, आ प्रमाणात कवर उचित झुदा अगिला
पीढ़ीक जेन उदासीन तँए बचनाकावकैँ एँमे परिवर्तन
कवरक चाली छल । अंतमे रिरैकानन्दक हृदय
पमिजेत अछि आ ओ रैँठीक रिदागवीक जेन उद्यत
भऽ जागत छथि । ननका पाग जकाँ अछि कथामे
परिणाम स्पष्ट नै भऽ सकल । श्रैंगारिक जीरनक
परिणामे घुमेत कथा परिणाम रिहीन, एँसँ एकठाँ
कथाकावक परायनरादी रैँवागी प्रवृत्तिक द्यतक मानल
जा सकैत अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीसिंह बरकतुल्ल ISSN 2229-

कादम्बी उपकथा- रैधर्य जीरनक अरिबन चित्रासँ
भवन ई कथामे नायिका कादम्बी रीधरा छथि ।
पति रीधरनाथक मबनाक रौद नैहब चलि जागत
छथि । किछु दिनक रौद देओब दूथित भऽ गेलथिन
तखन सासुर आरि गेलीह । सासुरक लोकक कल्पना
छल जे कादम्बी ब्रह्मण सँसृष्टिक अन्नक शिरेत
रस पविणी अरना रैनि अएलीह । अदा सौन्दर्य
सुननि कादम्बी अंग-रससँ रिपदा-माबलि नै
अएलीह । हेब धमगिज्जबि । अपन केओ नै किएक
तँ जीरनक एक पहिया धसि गेल छलनि । तँ नै
दोसबक नेनामे शिक्षाक दिव्य संस्कार जगएरौक
क्रममे परिहासक पात्र भऽ गेलीह । गायत्री देरी
छोष्ट दिआदिनी छलीह । शिक्षित नाबी कादम्बीक
महत नेना-सभक मध्य रैसी छल । किएक तँ
हूनकामे सँतानहीन बहिनो मातृत्वं छलनि । नेना आ
मूक पात्र पशु सिनेहक भुक्खल होगत अछि । आ
सभ गायत्रीकेँ सोहागत नै छलनि । अपना तँ डुक
देरौक जेल एकठा अन्न पेटसँ नै उखलनि
गायत्रीक ई प्रतिघातसँ कादम्बी पाषाण भऽ
गेलीह । आउनक पाठशाला रँग कऽ देलथिन किएक
तँ गायत्रीक छोटकी रैली निबमनाक मृत्यु बेलापव



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

‘डाउन’ शिर्दसँ सेहो रिभूषित कएन गेलीह । जखन
की निबमना सर्प दशिसँ जहान छोड़ा रिदा भेलीह ।

कथाक अंतिम चक्र रँड नीक खट्टि । ब्रूँधा खरासक
सूत्री प्रसर पीड़ सँ रयथित कादम्बरवीक आँगनमे
छुटपुटगत छथि । एकठ्ठा गरीब समाजक कात लागल
रक्ताक नाबीक रयथा कादम्बरवीकेँ कर्तव्य पवायगतक
भारक प्रवाहमे नह गेलनि । हास-परिहास आ
पवित्रापक भयसँ झूक्त भह ओग नाबीक सर्ग-सर्ग
समावमे आरैए रँगा नैनक नेन भगरतीसँ छगब
करूँला केरथिन । जखन ओ गप्प रौदमे गायत्री
कादम्बरवीक झूथसँ स्वनलनि एरँ प्रायश्चितमे अश्रुकण
रौहव भह गेलनि । ग्रामि भवन समाजक रैधर्य
जीवनक रूति छिन्न अंतमे सिनेहसँ समाप्त भेल ।

आकार्षणमे कथा चूमरकीय प्रभार जकाँ पाठककेँ
नपट्टि लेल खट्टि, झूदा की समाजक ई अनिश्चित्यवादी
रैरसुथाकेँ ‘नाबी-रिमर्शक’ दृष्टिसँ उचित मानल जाए ।
जग कानमे ओ कथा लिखल गेल, भारतवर्षमे सेहो
धर्म स्थाप आन्दोलन भह बहल छल, झूदा मैथिल
ब्राह्मण समाज ओहिकानकेँ के कहए एखन धरि ‘रैधर्य
जीवनसँ झूक्तिक आन्दोलनकेँ जाति-संस्कार विरोधी



मानैत छि । ई मते छि कथा निखरै कोनो अन्वित
नै । अदा प्रयोगपरमितीक रूपे जौ प्रियान देन
जाए तँ बाजकमन आन्तिदुत भ२ सकैत छनाह ।
परिणाम मिश्रित देखै सकैत छनाह पर्व
कादम्बरि के कठि रादितसँ अकृति कबरक प्रयास
कथाकारकेँ ओग शिखरपर स्थापित क२ सकैत छन
जतए धरि मैथिली साहित्य एखन तक नै पहुँचन
छि ।

निष्कर्षतः रचयिता केव नाउठै भेल से उचित
किअक तँ सर्गि मानसिकताक समाजक मध्य छि कथा
घुमेत छि ।

ई कनापव अपन मतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह **ISSN 2229-547X**

३. पद



३.१. शान्तिनक्षत्री चौधरी



३.२. ओमप्रकाश झा



३.३. अमित मिश्र



५. उमेश पासवान

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवसिंह संस्कृतम् **ISSN 2229-**



इ.४१.
ठाकुर

जगदीश प्रसाद मण्डल



नरीन



इ.४१.

चंदन कुमार सा



नरीन

कुमार "आशी"



इ.५.

निशान्त सा



३.१ डा. शशिधर कुमार



३.२ श्रीमान् सुमन-कि कुशुड १ पब चान
देखवई



शान्तिनम्मा चौधरी

गज्जन १

बगरी भोजी देखहि तँ कोना हाथ मोचारे छै गे
दाय

रैनजुमबी पठकि केँ कोना बग नगारे छै गे दाय



मनप्रथा मनक गान बगि रनि गेलौ हँ दनिपूरी

थोष्टि-थोष्टि रँड १ केहन-कहाँ कप रनारै छै गे
दाय

थाय लेनय छै भाँग फेठन गुँठन खुआक मोदक

भंगजिनेरिये मन घुमन डाँव नचारै छै गे दाय

सैरज भोजी थाय भस गेलौ केहन निवपठ निर्ज

कोना दरौडा छौँडा केँ प्रकथ चाति देधारै छै
गे दाय

बसिया भोजी सँ हावि दिखब-जन पस लेनकेँ दुआव



रहितनोक सोमनहाँ कनियो राज नै देथारै छै गे
दाय

रिन भोजी बगुआक खँगना लागै जेना भुतबँगना

बँगवस तँ चमूगव भोजीये रनारै छै गे दाय

“शातिवस्त्रा” केँ तँ भोजी लागै रयस शिक्षाक
मासुबनी

नरतुबिया केँ देह बसक पाठ पढ़ारै छै गे दाय

..... वर्ष २०.....



गङ्गा २

देह मे सँझौ जखन देह सिहबि गेन देह

केरौ छोटि केँ खेसाबी से नेह सिहबि गेन देह

रिझापनक हाग मे स्त्री देहक हाग रँडु मोन

मरैत देखि रासेन्य सिनेह सिहबि गेन देह

जीवनक धार मे जागत बही ओहिना भासन

अनि हुँकरैत कोशीक ठहे सिहबि गेन देह

रँहँझी राँठा मे दहि गेन धानक रौंग-रोप



रिछ खबिहान देथि आ मेह सिहबि गेन देह

गामघब छोड़ा-छोड़ा लोक पबदेस दिस भागे

पबती नै पारि हबक रेह सिहबि गेन देह

गामक डीह डारब रौंछि शिहब चलि एतहुँ

भैठै तँ चैन राहरे नै गेह सिहबि गेन देह

मवाठी मान्ख कह प्रवरिया, असामी रिहावी

तहुँ मे रौंछि भदेस-रिदेह सिहबि गेन देह

दस दशक बाद मिथिला कि एहने नै बहते



“शांतिनम्मा” केँ छै बन नै खैत सिहवि गेल देह

....रणी १+.....

गङ्गा ३

मोठे पकड़ा जू निठयेनको तँ हे हबिया सती

हँ गे ठोठे दारि धकियेनको तँ हे हबिया सती

सदि एरहि हमबा रहु सै रकथोथेनि कबय

तँ डेने पकड़ा मोड़ा येनको तँ हे हबिया सती



मास प्रतौहक नगड १ होगते छै सबक घर मे
गबियेनिही येह बुनैनको, तँए हे हबिया सती

हे गे माथ छिये की कंकरी पडन बहय छै पाछ
येह किछकिछ सब खेनको तँए हे हबिया सती

मजा ब्रूय ने पियाप्रता केँ जनमाय ठे 'गरने'
सँय की सुद्धदय पोसनको, तँए हे हबिया सती

सँये के माथ हाथ बाथि थो ने सम्पत गे
डनियानी

कचानिये भैयो नतियेनको तँए हे हबिया सती



एहन रूपव देखि काकी कहतौ "शीतिवर्षी" सद्ध
दैर किनको रौनै बाखनको तँए हे ह्रिया सती

.....रणी १९.....

गजल ४

गोब गान पातव ठोब छै
कमल ओस आथि नोब छै



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

दीन दूध भीजे गान पब

काँपैत ठोब तिनकोब छै

नान गान गबम तकथा

बजे मोन झुदा अन्हाब छै

राप ताबी माय राभचाबी

भाय दूनु सिनहा टोब छै

थान मे छै कमल फुलन

तुमबाक हाँज मे होब छै

करि होथि रा कोदबराहा

बि देह बिदेह Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

बस मे सब सबारोब छै

मँहके पानि पीगीन पठ

धर्मियो माछे के चष्टेब छै

गरीर रैछी सबक भोजी

“शातिनम्मा” तै नोरे मोब छै

ई कनापब अपन मतिर

ggaj endr a@vi deha.com पब पठाड ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA



उमप्रकाश ना

१

गजब

धावक कात बहितो पियासन बहि गेल जिनगी हमब ।

मोनक रात मोनहि बहन, दूख सहि गेल जिनगी
हमब ।

झुझी हमब घब आस न्नेने आओत नै आरै यौ,

पूरे डै कहाँ आस सरहक, कहि गेल जिनगी हमब ।

सीखेनक ग दुनिया किना रँचरै केब ठगो झुदा,



रैचरै मे किना खनकरे छै ठहि गेल जिनगी हमब ।

पाखब रैछै पब छी पडल, हमबा पुढलक नै कियो,

कोनो रैन नावा जकाँ छुप रैछि गेल जिनगी हमब ।

जिनगी "ओम" रीतेनके रैछहि धाब गुनागते,

भैठैल नै कछेरौ कतौ, रैस दहि गेल जिनगी
हमब ।

(रैहरे झुंजिजै)

२

गजब

करेज घँसि सँ साजक बाग निखरै छै ।

रिना धुनने तबक नै ताग निखरै छै ।



अहाँ मस्त आपने मे आन पिपल दूथ सँ,
जँ लोकक दर्द रौंठै, लाग निखरै छै ।

अ दुनिया मेहनतिक ग्राम छै सदिखन,
रौंठ घाम जखन, स्वतन्त्र भाग निखरै छै ।

हक रौंठै केब छै सरहक, अ नै छीन्,
रौंठत सरै गाछ, तखने राग निखरै छै ।

कष्ट दियौ "ओम"क झडी आरै दुनिया ले,
जँ गाम रौंठै नूकै सँ, तँ पाग निखरै छै ।

(रौंठरे-हज्ज)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ई कनापव अपन यत्र

ggajendra@videha.com पब पठाड ।



१ अमित मिश्र २ डमेश पासवान



१



अमित मिश्र

१

करिता --बूढ़ी काकी

७ अन्तर्गत कोठरी मे बह छथि बूढ़ी काकी .

एकदम शीत जेना पथेव के झबत .

पिरे-पिरे चबखा पब आंग्रव चनारेत बूढ़ी काकी .



हरैनी जे रँगन मे खड १ डै .

ओकब महबानी छनथिन बूढ १ काकी

सजै छन फूलक सेज .

नागै छनै मजदूरक भीड़ ,

सहावा दैत छनी सरँके बूढ १ काकी ,

पब हाय; बाय केँ ग सँ नहि मँजूर छनै ,

नग तऽ ठारुब साहेरँ मबितैथ किएक ,

नम्मा रिधरा हेतैथ किएक ,

आरँ एनै जूथानक बाज ,

नरका जमाना कए प्रतैह कए नीक नहि नागनै
बूढ १ काकी ,

आथीब मातृ तारन आ कनहाग जीतन

घब सँ निकालि देन गेनए बूढ १ काकी .



जीवन भैव सहावा दै राती खुद बैसहावा भऽ गेलौ

हुनक ग हावत के जिम्मादार के छै .

हम अहाँ रा खुद बुँठ ी काकी

२

करिता -- ग्राम छी कनियाँ कए

आग हम रैता बहन छी हावत ग दुनिया कए,

कोना कऽ सनारी थिम्सा अपन कनियाँ कए ,

दिन भैव थँटैत-थँटैत स्रथी गेल खून शरीर कए ,

कनियाँ मोठा गेला मात्र एक रबिस मै ,

हुली कऽ भेल हुक्का अंग-अंग ओकव शरीर कए ,



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चक्रान्तर ISSN 2229-547X

VIDEHA

आग हम रैता बहर छी हातात आ दुनिया कए ,

घब के सुप्रिम जज आ रौत कोना नग मानी .
अपना नेर मधुब मनाग दोसब नेर छुछ पानि .
दौडेते बह छी पैदर कोन काज खुँव के ,
आग हम रैता बहर छी हातात आ दुनिया के ,

नै पान था सकए छी नै जौंग नै गनायटी
कानून जौ तोडरै गर्दन पब चरत कैँची ,
रैतना के मागब आग छी होग साह हम नाडू से
,
आग हम रैता बहर छी हातात आ दुनिया कए .

मैडम के जून् छै या तकदिर के सितम छै ,
कोना कs हम रैतारी कतेक उदास हम छी ,
तुहान मे हसर छी आशि नग किनावा कए ,
आग हम रैता बहर छी हातात आ दुनिया कए ,

एकठा हमनी नै छी ग्राम कनियाँ के ,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

हमरा सन कतेक भाग आओव छै दुनिया मे ,
कहियो नेरैs अमित" सहरा रौतन ग जहव .
आग हम रैता बहन छी हानात ग दुनिया के . . .

२



डमेश पासरान

आशा

मैथिल छी हम

मैथिली हमर भाषा यौ

जागत-पानिक दोग बटि

किथए देखै छी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

VIDEHA

मासिक चर्चामा, ISSN 2229-547X

अपने सब तमासा यो

अही सन सोनित

रैहै हमरो देहमे

हमरो अछि किछ अतिनासा यो

जन्म लेने छी

अपने सब जकाँ अही धवतीपव

हमरो मनमे अछि आशा यो

रोज सुति-उठि

करै छी हम

पारन भूमि

मिथिलाक उन्नतिक आशा यो

मैथिल छी हम

मैथिली हमब भाषा यो ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह अथय दोथिनी पक्षिक अ पत्रिका विदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानुषमिह संस्कृतम् **ISSN 2229-**



डेग-डेगपब खतबा

जोग जोगकेँ

जानसँ मारै छै

दानर सन

करै छै रैरहाब

कियो भ२ गेल

रैगमान कियो टोब

कियो दहेज जोडी

कियो डकु खूखाब

बिश्वास केकबापब

के कबतै ?

बि देह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्मिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्मिक ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवसिंह सर्वकृष्ण, **ISSN 2229-**

अपनो अप्पनकेँ

न२ जेत छै जान

मनुथ-मनुथकेँ

नै चिन्ह बहलैए

मनुक्थक चबिब

जानरब सन भ२ बहलैए

डेगपब खतबा अछि

उना बूमागए

देखु आजुक मनुथ

रैदतार देखि गीछा सबमागए ।

ई कनापब अपन मतिर

ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



१.

जगदीश प्रसाद मण्डल



नरीन ठाकुर

१



जगदीश प्रसाद मण्डल

गीत

पकड़ा पग पएरे-पएरे

पग-पग पथ पकड़ात चल् ।

पकड़ा प्रेम पङ्ची पकड़ा



सर्ग जिनगीक चलैत चव ।

पकड़ि ।

मोठबी-चोठबीक आशि कहु

हनबक जान रैनरैत चव

पथ अरिते-अरैत

थक सम्बण करैत चव ।

पकड़ि ।

जागन-सुतन धाव रैह छै

जिन्दा मरदा नाँ धड़ छै

पथ-रैना रीच धवती

जिनगीक गीत गरैत चव ।

पकड़ि ।

))((



रँदबीहन

रँदबीहन समथ रीच जहिना

अमरसिया बाति अरैत बह छै ।

कनि-कनिमन रसन ठुठि

कानिदी कुन सजेत बह छै ।

पम्फ अजोत अरैसँ पहिने

अन्हवा पम्फ छेकने बह छै ।

अन्हवा-अन्हवा अन्हवा रीच

राष्ट्र अजोत हवधन बह छै ।

चौरासो घण्टा दौड़-धूप

बाति-दिन, दिन-बाति खेलैत बह छै



चढ़ा -उतबि समए सर्ग-सर्ग

अपन गतिये खेन खेले छै ।

रँवारँबीक भाग नगा-नगा

सानक रीच हिसारँ जोड़ छै ।

राँठ-घाँठ आगुँउ-पाछ

पहँचि नम्ह्य निसाँस छोड़ छै ।

समए-सान देखियो स्रनि

मास नै पूरा परै छै ।

हाबि-जौत मध्य जिनगी तहिना

मानि मागन परैत बह छै ।

जहिना दिकेन बाति रँनि-रँनि

बाति-दिन कहँए नगै छै ।

दिने-बाति, बातिये दिन



मिनि-जुनि सिबजए नगै छै ।

अंत पठाड़ त्रुंग ठेकि अकास

सिंगाव रुप सजए नगै छै ।

डुपव धवती सजन-धजन

गडू गव पएव ससवए नगै छै ।

ससवि-ससवि, हष्टि-हष्टि

बसे-बसे कात हष्टै छै ।

सिब रिन धड़, धड़ रिन शीश

चिन्ह-पहचिन्ह रिसबाग छै ।

मौसम पारि मौसम जहिना

भृत पविरतन करैत बह छै ।

जिनगी मनुष्योक तहिना



बीच बैरस्था बैदने नै छै ।

कहियो बौदमे डारुए

तँ कहियो पानि-पाथर बैकसारै ।

ओस-पात रैन-रैन कहियो

छदए बीच छाती दनकारै ।

मध्य धार बीच जहिना

झूठ-धार कहै छै ।

तहिना बैरस्था बीच समाज

झूठ-धार रैनरै छै ।

जेहेन झूठ-धार समाजक

तेहने धार पकड़ि-चनत ।

दूध-रैथोक रौन-माड़कै

खनखना-खनखना कष्टैत चनत ।



))((

रानि रथ

रौपि गाढ ताडक जे सातो

गेकनाकाव लगन छै ।

सातो रौपि जे राण निकनि

आदि-रानि रथ करै छै ।

पीठ नाग सजन सातो

ताड गाढ कहरैत एतैए ।

सातो घोड़ १ सजि-रानि बथ

सावथी रानि देखरैत एतैए ।

नाग-नाक डुपव पएव जखने



कसि-कसि भाव दरेँ छै ।

छठपछाँ सोम होगत-होगत

बृत्त-आबृत्त रैन नगै छै ।

होगत सीध नजबि हिया

नक्षत्र रैन देखै नगै छै ।

कोणा-कोणी कोणा-राणा

समपानि छाती रैन नगै छै ।

रंगति बृम्ह बाम जहिना

हिया-हिया आगु देखनि

सछाँ छाती तानि धनु-राणा

छाती रातिक कसि क२ रिधनि ।

त्रेते नै जुग-जुगान्तबस



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

माथिलि बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

बैथि बैथि पनपैत एलैए ।

शेर्त बाक्कस देर पकड़ा -पकड़ा

सकलप सात गढ़ीत एलैए ।

शोसक-शोसित पक्क दु रीच

मगड़ १-मिमान दू चले छै ।

नीक-अधनाक रिचाव करैत

संगी-दोस रैनैत चले छै ।

२



नरीन ठारुब



द्वन्द्व निरर्ह

रात हमबा सँ आँहाके, कहनो नै जायत ।
रिन कहनो आँहा सँ बहनो नै जायत ।

लैब निय मोन मे जतेक तबराक हरा ,
हेब आयर जखन रेग सहनो नै जायत ।

आँहक घबक दोग सँ पबिचित छि हम ,
रुद्धी नुकरँ चाहँ , नुकानो नै जायत ।

रैब बहते कछु रात जे कहराक हरा ,
रैब रितना पब रात सननो नै जायत ।

रैहितो दुश्मन त कोनो गप नै छन ,
रुदा प्रेमी सँ आँहाके तबनो नै जायत ।

अछि बिश्ता अपन मधुवता के संग ,

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

ई कनापब अपन यंत्र

ggaj endr a@vi deha.com पब पठाड ।



१.

चंदन कुमार साह



नरीन कुमार

“आशी”

१



चंदन कुमार सा

सबबा, मदनेश्वर स्थान, मधुरनी, बिहार

1.प्रतिज्ञा

नय प्रतिज्ञा खाँउ चनु रँदनय रारस्था देशे के,

पबसय ते प्रेम-प्रसाद ओ मेठैरय ते गुम्या-द्वेषे के।



बङ्ग-बर्जित हाथ के सिखरय ले सृष्टि-सर्जना,
अधिकार-रचित लोक मे जगरय नय नूतन चेतना,
ताकय चरु ओ राठ जे पूरा कवय उद्धृष्ट के ।
पवसय ले प्रेम-प्रसाद ओ मेठरय ले अर्घ्या-द्वशी
के ।

2

|| हेतैक नरका भोव ।

एते जागृति हेतैक नरका भोव,
घब-घब मे पद्मचत शिक्षा,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

547X VIDEHA

मानवसिंह सक्कलाम् ISSN 2229-

शिक्षित हेते सभ लोक,

संपूर्ण धरा पब खुशिये पसवत,

ककरो आँखि मे नहि बहते नोब,

नहि बहते आतंक, आतंकी,

आ आतंकरादक जेब,

नहि बहते राजनीति आ

जातिरादक गठजोड़,

नरन दिस, नूतन प्रभात,

पुनि हेतैक नरन अजोब । .

२



नरीन क्रमाव “आशा”



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

मिथिलाक की कर रँथान

मिथिलाक की कर रँथान
कि गाँव एकव ग्रामगान
एहि धवती पव जँ भेल जय
तय रूँमि अपना केँ धन्य
मिथिलाक अछि अलग पहचान
हव ठाम छोटै अपन निशान
जतय जतय पव पडल कदम
ओहि ठाम रहबनि पवचम
मिथिलाक पैँटिंग कय नहि जानै
मधुरनी केँ अ पहचान
दबलंगक अछि अलग शान
जानल मानल पान मथान
मिथिलाक की कर रँथान
कि गाँव एकव ग्रामगान ।
जखन हम गजबरी सबिसरँ पाही
सुने मय आरे शैकव मिथि राणी
जकब सेहो अछि अलग पहचान
मिथिलाक कि कर रँथान
कि गाँव एकव ग्रामगान ।
जखन आरी मिथिला नगरी
दही चूड़ १ थाए पसरी
दही चूड़ १क अलग पहचान



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

थहि मय रैसे मैथिलक जान
मिथिलाक कि कक रैथान
कि गाँउ एकव ग्वणगान ।
जखन देखि मादक ठेला
तखन रूमरै सामक मेला
जखन देखि जिरैत भारुव
नहि बहत झर पव दु आखव
मिथिलाक कि कक रैथान
कि गाँउ एकव ग्वणगान ।
एतय के पिया पुता माजल
ओ बहति हवदम सजल
हुनको थुँडि थलग पहचान
हुनका मय रैसे माता-पिताक प्राण
कतरौ ओ होयथि हवदंग
नहि कबथि दोसब के तंग
मिथिलाक की कक रैथान
कि गाँउ एकव ग्वणगान ।
मिथिलाक बूँठ होयथि रा रैछा
हुनक मोन होयथि सछा
एक दोसबक कबथि सम्मान
किया नहि होयथि अनजान
मिथिलाक कि कक रैथान
कि गाँउ एकव ग्वणगान
मिथिला महान मिथिला महान ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आकाशिराणी दबर्तगा म पूर्ण प्रसारित- फरवरी 2011

ई कनापब अपन मंतर

ggaj endr a@vi deha.com पब पठाड ।



निशान्त ना

हमर भावत महान अछि
देशे भविमे रैस यएहे एक गान अछि
हमर भावत महान अछि .

गणतंत्र रैनर भावत जखन



तखन जनता झुझैत छल
आरै तंव रैचल केरल भावत
तखन जनतारै सुपि ईत छल
गणकै रिसवि गेल नेता
रैस हसी छै हुनक जान अछि
हमर भावत महान अछि .

भुखल जनता आ भुखल देशे
दू छूक कनेर पब होगत द्वेष
झुदा धावण क२ बखने साहिक रेशे
भ२ गेल होकरा भावत देशे
झुदा मोबा पसावि क२ नेता
बूमि बहल अपन मान अछि
हमर भावत महान अछि .

पठि लिखि क२ आग भरिषा
रैकाव देखाग दैत अछि
ई रैकावक खरीद रिफाई
झमान रिफाउ होगत अछि

किछ सिक्काक राखु
हिनक गद्दारी केनाग काज अछि
हमर भावत महान अछि .



हर्षक चक्रवर्ते नेता
भूत - भूतलैषा घुमि बहल
कोन दर क रँन नीक अछि
ध्यान लग्ग क२ सुँधि बहल
दर - रँदनु नेता सँ
आरँ जनता परेशान अछि
हमर भावत महान अछि .

दर रँदनि क२ तैयो नेता
जखन चुनाव हारि गेल
तँ ओ दरक नेता सब द्वारा
हुनका बाजपात रँनाएल गेल
जनताक अछि करवा हिंसा
रँस हर्षक हुनक जहान अछि
हमर भावत महान अछि .

आओ नै जानि बाजनीतिमे
केहन खिचड़ १ पाकि बहल
भावतक जनता चुपचाप
निशुन क नुनकेँ सहि बहल
एत२ नेता - नेताक मोबामे
एक एक हरारा काँड अछि

बि दे रु मिहे Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका Videha 1st Maithili
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

रुमरु भारत मरुनरु अरुट्टि .

ई कनरुपुव अरुपन मरुतरु

ggaj endr a@vi deha.com पव पठाड ।



डा. शशिपुव रुमरु, एम.डी.(आरु.) - कारुयरुट्टिकिसु,
कानुनरुज आरु अरुहारेद एरुडु विसरुट्ट सुरुषुव, निगडी -
प्ररुधिरुकरुष, पुषुण (मरुहारुषुट्ट) - ४११०४४

कुरुन अरुषिरुषु नरुट्टि वरुहवरु



मोन कहण्ड "शिर्षि" ने तौ होबी मनारैह ।

कोन खुशिई नाचि बहनह - से रैतारैह ? ?

स्रग्ग मिथिला रैनन छह, नर्कहुँ सँ रैतव ।

अजेय दुक्कक, आग हव प्राचीव रिम्कत ।

माए मैथिली - तोहब जननी, केब छदय मे,

रूपु दुख केब होनिका - पहिने जवारैह । ।

मोन कहण्ड

जनकजा सीताक जे छह मातृभाषा ।

महाकवि रिद्यापतिक जे कीर्ति - गाथा ।

मेघनादक हाँस मे से छह अचेतन,



आनि सजीरनि तौ "शिनि" तकवा जियारैह । ।

मोन कहगछ

गारिं थाकर जकर महिमा,

शाम्द रेद प्रवाण अगनित ।

आग तकवा नखिं भैठैर अछि,

हा । अपन पहिचान समूचित ।

आग नागर छह ग्रहण मिथिलाक बरि कै,

एहेन दृष्टाति पब ने तौ डम्भा रैजारैह । ।

मोन कहगछ

होबि नखिं, होबिक प्रात बरुए



आग गेल छलहुँ, हुनिका ओहि ठाँ,

होरी नबि, होरीक
प्रात बहए ।

काजक तह सिर्फ रँहना छल,

छरि - दर्शन केव
अभिनाय बहए । ।

सोनाँ अएलीहि, किछ रात रँनल ।

रँहनि गेल जेना, मोनक हलचल ।

अति आनन्दित झुमझुम छल,

आनन्दहि बिहल
गात बहए ।

आग गेल छलहुँ, हुनिका ओहि ठाँ,



होरी नहि, होरीक
प्रात बहए । ।

नयन मिनन, पब थिब ने बहन ।

नारै ने अपब किछ रोजि सकन ।

की भेन ? - हमहु सुद्ध बही,

मिननक अजगृत एहसास
बहए ।

आग गेन डनहु, हुनिका ओहि ठाँ,

होरी नहि, होरीक
प्रात बहए । ।

नहि बंग - खरीब - गुरान चनन ।



नहि नयनहि केव रौपाव चतन ।

पव थपव हुनिक बजिम - बजिम,

ओ गान थुनारी - नान
बरह ।

आग गेन छतहु, हुनिका ओहि ठाँ,

होरी नधि, होरीक
प्रात बरह । ।

लोक एहिना कहैछ, लोक एहिना कहत

लोक एहिना कहैछ, लोक एहिना कहत ।



मृदा हम छी खनी केव,
खनी केव बहरै । ।

नाम खनी केव जपै छी, हम आठो पहव ।

धान खनी केव बैहछ, नखि केओ दोसव ।

अहाँ मान् गु सए, हम
खनी केव बहरै ।

लोक एहिना कहछ, लोक
एहिना कहत । ।

साउन- भादो केव बाति रा हो चैती रसन्त ।

जेठ हो कि अषाढ , रा हो ठिथुवन हेमन्त ।



हाराँ रँहिति बहूँ, हाराँ
रँहिति बहूँ ।

लोक एहिना कहूँ, लोक
एहिना कहूँ । ।

नहिँ कहियो मिनागछ, प्रेम थिक ओ अनन ।

जबि अमृत भइ जागछ, रासना केब गबन ।

अहाँ अलुहहि सही, मन
अही केब बहूँ ।

लोक एहिना कहूँ, लोक
एहिना कहूँ । ।



हमरा जूनि कबिहें याद सखी

हमरा जूनि कबिहें याद सखी,

हम तऽ किछु कानक सर्गी
छी ।

जीवनक जौ बाह खनलु कही,

हम म्फण भवि केव रँस
सर्गी छी । ।

आग एहि आम्हिन, आग ओहि आम्हिन ।

हम एहि कानन सँ ओहि कानन ।

नखिं खता - पता हमर किछु,



हम झुग गगन केव
पंछी छी ।

हमरा जूनि कबिहँ याद सखी,

हम तह किछ कावक सर्गी
छी । ।

जिनगी मे रहूतहु भैँष्ट होयत ।

रहूतो सर्गी सभ छुट्टि जायत ।

एक जायत तह दोसब आओत,

खुट्टि जीरन तह
रहूवगी आ ।

हमरा जूनि कबिहँ याद सखी,

हम तह किछ कावक सर्गी
छी । ।



एक क्षण जेणे हो मधुमय रसन्तु ।

दोसब समुद्र पतनड - हेमन्तु ।

थिक समय-समय केब फेब सथी,

हम मित्र, रैनन
प्रतिद्वन्दी छी ।

हमरा जूनि कबिहै याद सथी,

हम त२ किछ कातक सर्गी
छी । ।

ई कनापब अपन मतिर

ggaj endr a@vi deha.com पब पठाड ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



श्यामल स्वप्न

कि झूठ १ पब चान देखनहूँ

कोना प्रियतम केँ बगो नगारी, कि झूठ १ पब चान देखनहूँ ।

छोड़ा कृष्णा केँ चौबचन मनारी, कि झूठ १ पब चान देखनहूँ । ।

भबर हाथ मे बग-गुल्लन,
सोना मे छटि सुन्दर गान,
मोन करैया क२ दी नार ।

कोना जानितो अजोबिया भगारी, कि झूठ १ पब चान देखनहूँ । ।

मानि, मज्जीबा राजय ठाँन,
गावि नगय छटि माँठगब रौन,
रिना पानि के मचन किनोन ।



कोना प्रियतम के संगे नहारी कि झूठ १ पब चान
देखतहुँ । ।

जागु सजनी भ२ गेल भोव,
गली गली मे मचलय शोव,
थेलरै हाग रहूत घनघोव ।
कोना जा क२ स्वमन केँ जगारी कि झूठ १ पब चान
देखतहुँ । ।

हाथन मौसम के त्रुंगार

होली छी बंगक लालाव
हाथन मौसम के त्रुंगार
सगरे हृष्याक गीत संग ठोर रंजैया
घब मे पिया रिनु कनिया किनोर करैया

पारनि रीतन भवि सार के, तखनहिँ हृष्या आरैया
कहियो रोर हृष्टन नहिँ जिनकर, सेहो गीत स्मरैया
साँचे, हृष्याक दिन अनमोर नगैया
घब मे पिया रिनु कनिया किनोर करैया

पुआ आओव पकरान रनाक२, सरकेँ खुरै खुरैतहुँ
एथनहुँ आँखि नगर देहरी पब, झूदा अहाँ नहिँ एतहुँ
थाय छी किछु त२ झूह मे ओर नगैया
घब मे पिया रिनु कनिया किनोर करैया



रिन्न जोड़ १ के हाथन हाँका, हरेक सात चलि आबू
लोक-रेद आ हमरो सर्ग मे, हगुआ खूँ खेनारू
पिया, सुमन अहाँ केँ रँकलोन कह्या
घब मे पिया रिन्न कनिया किनोन करैया

ई कनापब अपन यंत्र

ggajendr a@videha.com पब पठाड ।

बिदेह नूतन अंक मिथिला कला सर्गीत

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम, ISSN 2229-

१



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्नागड शो

चित्रमय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.



उमेश मल्ल



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

मिथिलाक रनस्पति स्नागड शो

मिथिलाक जीर-जन्तु स्नागड शो

मिथिलाक जिनगी स्नागड शो

मिथिलाक रनस्पति/ मिथिलाक जीर जन्तु/ मिथिलाक
जिनगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई कनापब अपन यंत्र

ggajendra@videha.com पब पठाड ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X **VIDEHA**

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (युव
हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिलीज उपेव)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैव)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला
मा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (युव लेपावीसँ मैथिली अनुराद
धीरेन्द्र प्रेमर्षि)



भगता रैङ्क देशे-भ्रमा ४ गप्पिता सार्वगीक
ओडिया करिता "गप", ओडियासँ अंग्रेजी अनुराद
गप्पिता सार्वगी द्वारा आ अंग्रेजीसँ मैथिली अनुराद



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X



गजेन्द्र ठाकुर द्वारा)



मर्गनेश



डरबान- हिन्दीसँ मैथिली अनुराद

रिनीत उपेन

गप



(गम्पिता सार्वगीक ओडिया करिता
“गप”, ओडियासँ अंग्रेजी अनुराद गम्पिता सार्वगी द्वारा



आ अंग्रेजीसँ मैथिली अनुराद
ठाकुर द्वारा)

गजेन्द्र



अस्मिता सार्वगी (१९१३-)क दुष्टा ओडिया करिता
संग्रह पम्फली हेविनी आ हेविनी कथा प्रकाशित छन्हि ।

नहबिक खबखड १गत पावनसँ

एकठा नहि सन बूँछी रहबागए

थनथन कजरी सन ।

धवातनपव

सूर्य खदहा माँपन किविषक रीच

स्रथागए कजरी

छोष्ट कोष्ट सन भ२ जागए;

स्रप्ल-

एकठा छोष्ट बाजकमाव

खरैए एकठुँडा छवपान दैत हर्षित

लैत ओकव हाथ अपन हाथमे



थानी ओग कोठ नेन ।

ओ ओठा आकाबक छोठ बाजहमावी

थोलेए अपन छोठ रोकस,

ओग रूचक ठोठपव प्रेमपूर्ण झुझी दैत

रिनागए ओ ।

एकरैव

ओ छोठकी रूचि खसैए नहबिमे

भीजन हवाक

आँखि- भवन नोबसँ घोकचन;

सीठसँ

ओग रूचक पनिसोखा सन नोब

रैनाव भेन ओठा आकाबक छोठ बाजहमाव



अपन मोनायम तबहथोक सग

ओकब गान आस्त-आस्त माँडेत अछि ।

ओकब नोबक बगन बुनबुन रिडि नैत

आंग्रब सभमे ।

.सूर्य ओकबा सभकेँ उषियारैत;

ओग बग सभकेँ बागतमे पसारैत

आ बरह पिरौछि

भोबमे ।

ओ छेष्ट रूँछी

अगिना भोब देखनक

ओ नहबि- सुखा गेल,



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मदा कजरी- अथनो अछि जिरैत

ओ छोटकी बुचिक राठ तकेत,

आकि ओ बाजहमावक ?

जिरैत

छैका स्रग जकाँ

तुवत रैनाव होगत

पिपनीस ।

३.



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम, ISSN 2229-



मर्गनेशि डर्रवान- हिन्दीसँ मैथिली



खन्नुराद रिनीत उपेन

किछु कावक नेन

किछु कावक नेन हम करि छुअहूँ
बाँटन-प्रवान करितक मबन्मति करैत
सोचैत करितक जकबत केकवा अछि
किछु काव पहिने पिता छुअहूँ
अप्पने नेना सरैलक नेन
रैसी सबन शिछ, कैँ थोजैत
कथनो अपनो पितक नकर छुअहूँ
कथनो अपन प्रबथाक पबछाँगी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

किछु कारक लेल लोकब दुनहुँ सतर्क सहमैत
रचन बहए बोजी-बोधी कहैत

किछु कार हम अन्त्यायक विरोध केनहुँ
फेब ओकरा सहक तागति जुष्टैनुहुँ
हम सोचनुहुँ जे हम अहि शिष्टके नै लिखरौं
जग मे हमब आयो नै अछि
जे आततायक अछि आब जग मे खुन जेहन
छपकैत अछि
किछु कार मे एकछी छोट सन अपाग मे खसनुहुँ
अ हमब मानरीय पतन हुन

हम देखनुहुँ जे हम रचन छी आब साँस नइ बहल छी
आब हम फुबता नै करैत छी
झुदा जे निर्भय भेल फुबता करैत जागत अछि
ओकर रिकछ हमब घृणा रचन अछि, यएह रडका गप
अछि

रचन खुचन कारकेँ नइ कइ हमब रिचाब अछि
मनुख केँ दुह आ सात घण्टा अन्तेक चाली
भोब हम जागनुहुँ तँ यएह
एकछी जानल-चिन्हन भयानक दुनिया मे
फेब सँ जग्य नेरौक हुन
यएह सोचनुहुँ हम किछु कार धरि ।



ରାଜାଙ୍କୁ ଧୂତେ

১. প্রাতঃ কাল জঁহ্নুদ্রুত (সূর্যোদয়ক এক ঘণ্টা পহিনে)
সরপ্রথম আপন দুনু হাত দেখরোক চাহী, থা গা শ্লাক
রঁজরোক চাহী ।

কবাগ্রে রসতে তক্ষ্মী: কবমন্ত্য সবস্বতী ।

কবমুনে স্থিতো ব্রহ্মা প্রভাতে কবদর্শনম্ ॥

কবক আগাঁ নক্ষত্রী রঁসিত ডুথি, কবক মধ্যমে
সবস্নতী, কবক মুনমে জঁহা স্থিত ডুথি । ভোবমে
তাঁহি দ্বারে কবক দর্শন কবরাঁক থীক ।

୨.ସନ୍ଧ୍ୟା କାଳ ଦୀପ ଜ୍ୱେଷରୀକ କାଳ-



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमस्तु जनार्दनः ।

दीपाग्रे शिखरः प्राकटः सन्ध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन
(विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि ।
हे सन्ध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतराक कार-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृक्षोदवम् ।

शियने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तु नश्यति ॥

जे सभ दिन स्वतरासँ पहिने
वाम, क्रमावस्थामा, हनुमान्, गकड आऽ भीमक स्मरण
करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहेराक समय-

गङ्गा च यद्गने चैर गोदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गोदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ
कारेवी धार । एहि जलमे अपन सान्निध्य दिथ ।

३. उतर्ब यसेन्द्रस्तु हिमाद्रश्चैर दक्षिणम् ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

बर्ष तत् भावत नाम भावती यत् सन्ततिः ॥

सन्तति उतवमे आह हिमानयक दक्षिणमे भावत अष्टि
आह उतका सन्तति भावती कहरेत छथि ।

३.अहगा द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना अरेल्लि महापातकनाशकम् ॥

जे सभ दिन अहगा, द्रौपदी, सीता, तारा आह
मन्दादरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक अवग करैत
छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट, भव जागत छथि ।

१.अग्निथोमा रत्निरासो हनुमान्च रिभीषणः ।

छपः पञ्चवामश्च सन्तति चिबङ्गीरिनः ॥

अग्निथोमा, रत्नि, रास, हनुमान्, रिभीषण, छपाचार्य आह
पञ्चवाम- आ सात ठाँ चिबङ्गीरी कहरेत छथि ।

४.साते भरतु अर्पिता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा नष्टा यथा पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामस्तु प्रसादान्तुष्ट धूर्जष्टैः

जाह्नरीफेननेथेर यन्त्रुषि शिषिनः कना ॥



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१. रौतौहँ जगदानन्द न मे रौता सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे रर्षियामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मन्त्रेण्मन्त्र यजुर्देद अथाय २२, मन्त्र २२)

आ ब्रह्मन्मन्त्र प्रजापतिवृद्धिः । निर्भोकता
देरताः । स्रवाङ्कृतिश्रुन्दः । षड्जः स्रवः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरर्षी जायतामा वाष्ट्रे बाजन्तः
श्वरेऽग्निरातिराधी मन्त्रावथो जायतां दोग्ध्री
धेनुर्बोतान्द्रानाश्वः सन्तिः पवन्तिर्योरा जिष्णु बथेष्ठाः
सन्तेयो हाराश्च यजमानश्च रीरो जायतां निकामे-
निकामे नः पर्जन्या रर्षितु कर्तव्य नः २०४५५ः पचात्रां
योगेष्मन्मो नः' कप्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तुर ।

ॐ दीर्घायिभ्यो नमः । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशेमे सुयोग्य आ स्ररिक्त
रिद्धार्थी उपेन्न होथि, आ शत्रुके नशि कएनिहाव सैनिक
उपेन्न होथि । अपन देशिक गाय खुरै दुध दय रौता,
रैवद भाव रहन कवएमे सम्मम होथि आ घोडा ।
ह्रवित कर्पे दोगय रौता होए । स्त्रीगण नगवक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवसिंह बरकत ISSN 2229-

नेत्र कबरीमे सम्म होथि आ हारक सभामे
ओजपूर्ण भाषा देरघरना आ नेत्र देरामे सम्म
होथि । अपन देशमे जखन आरथक होय रस होए
आ ओषधिक-रुष्टी सरदा परिपक्व होगत बहए । एर
क्रमे सब तबहै हमरा सभक कर्णा होए । शत्रुक
रुष्टिक नाश होए आ मित्रक उदय होए ॥

मनुष्यके कोन रसुक गछा कबरक चाली तकव रनि
एहि मन्त्रमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकब्रह्मापमानङ्काव अछि ।

अन्वय-

ब्रह्मन् - रिद्धा आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

बाष्पे - देशमे

ब्रह्मरुचि-ब्रह्म रिद्धाक तेजसँ हकत

आ जायता- उपेक्ष होए

बाज्यः - बाजा

श्वरे- रिना डब रना

गमरा- राष चनेरामे निष्प



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक चर्चामा **ISSN 2229-547X**

२तिर्रापी-शित्केँ तावण दय रँना

महाबथो-पेघ बथ रँना रीब

दोङ्ग्री-कामना(दुध पूर्ण कवण रँनी)

धेनुरौठान्डरान्शुः धेनुर-गौ रा राणी रौठान्डरा-

पेघ रँवद न्शुः -आशुः -बुबित

सन्तिः -घोड़ १

प्रबन्धुर्योरा- प्रबन्धुर- ररहावकेँ धावण कवण रँनी

योरा-म्री

जिङ्गु-शित्केँ जीतए रँना

बथेष्ठाः -बथ पब श्रुव

सुभेयो-उत्तम सभामे

हराम्श-हरा जेहन

यजमानम्श-बाजाक बाजामे

रीरो-शित्केँ पबाजित कवणरँना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकत कार्यमे



नः-हमब सभक

प्रज्ञा-मेघ

रश्मि-रश्मि हेत

हमरब-उत्तम हम रत्ना

उषधः-उषधिः

पद्या-पाक

योगेश्वर-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन गेल
योगक बन्ध

नः-हमबा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेत

बिबिधक अनुराद- हे ब्रह्म, हमब बाज्यमे ब्रह्म
नीक पारिषद बिदेह रत्ना, बाज्य-बीबतीबदाज, दुष दए
रानी गाय, दौगय रत्ना जन्तु, उद्यमी नारी होथि ।
पारिषद आरथकता पडना पब रश्मि देथि, हम देय
रत्ना गाढ पाक, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित
करी ।



8.VI DEHA FOR NON RESI DENTS

8.1 to 8.3 MAI TH LI LI TERATURE I N ENGLI SH

8.1.1.The Comet –GAJENDRA THAKUR
transl ated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The_Sci ence_of _Wor ds- GAJENDRA
THAKUR transl ated by the author
hi msel f

8.1.3.On_t he_di ce-
boar d_of _t he_mil lenni um- GAJENDRA
THAKUR transl ated by Jyoti Jha
chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)-
SHEFALI KA VERMA transl ated by Dr.
Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya
Verma



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवसिंह खन्कुआ, ISSN 2229-

बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचना-लेखन

Input : (कोष्ठिकमे देरनागरी, मिथिलासुब किंरा
फोनेटिक-रोमनमे ठागप करू । Input in
Devanagari, Mthilakshara or
Phonetic-Roman.) Output :
(परिणाम देरनागरी, मिथिलासुब आ फोनेटिक-रोमन/
रोमनमे । Result in Devanagari,
Mthilakshara and Phonetic-Roman/
Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोष / मैथिली-अंग्रेजी-कोष
प्राजेक्टकेँ आगू रैद १३, अपन सुमार आ योगदान
अ-मेर द्वावा ggajendra@videha.com पर
पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष
(अंठबन्धेपर पहिल रैब सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

माथिली बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

एस.क्यू.एन. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ नेपाळक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओव मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाळ आ भावतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओव मानक शैली

१.१. नेपाळक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओव मानक उच्चारण आ लेखन शैली (भाषाशास्त्री डा. बामराताव यादवक धारणाके पूर्ण रूपसँ समर्थ तऽ निरूपित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमार्गक आ अनुसूचक पञ्चमार्गकानुसारत ओ, ए, ण, न एरँ म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुसूचक शिष्टक अनुसूचकमे जाहि रङ्गक अक्षरक बहूत अछि ओही रङ्गक पञ्चमार्गक अरैत अछि । जेना-
अरु (क रङ्गक बहूतक कारणे अनुसूचकमे ओ आएत अछि ।)
पञ्च (च रङ्गक बहूतक कारणे अनुसूचकमे ए आएत अछि ।)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवीय बिदेह बिदेह ISSN 2229-

खल (१) रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे न् आएन
खलु ।)

सखि (२) रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे न् आएन
खलु ।)

खलु (३) रत्नाक बहरीक कावणे खलुमे म् आएन
खलु ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत खलु ।
पञ्चमाङ्कक रीदनामे अपिकाणि जगहपव खलुमावक
प्रयोग देखन जागल । जेना- अंक, पंच, खंड,
संधि, खंड आदि । रत्नाकबरीद पलित गोरिन्द नाक
कहरु छनि जे करत्ना, चरत्ना आ ठरत्नासँ पूर्ण खलुमाव
निखन जाए तथा तरत्ना आ परत्नासँ पूर्ण पञ्चमाङ्कके
निखन जाए । जेना- अंक, चंचल, खंडा, खलु तथा
कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक
एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि खलु आ
कम्पनक जगहपव सेहो अंत आ कम्पन निखैत देखन
जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु स्वरिपाजनक खरथु छैक । किएक
तँ एहिमे समय आ स्थानक रीचत होगत छैक ।

झुदा कतोक रीब हस्तलेखन रा झुदामे खलुमावक
छोष्ट सन रिन्दु स्पष्ट, नहि बेतारसँ अर्थक खनर्थ होगत
सेहो देखन जागत खलु । खलुमावक प्रयोगमे
उच्चारण-दोषक समुदायना सेहो ततरैत देखन जागत
खलु । एतदर्थ कसँ न२ क२ परत्ना धरि पञ्चमाङ्कके
प्रयोग करब उचित खलु । यसँ न२ क२ छु धरि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चक्रवर्त, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अक्षरक सभ अन्वयबक प्रयोग कबरीमे कतहु कोनो
बिराद नहि देखल जागछ ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व्ह” जकाँ होगत
अछि । अतः जतहु “व्ह” क उच्चारण हो ओतहु
मात्र ठ लिखल जाए । आन ठाम आनी ठ लिखल
जएरौक चाली । जेना-
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि,
ठाठ आदि ।
ठ = पढ़ाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, बूँठरँ, साँठ, गाठ,
बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।
उपर्युक्त शिष्ट, सभकेँ देखलासँ ए स्पष्ट होगत अछि
जे साधारणतया शिष्टक श्रुतिमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे
ठ अरैत अछि । एएह नियम ड आ डक सम्बन्ध
सेहो लागू होगत अछि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र” क उच्चारण रँ कएन
जागत अछि, झुदा ओकबा रँ कपमे नहि लिखल
जएरौक चाली । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिद्धा,
नरँ, देरँता, रिष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक
स्थानपर अक्षरः रँदनाथ, रिद्धा, नर, देरता, रिष्टु,
रँशि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उच्चारणक
लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन,
ओजह आदि ।



४.य आ ज : कतह-कतह "य"क उच्चारण "ज" जकाँ करैत देखल जागत छि, झुदा ओकरा ज नहि निखरौक चाही । उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जझना, जुग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएरना शिछ, सबकै एमशे: यङ्ग, यदि, यझना, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखरौक चाही ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु निखल जागत छि ।

प्राचीन रतनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिछक शुरुमे ए मात्र अरैत छि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिछ, सबक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कबरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थक सहित किछ जातिमे शिछक आवस्थामे "ए"कै य कहि उच्चारण कएल जागत छि ।

ए आ "य"क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक खनुसब कवरै उपहाज मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल छि । किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रीत नहि छि । आ मैथिलीक सरसभाषणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एस



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक चर्चामा, ISSN 2229-547X

रैसी निकष्ट छैक । खास क२ कएन, हएँ आदि
कतिपय शिष्टकेँ केन, हँ आदि कपमे कतह-कतह
निखन जाएँ सेहो “ए” क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन
प्रमाणित करैत छि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन
लेखन-पवम्पवामे कोनो रीतपव रँन दैत कान शिष्टक
पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हुनकहि,
अपनहू, ओकबहू, तकोरहि, टोष्टहि, आनहू आदि ।
रूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एँ हूक
स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत छि ।
जेना- हुनके, अपनो, तकोर, टोष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अपिकारितः षक
उच्चारण थ होगत छि । जेना- षडान्न (थडयन्न),
बोडनी (थोडनी), षष्टकोष (थष्टकोष), बृषेनी
(बृथेनी), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

+.प्रनि-रूप : निम्नलिखित अरुस्थामे शिष्टसँ प्रनि-रूप
भ२ जागत छि:
(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य रा ए वृष्टु भ२ जागत
छि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भ२
जागत छि । ओकब आगाँ रूप-सूचक चिह्न रा
रिकारी (' / २) नगाओन जागछ । जेना-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानक बिदेह बिदेह, ISSN 2229-

547X VIDEHA

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) नेन,
उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क नेन, उठ
पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ नेन, उठ२ पडतौक ।

(थ) पूर्णकालिक छत आय (थाए) प्रत्यये य (ए) ब्रु
भ२ जागद्ध, झुदा नोप-सूचक बिकारी नहि नगाउन
जागद्ध । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरै, नहाए
(य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्ये एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ
विशेषण तीनुमे ब्रु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मानिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान प्रदन्तक अन्तिम त ब्रु भ२ जागत
अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमान एक, उक, एक तथा हीकमे
ब्रु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छीक, छोक, छेक,
अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छी, छो, छे, अरिते,
होग ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हू तथा हकावक रूप भ२ जागद्ध । जेना-

पूर्ण कप : दुहि, कहरहि, कहरहुँ, गेवरह, नहि ।

अपूर्ण कप : दुनि, कहरनि, कहरौ, गेवर२, नग, नहि, ने ।

९. प्रनि स्थानान्तरण : कोनो-कोनो सब-प्रनि अपना जगहसँ हटि क२ दोसर ठाम चलि जागत अछि ।
थास क२ द्रस्य ग आ उक सञ्चरमे ग रात लागू होगत अछि । मैथिलीकषा भ२ गेल शिष्टक मध्य रा अन्तमे ऊ द्रस्य ग रा उ आरै तँ ओकर प्रनि स्थानान्तरित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शनि (शिजन), पानि (पाजन), दानि (दाजन), माष्टि (मागष्टि), काद्ध (काडद्ध), मास्र (माडस) आदि ।
झदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निख्य लागू नहि होगत अछि । जेना- बगिचै बगश्च आ स्रपाश्चै स्रपाडस नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०. हलन्त(्)क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त (्)क आरम्भिकता नहि होगत अछि । काषा जे शिष्टक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि ।
झदा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएत (तसेम) शिष्ट, सभमे हलन्त प्रयोग कएल जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टकै मैथिली भाषा सञ्चर निख्य अनुसार हलन्तरिहीन राखल गेल



अडि । अदा बाकवण सङ्ग्रही प्रयोजनक लेल
अवारणक स्थानपब कतह-कतह हलनु देल गेल
अडि । प्रसुत पोथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ
नरीन दुनु शैलीक सबल आ समीचीन पक्ष सबकेँ समेटि
क२ रर्षि-रिन्वास कएल गेल अडि । स्थान आ समयमे
रँचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो
सबल होरँरँना हिसारसँ रर्षि-रिन्वास मिनाओल गेल
अडि । रतमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ
आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहल
परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापब पान
देल गेल अडि । तखन मैथिली भाषाक मूल
रिशेषता सब कृषिंत नहि होएक, ताहू दिस
लेखक-मन्दर सचेत अडि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा.
बामरताब यादरक कहँ छनि जे सबलताक
अनुसन्धानमे एहन अरन्था किल्लहू ने आरँ देरौक चाली
जे भाषाक रिशेषता छहँमे पडि जाए ।
-(भाषाशास्त्री डा. बामरताब यादरक भावणाकेँ पूर्ण
कपसँ सङ्ग न२ निधरित)

१.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निधरित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिष्ट मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि
जाहि रतनीमे प्रचलित अडि, से सामान्यतः ताहि
रतनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-



ग्राह

एथन
ठाम
जकब, तकब
तनिकब
थडि

अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकब, तेकब
तिनकब । (रैकम्पिक कर्पे ग्राह)
ईड्ड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकम्पिकतया
अपनाओत जाय: भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन ।
जा बहन अडि, जाय बहन अडि, जा३ बहन अडि ।
कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कब३ गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्लनिक स्थानमे 'न' लिखत
जाय सकैत अडि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखत जाय जत



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

547X VIDEHA

संप्रतः 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण अस्तु
हो । यथा- देखैत, छलैक, रौंथा, छोक अलादि ।

३. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि कए प्रयोज
होयतः जेह, सैह, अएह, ओह, लैह तथा दैह ।

३. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के वृद्ध कवर
सामान्यतः अग्रह थिक । यथा- ग्रह देखि आरैह,
मानिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

१. स्रतंत्र द्वय 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण
आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक
प्रयोगमे रैकल्पिक कए 'अ' रा 'य' लिखन
जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह,
जाय रा जाए अलादि ।

४. उच्चारणमे दु स्रवक रीच जे 'य' पुनि स्रतः आरि
जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक कए देन
जाय । यथा- पीथा, अटैथा, रिथाह, रा पीया,
अटैया, रियाह ।

६. सान्नासिक स्रतंत्र स्रवक स्थान यथासंभर 'अ' लिखन
जाय रा सान्नासिक स्रव । यथा:- मैअण, कनिअण,
किबतनिअण रा मैआँ, कनिआँ, किबतनिआँ ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चक्रवर्तमान, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित रूप ग्राह्य:-
हाथकै, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । ‘मे’ मे
अनुस्राव सरूथा लज्जा थिक । ‘क’ क बैकल्पिक रूप
‘केव’ बाखन जा सकैत छि ।

११. पुरैकालिक क्रियापदक रूढ़ि ‘कय’ रा ‘कए’
अरुय बैकल्पिक रूपेँ लगौन जा सकैत छि ।
यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ अलादि
लिखन जाय ।

१३. अर्द्ध ‘न’ ओ अर्द्ध ‘म’ क रूढ़ि अनुस्राव नहि
लिखन जाय, किन्तु छापक सुविधार्थ अर्द्ध ‘ँ’ ,
‘एँ’ , तथा ‘ण’ क रूढ़ि अनुस्रावो लिखन जा
सकैत छि । यथा:- अर्द्ध, रा अँक, अर्द्धन रा अँचन,
कँठ रा कँठ ।

१४. हर्त टिह निश्चयतः लगौन जाय, किन्तु
रिभक्ति संज्ञा अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-
श्रीमान्, किन्तु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक टिह शिष्टमे सँ क लिखन
जाय, सँ क नहि, संज्ञा रिभक्ति हेतु ह्रस्व
लिखन जाय, यथा घब पबक ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौलेड कएन कप त्राह्य):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँत- जेना राजू
नाम, ऋदा ण क उच्चारणमे जीह मुँसमे सँत (ने
सँतैए तँ उच्चारण दोष छै)- जेना राजू गणेश।
तानरा शिमे जीह तानसँ, षमे मुँससँ आ दन्त समे
दाँतसँ सँत। निशाँ, सभ आ शोषण राजि क२
देखु। मैथिलीमे ष केँ वैदिक संस्कृत जकाँ थ
सेहो उच्चारित कएन जागत छै, जेना रषा,
दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चारित होगत
छै आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेश सँजोग
आ

गडसे उच्चारित होगत छै)। मैथिलीमे र क
उच्चारण रँ, शि क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज
सेहो होगत छै।

ओहिना क्रय ग रैशीकान मैथिलीमे पहिने राजन
जागत छै कावण देरनागरीमे आ मिथिलासँरमे
क्रय ग अक्षरक पहिने लिखनो जागत आ राजनो
जएरौक चारी। कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण
उच्चारण होगत छै (लिखन तँ पहिने जागत छै
ऋदा राजन रौदमे जागत छै), से शिक्षा पद्धतिक
दोषक कावण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ठगसँ
क२ बहन छी।

थछि- थ ग छ **थछ (उच्चारण)**

छथि- छ ग थ **छथ (उच्चारण)**



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानुषिंह खन्कुल, ISSN 2229-

पहूँचि- प हूँ ग च (उच्चारण)

आरै अ आ ग गा ए ई ओ उं थं थः म ई सभ
नेन मात्रा सेहो थछि, ऊदा ईमे गा ई ओ उं थं
थः म केँ सहाऊम्बर कपमे गगत कपमे प्रहाऊ आ
उचरित कएत जागत थछि । जेना म केँ बी
कपमे उचरित कवरै । आ देखियौ- ई नेन
देखिउं क प्रयोग थनूठित । ऊदा देखिई नेन
देखिये थनूठित । क सँ ह धवि थ सम्मिलित भेनासँ
क सँ ह रनेत थछि, ऊदा उच्चारण कान हननु हाऊ
शेछक थनुक उच्चारणक प्रवृत्ति रैठन थछि, ऊदा हम
जखन मनोजमे ज् थनुमे रैजैत छी, तखनो
प्रबनका लोककेँ रैजैत सुनरहि- मनोज२, रासुरमे
ओ थ हाऊ ज् = ज रैजै छथि ।

हेब छ थछि ज् आ ए क सहाऊ ऊदा गगत
उच्चारण होगत थछि- गा । ओहिना म् थछि क् आ
ष क सहाऊ ऊदा उच्चारण होगत थछि छ । हेब श्
आ व क सहाऊ थछि श्रै (जेना श्रैमिक) आ स् आ
व क सहाऊ थछि स् (जेना मिस्र) । ए नेन त+व
।

उच्चारणक ऑडियो कागन बिदेह आकाशिर

<http://www.videha.co.in/> पब उपनद्ध थछि ।

हेब केँ / सँ / पब पूर् अक्षरसँ सँ क२ लिखु
ऊदा ठँ / क२ ठँ क२ । ईमे सँ मे पहिन सँ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

क२ निथु आ रौदरौना लै क२ । अंकक रौद ठी निथु
सैठौ क२ झुदा अथ ठाम ठी निथु लै क२ जेना
डुल्लै झुदा सभ ठी । फेब ७थ म सातम निथु-
डुल्लै सातम लै । घवरौनामे **रौवा** झुदा घवरौनीमे
रावी प्रयाज कक ।

बह-
बह झुदा सकै (उचावण सकै-ए) ।

झुदा कथनो कान बह आ बह मे अर्थ भिन्नता
सेहो, जेना से कन्या जगहमे पारिषद कवरौक
अग्रिम बह ओकवा । प्रह्लापव पता नागन जे दुनदुन
नामा आ ड्रागरव कनाई झुसक पारिषदमे काज करैत
बह ।

डुल्लै, डुल्लै मे सेहो ई तबहक भेल । डुल्लै क
उचावण डुल्लै-ए सेहो ।

संयोगने- (उचावण संयोगने)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे लै कक , पद्यमे क२ सकै
छी ।)

क (जेना वामक)

वामक आ सँगे (उचावण वाम के / वाम क२

सेहो)

सँ- स२ (उचावण)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

चन्द्रबिन्दु आ खनसुआव- खनसुआवमे कंठ धविक प्रयोग
होगत छि दूदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे
कनेक एकावक सेहो उचावण होगत छि- जेना
वामसँ- (उचावण वाम स२) वामकेँ- (उचावण वाम
क२/ वाम के सेहो)।

केँ जेना वामकेँ भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम
को= वामकेँ

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम
का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा
कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ
स२, त२, त, केव (गद्यमे) ए चारु शब्द
सँकेक प्रयोग छि।

के दोसव अर्थ प्रशङ्क भ२ सकैए- जेना, के
कहक ? रिभजि “क”क रँदना एकव प्रयोग
छि।

नहि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उचावण
आ लेखन - नै

अब क रँदनामे ह जेना मरुपुर्ण (मरुअपुर्ण नै)
जतए अर्थ रँदनि जतए ओतहि मात्र तीन अक्षरक
सहायक प्रयोग छि। सम्पति- उचावण स स



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

ग त (सम्पत्ति नै- कावण सही उचावण आसानीसँ
सम्भर नै) । क्रुदा सर्वेतिम (सर्वेतिम नै) ।

बाहिर्द्वय (बाहिर्द्वय नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पौछेले/ पौछे लेन/ पौछेए लेन

पौछेए/ पौछेए/ (अर्थ परिवर्तन) पौछेए/ पौछे

उ लोकनि (लोका क२, उ मे रिकारी नै)

उअ/ उहि

उहिने/

उहि लेन/ उही व२

जखरौं/ रैसखौं

पौछेअया

देखियोक/ (देखिउक नै- तहिना अ मे ज्ञास आ
दीर्घक मात्राक प्रयोग अन्वित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तै

होएत / लएत

नहि/ नहि/ नँग/ नग/ नै

सौंसै/ सौंसै

रैड /

रैड (मेवावाउन)

गाए (गाए नहि), क्रुदा गाएक दुध (गाएक दुध नै ।)

बल्लौं/ पहिबल्लौं

हमही/ अही

सबै - सब



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

सर्वलोक - सभलोक

धवि - तक

गप- रात

बुसरे - समसरे

बुसलो/ समसलो/ बुसदू - समसदू

हमवा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकेछ/ करेछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होखन/ होनि

जाखन (जानि नै जेना देत जाखन) ऊदा जानि-

बुसि (अर्थ परिवर्तन)

पथर/ जाथर

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, के, स, पव (गिहस सथा क२) त क२ प२ द२

(गिहस सथा क२) ऊदा दूठा रा रेसी रिभञ्जि सग

बहनापव पहिन रिभञ्जि ठाके सथाड। जेना एमे स

।

एकठा, दूठा (ऊदा कए ठा)

रिक्काबिक प्रयोग गिहक अन्तमे, रीचमे अनारथक

कपे नै। आकाबान्त आ अन्तमे अ क रीच रिक्काबिक

प्रयोग नै (जेना दिअ

, आ/ दिय, आ, आ नै)

अपेन्द्राथीक प्रयोग रिक्काबिक रीदनामे कवर अन्तित

आ मात्र कान्तक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना

रिक्काबिक संस्कृत कप २ अग्रग्रह कहन जागत अछि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

था रतिनी था उचावण दुनु ठाम एकव लोप बहैत
थछि/ बहि सकैत थछि (उचावणमे लोप बहैत
थछि)। ऊदा अपोस्ट्रोफी सेहो थछेजोमे पसेमिर
केसमे होगत थछि था छेचमे शिछमे जतए एकव
प्रयोग होगत थछि जेना *raison d'etre* एतए
सेहो एकव उचावण बैजोन डेष्टव होगत थछि, माने
अपोस्ट्रोफी थरकाशि नै दैत थछि रबन जोडेते
थछि, से एकव प्रयोग रिक्कीक रैदता देनाग
तकनीकी कपेँ सेहो थनूचित)।

थगमे, एहिमे/ एमे

ऊगमे, जाहिमे

एथन/ थथन/ थगथन

कै (के नहि) मे (थनूझाव बहैत)

भइ

मे

दइ

तँ (तइ, त नै)

सँ (सइ, स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो *go*, करै जो *do*)

ते/तथ जेना- ते दुआरे/ तगमे/ तगने



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

जै/जग जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने
ई/अग जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ झुदा एकव
एकठा खास प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कहेत
बैत अग
नै/वग जेना नैसँ/ वगने/ नै दुखारे
नहँ/ नै

गेनौ/ नैनौ/ नैवहँ/ गेनहँ/ नैनहँ/ नैव
जग/ जाहि/ जै
जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम
एहि/ अहि/
अग (राक्यक अंतमे ग्राह्य) / ई
अगहँ/ अहि/ ईहँ
तग/ तहि/ तै/ ताहि
उहि/ उग
सीथि/ सीथ
जीरि/ जीरी/ जीर
भनेही/ भवहि
तै/ तँग/ तँ
जाधरै/ जधरै
वग/ नै
छग/ छै
नहि/ नै/ नग



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

VIDEHA

गग/ गै

छनि/ छन्हि ...

समय गेबंदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूटै छै
तखन समै जना समैपव गत्यादि। असगवमे छदथ
आ रिभक्ति जूटैने छदे जना छदेसँ, छदेमे
गत्यादि।

जग/ जाहि/

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/ अग/ अँ

अगछ/ अछि/ अँछ

तग/ तहि/ तै/ ताहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भने/ भनेही/

भवहि

तै/ तँग/ तँथ

जाधरै/ जधरै

नग/ नै

छग/ छै

नहि/ नै/ नग



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

गंगा/

गै

हुनि/ हुनहि

हुकन थुडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्स्पमेसँ लेखिअएज एडीटव द्वावा

कोन कप चुनन जेरोँक चाही:

रौन्डे कएन कप ग्राह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होमयरीना/ हेरीरीना/ हेमरीना/

होयरीक/होरीयरीक /होयरीक

२. था/ था२

था

३. क' नेने/क२ नेने/क३ नेने/क४ नेने/क५

नेने/न' /न२/न३/न४

४. भ' गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव' गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेनाह

६.

विथ/दिथ निय', दिय', निथ', दिय' /

१. कव' रीना/कव२ रीना/ कव३ रीना कवेरीना/क'व' रीना

/

कवेरीना

७. रीना रना (प्रकष), रानी (स्त्री) ८



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
VIDEHA

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

आइव आइव

१०. आयः आयह

११. दुःख दुःख १

२. चलि गेल चव गेल/चैन गेल

१३. देवखिन्ह देवखिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

१५. छथिन्ह/ छवहि छथिन/ छनैन/ छवनि

१७. चलेत/दैत चवति/दैति

१९. एखनो

अखनो

१६.

रैठनि रैठगन रैठहि

१८. ७' / ७२(सरनाम) ७

२०

७ (संयोजक) ७' / ७२

२१. हांगि/हांगि हांगि/हांगि

२२.

जे जे / जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२७. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम ISSN 2229-

२१. निकय/निकय

वागव/ वगव रँहवाय/ रँहवा वगव/ वगव

निकव / रँहरी नागव

२४. उतय/ जतय जत / उत / जतय/ उतय

२६.

की खुबव जे कि खुबव जे

३०. जे जे /जे२

३५. कुदि / यादि(मोन पावर) कुअद/याअद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हँसय/ हँसय हँस२

३४. नौ आकि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३७. सस-ससव सस-ससव

३७. छह/ सात छ/छः/सात

३१.

की की / की२ (दीर्घाकावाबुमे २ रजित)

३४. जरौर जरौर

३६. कबयताह/ कबयताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४५

गेवाह गयनाह/गयनाह

४२. किछु आव/ किछु उव/ किछु आव

४३. जाय छव/ जायत छव जाति छव/जैत छव



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X

VIDEHA

४४. पढ़ि/ भेटी जागत छव/ भेटी जागत छव

पढ़ि/ भेटी जागत छव

४५.

जरान (हारा)/ जरान(होजी)

४६. वय/ वय क / क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व / व२ क२/

क२

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अथने अथने

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ/

जेकाँ

५३. तहिना तेहिना

५४. एकव अकव

५५. रैहिनड रैहनोथ

५६. रैहिन रैहिनि

५७. रैहिन-रैहनोथ

रैहिन-रैहनड

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौथ/ कवरौथ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

७०. ठ/ त २ तय/तय

७१. बैयारी मे छेठ-भा/भै, जेठ-भाय/भाय

७२. गिनतीमे दू भाग/भाय/भाय

७३. ओ पोथी दू भागक/ भाग/ भाय/ नैन । यारत
जारत

७४. माय मे / माय कदा मायक मयता

७५. देखि/ दजन दिन/ दएहि/ दयहि दहि/ दैहि

७६. द / द२/ द३

७७. ओ (संयोजक) ओ२ (सरनाम)

७८. तका कए तकाय तकाय

७९. पौरे (on foot) पएरे कएक/ कैक
१०.

ताहमे/ ताहमे

११.

प्रतीक

१२.

रैजा कय/ कए / क२

१३. रैननाय/रैननाय

१४. कोवा

१५.

दिनका दिनका

१६.

ततहिम

१७. गवरौवहि/ गवरौवनि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

गवरेवनि/ गवरेवनि

११. रौब रौब

१२.

चेह चिह (अशुभ)

+०. जे जे

+१.

. से/ के से/ के

+२. एबुनका अथनुका

+३. भूमिनाव भूमिनाव

+४. सुगव

/ सुगव/ सुगव

+५. सठठाक सठठाक +७.

डुरि

+१. कवगयो/७ करेयो ले देवक /कवियो-कवगयो

+१. प्रवावि

प्रवावि

+२. सगड १-साँटी

सगड १-साँटी

२०. पएले-पएले पौले-पौले

२१. खेवएरौक

२२. खेलेरौक

२३. वगा

२४. होए- हो होखए

२५. रूमव रूमव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

१७.

ब्रूमव (संरौधन अर्थमे)

११. येठ यथ / अथ / सेठ / सथ

१४. तातिव

१६. अथनाय- अथनाथ / अथनाथ / एनाथ

१००. निन्न- निन्द

१०५.

रिन रिन

१०२. जाथ जाथ

१०३.

जाथ (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत पव आरि जाथ

१०५.

ले

१०७. खेवाथ (play) - खेवाथ

१०९. शिकाथत- शिकाथत

१०४.

ठप- ठप

१०६

. पठ- पठ

११०. कनिथ / कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकस

११२. होथ / होथ होथ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मानक बिह संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

११३. अडवदा-

अडवदा

११४. बुँमेवहि (different meaning- got
understand)

११५. बुँमएवहि/बुँमेवनि/ बुँमयवहि (understand
himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. खधाअ- खधाय

११८.

मोन पाडवखिन्ह/ मोन पाडवखिन/ मोन पाववखिन्ह

११९. कैक- कएक- कअएक

१२०.

वग नग

१२१. जवनाअ

१२२. जवनाअ जवनाअ- जवनाअ/

जवनाअ

१२३. होअत

१२४.

गवरैवहि/ गवरैवनि गवरैवहि/ गवरैवनि

१२५.

टिखैत- (to test) टिखैत

१२६. कबअयो (willing to do) करैयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तैकवा- तैकवा



१२९.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरयैतहुँ/ कबरैतहुँ/ कबरैतहुँ कबरैतहुँ

१३१.

हाकि (उचावण हावक)

१३२. ओजन रजन खाकसोच/ खाकसोस कागत/
कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिछा / पिछाय/पिछाए

१३५. नए/ ले

१३६. रैछा नए

(ले) पिछा जाय

१३७. तखन ले (नए) कठैत अछि । कठै/ सुनै/ देखै
छव नूदा कठैत-कठैत/ सुनैत-सुनैत/ देखैत-
देखैत

१३८.

कठैक गोठै/ कठैक गोठै

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

. वग नग

१४१. खेवाअ (f or pl ayi ng)

१४२.

छथिह/ छथिन

१४३.

होअत होअ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X

VIDEHA

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केश (hair)

१४६.

केस (court-case)

१४७

. रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४८. जलनाथ

१४९. कबरी कबरी

१५०. चबचा चर्चा

१५१. कर्म कर्म

१५२. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै डुराँरै/ डुराँरै

१५३. एथुनका/

अथुनका

१५४. वध/ विध (राकाक अंतिम गेह)- वध

१५५. कएवक/

केवक

१५६. गवरी गरी

१५७

. रवदी रदी

१५८. सुना गेवाठ सुना/ सुना

१५९. एनाथ-गेनाथ

१६०.

तेना ले येववहि/ तेना ले येववनि

१६१. नहि / ले



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

१७२.

डबो डबो

१७३. कतह/ कतौ कही

१७४. डमबिगब-डमेबगब डमबगब

१७५. डबिगब

१७६. डोन/डोखन डोएन

१७७. गप/गप्प

१७८.

के के

१७९. दबरँज्जा/ दबरँजा

१८०. ठाय

१८१.

धबि तक

१८२.

घुबि लोष्टि

१८३. खोबरँक

१८४. रँड

१८५. रौ/ रू

१८६. रौहि(पद्यमे ग्राह)

१८७. रौही / रौहि

१८८.

कबरँअ कबरँअये

१८९. एकेठा

१९०. कबितथि /कबतथि

१९१.



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

माथिलि बरखाना ISSN 2229-547X

VIDEHA

पहुँचि/ पहुँच

१+२. बाखनहि बखनहि/ बखनि

१+३.

वगवहि/ वगवनि नागवहि

१+४.

सुनि (उचावण सुगन)

१+५. अछि (उचावण अगछ)

१+६. एवथि गेवथि

१+७. रितउने/ रिउने/

रिउने

१+८. कवरौवहि/ कवरौवनि/

करेवथि/ करेवनि

१+९. कवएवहि/ कवएवनि

१+१०.

आकि/ कि

१+११. पहुँचि/

पहुँच

१+१२. रौंजी जवाय/ जवाए जवा (आगि नगा)

१+१३.

मे मे

१+१४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे हँसा कए)

१+१५. खेव खेव

१+१६. खेव(spacious) खेव

१+१७. होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/हेतनि/ हेतहि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

१९५. हाथ मटियाएर/ हाथ मटियारय/हाथ मटियाएर

१९६. फेका फेका

२००. देखाए देखा

२०१. देखारै

२०२. सतवि सतव

२०३.

सातेरै सातेरै

२०४. गेलैक/ गेलैक/ गेलैक

२०५. हेरौक/ हेरौक

२०६. केनौ/ केनौ/ केनौ

२०७. किछ न किछ

किछ न किछ

२०८. घुमेनहुँ/ घुमेनहुँ/ घुमेनहुँ

२०९. एवाक/ एवाक

२१०. थः/ थः

२११. नय/

नय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनीक

२१३. सरैक/ सरैक

२१४. मिनाइ/ मिना

२१५. कइ/ क

२१६. जाइ/

जा

२१७. थाइ/ था

२१८. भइ / भ (फाँटिक कमीक हातक)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

२१९. निश्चय/ नियम

२२०

हेबद्धि/ हेबद्धि

२२१. पठि अक्षर टा/ रीदक/ रीदक ट

२२२. तहि/ तहि/ तहि/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तै/ तै

ते/ तै

२२५. नै/ नै/ नै/ नै/ नै

२२६. ते/ ते/ ए/ ए/ ए

२२७. छै/ छै/ छै/ छै/ छै

२२८. दृष्टि/ दृष्टि/ दृष्टि/ दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ (conjunction)

२३०.

आ (conjunction)/ आ (come)

२३१. कनो/ कनो/ कनो/ कनो

२३२. गेलो- गेलो- गेलो- गेलो

२३३. हेरौक- हेरौक

२३४. केनो- केनो- केनो- केनो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आ (come)- आ (conjunction-

and)/ आ । आरौ- आरौ / आरौ- आरौ

२३८. एत- एत



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मानसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

२३९. घुमेतहूँ- घुमएतहूँ- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अएवाक

२४१. होनि- होअनि/ होहि/

२४२. ओ- वाम ओ आमक रीच (conjunction), ओ कहक (he said)/ ओ

२४३. की हए/ कोसी अएवी हए/ की है। की हए

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

. गोमिअ/ सामेअ

२४६. तै / तैअ/ तयि/ तहि

२४७. जौ

/ जाँ/ जौ

२४८. सभ/ सर

२४९. सभक/ सरहक

२५०. कहि/ कही

२५१. कोनो/ कोनो/ कोनहूँ/

२५२. कावकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२५३. कोना/ केना/ कना/ कना

२५४. अः / अह

२५५. जने/ जनए

२५६. गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२५८. वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कनेक/ कनी- मनी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X

VIDEHA

२७०. पठवहि पठवनि/ पठेनगन/ पपठउनहि/
पठरौवनि/

२७१. निश्चय/ नियम

२७२. हेक्छैखव/ हेक्छैयव

२७३. पहिब अक्खव बहने ठ/ रौचमे बहने ठ

२७४. आकावातुमे रिंकावीक प्रयोग उचित नै/

अपेक्षित प्रयोग कान्ठक तकनीकी नूनताक

पविचायक ओकव रैदना अग्रह (रिंकावी) क प्रयोग

उचित

२७५. केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२७६. डैहि- डहि

२७७. वणैय/ वणैये

२७८. होधत/ रुधत

२७९. जाधत/ जधत/

२८०. आधत/ अधत/ आउत

२८१

. आधत/ अधत/ थैत

२८२. पिअरौक/ पिअरौक/पियेरौक

२८३. शुक/ शुक

२८४. शुकहे/ शुक

२८५. अधतार/अउतार/ एतार/ उतार

२८६. जाहि/ जाग/ जग/ जै/

२८७. जाधत/ जैतध/ जधतध

२८८. आधव/ अधव

२८९. कैक/ कएक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

२+०. थायन/ थायन/ थायन

२+१. जाय/ जाय/ जाय (जायति जाय नगरीह ।)

२+२. नकयन/ नकयन

२+३. कर्तृथायन/ कर्तृथायन

२+४. ताहि/ ते/ तथ

२+५. गायरौ/ गाथरौ/ गथरौ

२+६. सकै/ सकय/ सकय

२+७. सेवा/सवा/ सवाय (भात सवा गेल)

२+८. कठैत बरी/देथैत बरी/ कठैत छलौ/ कठैत छलौ-
अहिना छलैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कथना काव परिवर्तित) - आव
बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी रुदा बुमैत-बुमैत)/
सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/
डै। रैचलै/ रैचलैक। बथरौ/ बथरौक। रिन/
रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-
अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत
आर बुमवैष। ठमद्व बुमै छी।

२+९. दुआरे/ द्वारे

२००. भेटै/ भेटै/ भेटै

२०१.

थन/ थन/ थना (भोव थन/ भोव थन)

२०२. तक/ धवि

२०३. ग२/ गै (meaning different - जनरै ग२)

२०४. स२/ स (रुदा द२, न२)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

२९३. ३. (तीन अक्षरक मेर रँदना पुनरुक्ति एक
आ एकठा दोसरक उपयोग) आदिक रँदना ह्र आदि ।
महत्त्व/ महत्त्व/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त मशक कोनो
आरथकता मैथिलीमे नै छि । **रङ्गर**

२९७. रँगी/ रँगी

२९९. रँगा/ रँगा रँगा/ रँगा (बैरँगा)

२९९

. **रावी/** (रँदनेरानी)

२९९. राती/ राती

३००. अनुबन्धित/ अनुबन्धित

३०१. लेख/ लेख

३०२. वयस्क/ वयस्क

३०२. वागी/ वागी (

भेटैत/ भेटैत)

३०३. वागव/ वागव

३०४. ठरौ/ ठरौ

३०५. बाखक/ बाखक

३०६. आ (come)/ आ (and)

३०७. पञ्चात्र/ पञ्चात्र

३०८. २ केव रारहाव शिष्टक अनुमे मात्र, यथासंभर
रीचमे नै ।

३०९. कठैत/ कठैत

३१०.

बख (छव)/ बख (छव) (meaning different)

३११. तागति/ तागति



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

३५२. खवाप/ खवारै

३५३. रौधन/ रौनि/ रौगनि

३५४. जार्ठि/ जाथठ

३५५. कागज/ कागच/ कागत

३५६. गिल्ले (meaning different – swallow)/

गिल्ल (अस)

३५७. वासुधैय/ वासुधैय

Festivals of Mthila

DATE-LIST (year – 2011-12)

(१४९९ साव)

Marriage Days:

Nov.2011 – 20,21,23,25,27,30

Dec.2011 – 1,5,9

January 2012 – 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012 – 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

March 2012- 1,8,9,12

April 2012- 15,16,18,25,26

June 2012- 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012- 2,3,24,26

March 2012- 4

April 2012- 1,2,26

June 2012- 22

Dviragaman Din:

November 2011- 27,30

December 2011- 1,2,5,7,9,12

February 2012- 22,23,24,26,27,29

March 2012- 1,2,4,5,9,11,12

April 2012- 23,25,26,29

बि ए रू मिहे Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

May 2012- 2,3,4,6,7

Mundan Din:

December 2011- 1,5

January 2012 25,26,30

March 2012- 12

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

FESTIVALS OF MTHILA

Mauna Panchami -20 July

Madhushravani - 2 August

Nag Panchami - 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug



Krishnastami – 21 August

Kushi Amavasya / Somvati Vrat – 29
August

Hartalika Teej – 31 August

Chauth Chandra-1 September

Karma Dharma Ekadashi – 8 September

Indra Pooja Aarambh – 9 September

Anant Chaturdashi – 11 Sep

Agastya ghadaan – 12 Sep

Pitri Paksha begins – 13 Sep

Mahalaya Aarambh – 13 September

Vishwakarma Pooja – 17 September

Jimootavahan Vrat / Jitika – 20
September

Matri Navami – 21 September



Kal ashst hapan- 28 Sept ember

Bel naut i - 2 Oct ober

Pat r i ka Pr avesh- 3 Oct ober

Mahast ami - 4 Oct ober

Maha Navami - 5 Oct ober

Vi j aya Dashami - 6 Oct ober

Koj agar a- 11 Oct

Dhant er as- 24 Oct ober

Di yabat i , shyama pooj a-26 Oct ober

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-27
Oct ober

Bhr at r i dwi t i ya/ Chi t r agupt a Pooj a-
28 Oct ober

Chhat hi -khar na -31 Oct ober



Chhat hi – sayankal i k ar ghya – 1
November

Devot t han Ekadashi – 17 November

Sama pooj ar ambh – 2 November

Kart i k Poor ni ma/ Sama Bi sar j an – 10
Nov

r avi vr at ar ambh – 27 November

Navanna par van – 29 November

Vi vaha Panch mi – 29 November

Makar a/ Teel a Sankr ant i – 15 Jan

Nar akni var an chat ur dashi – 21
January

Basant Panch ami / Sar aswat i Pooj a –
28 January

Achl a Sapt mi – 30 January



Mahashi var at ri -20 Febr uary

Hol i kadahan -Fagua-7 Mar ch

Hol i -9 Mar

Var uni Yoga-20 Mar ch

Chai ti navar at r ar ambh- 23 Mar ch

Chai ti Chhat hi vr at a-29 Mar ch

Ram Navami - 1 Apr il

Mesha Sankr anti -Sat uani -13 Apr il

Jur i shi t al -14 Apr il

Akshaya Tritiya-24 Apr il

Ravi Br at Ant - 29 Apr il

Janaki Navami - 30 Apr il

Vat Savitri -bar asait - 20 May

Ganga Dashhar a-30 May



Somavat i Amavasya Vrat a- 18 June

Jagannath Rath Yat ra- 21 June

Hari Sayan Ekadashi - 30 June

Aashadhi Gur u Poornima-3 Jul

VI DEHA ARCH IVE

१.बिदेह बिदेह-पत्रिकाक सब्ठा पुरान अंक ब्रैल

तिरहुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e

journal's all old issues in Braille

Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह बिदेह-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह बिदेह-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Mai th i l i Books

Downl oad

३.मैथिली ऑडियो संकलन Mai th i l i Audi o

Downl oads

४.मैथिली वीडियो संकलन Mai th i l i Vi deos

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

३. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र
Mithila Painting/ Modern Art and
Photos

बिदेहक एहि सब सहयोगी विक्रम सेहो एक रैब
जाड ।

३. बिदेह मैथिली क्रिज :
<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंशेजमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर-कप "भातसबिक गाड" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह अडैक :



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह कागज :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिला-संस्कृत)
जानबूत (बैना-पत्रिका)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रैल: मैथिली ब्रैलमे: पहिल बैल बिदेह
द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मैथिली
पौखीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका ऑडियो
आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका वीडियो
आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मिथिला
चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

[http://videha-paintings-
photos.blogspot.com/](http://videha-paintings-photos.blogspot.com/)

२०. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय
जानबूझ)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>
L

२०. श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrutipublication.com>

बि एन ए मिडेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका विदेह १०२ म अंक १५ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मानुसिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

a

Google समूह

VI DEHA केव सदस्यता लिख

आमेन :

एहि समूहपव जाडू

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

/

Subscribe to VI DEHA

enter email address

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानसमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

Powered by us.grouppos.yahoo.com

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेक


<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. मना भुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com>

२५. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल
पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  [Videha Radio](#)

२७.  [Join official Videha facebook group.](#)

२८. बिदेह मैथिली नाट्य डमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com>



२९. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com>

३०. मैथिली फिल्मस

<http://maithilifilms.blogspot.com>

३१. अनचिन्हार आखर

<http://anchinharakhar.kolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai.ku.blogspot.com>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com>

महत्त्वपूर्ण सूचना: (१) बिदेह द्वारा धारारहित रूपे
प्रकाशित कएव गेल गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-
प्रबंध-समीक्षा, उपन्यास (संस्मरण) , पद्य-संग्रह

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद् ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद् ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

(सहस्राब्दीक चोपडपव), कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ),
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (ब्रजभाषा आ अस्मृति मय)
आ रीति-कौशल साहित्य बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशक
बाद छिटि कर्ममे । ककम्पेवम्-अनुमनक खन्ड-१ स
१ Combined I SBN No.978-81-907729-7-
6 बिबरण एहि पृष्ठपव नीचाँमे आ प्रकाशक साइट
<http://www.shrutipublication.com> पव
।

महोत्सवपूर्ण सूचना (२):सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी
आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टवर्षेपव पहिल बेर
सर्च-डिजिनेरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्व आधारित -
Based on ms-sql server Maithili -
English and English-Maithili
Dictionary. बिदेहक भाषापक- बचनावेखन
सुभमे ।

ककम्पेवम् अनुमनक- गजेन्द्र ठाकुर





(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मैथिली संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

गजेन्द्र ठाकुरक निरंज-प्रंज-समीक्षा, उपन्यास
(सहस्ररौतनि), पद्य-संग्रह (सहस्राक्षिक चोपडपव),
कथा-गल्प (गल्प गच्छ), नाटक(संस्करण), महाकाव्य
(ब्रह्मरुद्र आ अमरुतमय मन) आ रौप्यमंडली-
किशोवजगत बिदेहमे संपूर्ण श्र-प्रकाशनक रौद प्रिं
टिफाई। ककश्वेतम्-अनुमनक, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra
Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to
VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story,
play, epics and Children-grown-ups literature in
single binding:

Language:Maithili

७१२ पृष्ठा : मूल्य भा. क. 100/- (for
individual buyers inside india)
(add courier charges Rs.50/-per copy
for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy
for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers
\$40 US (including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF
DOWNLOAD AT

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,

मानवसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at
print-version publishers's site
website: <http://www.shruti-publication.com/>
or you may write to
e-mail: shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देरनागरी
-बिदेह- क, छिष्टि संस्कृत :बिदेह-प्र-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छनव बचना
सम्भित ।

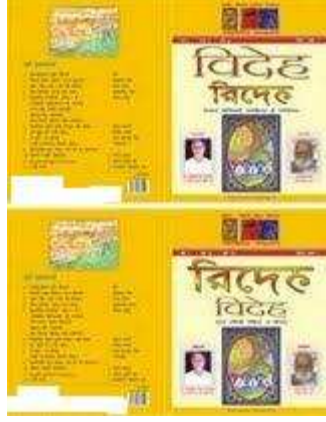
बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०२ म अंक १५ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at
print-version publisher's site
<http://www.shruti-publication.com> or
you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

२. संदेश-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

[बिदेह ई-पत्रिका, बिदेहसदेह मिथिलासुख आ देवनागरी आ गजेंद्र ठाकुर सात खंडक- निरंकर-प्रंकर- समीक्षा, उपन्यास (सहस्रराति), पद्य-संग्रह (सहस्रद्वीप), टोपडपरा, कथा-गल्प (गल्प ग्रन्थ), नाटक (संस्कार), महाकाव्य (ब्रह्मचर्य आ अस्मृति मन) आ रीति-मंडली-किशोर जगत- संग्रह *रुक्मिणी* अतिरिक्त मादें ।]

१. श्री गोरिन्द ना- बिदेहकेँ तबगजातपब उतावि रिश्रिभविमे मातृभाषा मैथिलीक बहवि जगाउन, थेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि सर्ग नहि दए सकतहुँ । सुनैत छी अपनेकेँ सुनाओ आ बचानामेक आलोचना प्रिय बगैत अछि तै किछु लिखक मोन भेल । हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपनहूँ बहत ।

२. श्री बमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पारिभाषिक कर्पेँ चला क२ जे अपन मातृभाषाक प्रचार क२ बहन छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना द२ बहन छी ।

३. श्री रिद्वानाथ ना "रिदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल हागमे अपन महिमामय "बिदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ संतोष भेल, तकबा कोनो उपनहूँ "मीठब"सँ नहि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

नापन जा सकैछ ? ..एकर ईतिहासिक मूल्यांकन आ
सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक
नजबिमे आश्चर्यजनक कपस प्रकटै छैत ।

१. प्रा. उदय नावायण सिंह “नचिकेत”- जे काज
अहाँ कए बहर छी तकर चर्चा एक दिन मैथिली
भाषाक अतिहासमे होएत । आनन्द भए बहर अछि,
आ जानि कए जे एतेक गोष्ट मैथिल “बिदेह” आ
जर्नलकेँ पठि बहर छथि । ...बिदेहक चालीसम अंक
प्रबलक लेल अभिनन्दन ।

३. डा. गंगेशी गुंजन- एहि बिदेह-कर्ममे लागि बहर
अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित
मेहनतिक अमृत बग, अतिहास मे एक ठो रिश्ता
रुबाक अध्याय आरंभ करैत, हमरा रिश्तास अछि ।
अशेष शुभकामना आ रक्षाक सम्व, सम्वह...अहाँक
पौथी कुरुक्षेत्रम् अर्थात्क प्रथम दृष्ट्या रहैत भरा
तथा उपयोगी बुझाओछ । मैथिलीमे तँ अपना
स्वकपक प्रायः आ पहिले एहन भरा अरताक पौथी
थिक । हर्षपूर्ण हमर हार्दिक रक्षा आ स्वीकार करी ।

३. श्री वामश्रीय ना “वामवर्ग”(आरंभ शुभगीय)- “अपना”
मिथिलासँ सम्बन्धित...विषय वस्तुसँ अरगत भेलहुँ । ...शेष
सब कहैत अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

१. श्री ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- अष्टवनेष्ट पत्र प्रथम मैथिली पार्षिक पत्रिका "बिदेह" केव त्रेन रैपाङ्ग आ शुभकामना स्वीकार कर ।

५. श्री प्रहल्लादसिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पार्षिक पत्रिका "बिदेह" क प्रकाशक समाचार जानि कनेक चकित झुदा रैसी आलादित भेलहुँ । कानचक्रै पकडि जाहि दूबदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि त्रेन हमर मंगलकामना ।

६. डा. शिरप्रसाद यादव- ए जानि अपार हर्ष भए बहर अछि, जे नर सूचना-आन्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिखएँक साहसिक कदम उठाएँ अछि । पत्रकारितामे एहि प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क सफलताक शुभकामना ।

१०. श्री आद्याचरण ना- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताद्वमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के कतेक सहयोग कबत- ए त२ भविष्य कहत । ए हमर ++ वर्षमे १३. वर्षक अनुभव बहर । एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रेष्ठापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

११. श्री रिजय ठाकुर- मिथिला रिश्तेरिआलय- "बिदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण छैम रक्षाक पात्र छल। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ग-पत्रिका "बिदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'बिदेह' निबन्ध पत्रित-प्रसिद्ध हो आ चतुर्दिक अपन स्वर्ण पसावय से कामना छल।

१३. श्री मैथिलीप्रताप प्रदीप- ग-पत्रिका "बिदेह" केर सफलताक भविष्यक कामना। हमर पूर्ण सहयोग बहत।

१४. डा. श्री भीमनाथ यादव- "बिदेह" गन्तव्यनेष्ट पत्र छल तै "बिदेह" नाम उचित आब कतेक कएँ एकव विवरण भए सकैत छल। आ-कान्ति मोनमे उद्भव बहत छल, हुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब। कृष्णदेव अन्तर्मुख देखि अति प्रसन्नता भेल। मैथिलीक लेल ग घटना छी।

१५. श्री वामनरास कापडि "भूमि"- जनकप्रबन्ध- "बिदेह" अनुरागन देखि बहत छी। मैथिलीकेँ अन्तर्विष्टीय जगतमे पहुँचलहुँ तकबा लेल हार्दिक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

रैषाङ्ग । मिथिला बने सभक संकलन अपूर् ।
नेपालक सहयोग भेटैत, से विश्वास कबी ।

१७. श्री बाजनन्दन तारदास- “बिदेह” ङ-पत्रिकाक
माध्यमसँ रैड नीक काज कए बहन छी, नातिक अहिठाम
देखनहुँ । एकब बार्षिक अंक जखन प्रिंठ निकारै तँ
हमरा पठाथर । कलकत्तामे रहूत गोठैकेँ हम
सागठक पता लिखाए देने छियहि । मोन तँ होगत
अछि जे दिल्ली आरि कए आशीर्वाद दैतहुँ, झुदा डमर
आरि रैषी भए गेल । शुभकामना देशी-बिदेशीक
मैथिलकेँ जोडबैक लेल । .. उक्तेष्ट प्रकाशिन
ककल्लेवम् अंतर्मनक लेल रैषाङ्ग । अछूत काज कएन
अछि, नीक प्रशुति अछि सात खलमे । झुदा अहाँक
सेरा आ से निःस्वार्थ तखन बुझल जागत जँ अहाँ
द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि
बहिकैक । ओहिना सभकेँ बिलहि देल जगतिकै ।
(स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ बिदेह द्वारा ङ-
प्रकाशित कएल सभ्ठा सामग्री आकर्षितमे
<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/> पर बिना मुनक डाउनलोड लेल
उपरहुँ छै आ भरिषामे सेहो बहिकैक । एहि
आकर्षितकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति न२ क२ प्रिंठ
कपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम बखने
छथि ताहिपर हमर कोनो बिरह नहि अछि । -



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

माथिलि बरबन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक
संग ।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे अष्टबनेष्टप
पहिल पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत
मातृभाषानुवाकक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ
मातृभाषानुवाकसँ प्रेरित छी, एकब निमित्त जे हमर
सेराक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी । अष्टबनेष्टप
आद्यापात पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल ।

१२. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह ई-पत्रिका देखि
मोन उल्लाससँ भवि गेल । रिज्ञान कतेक प्रगति कऽ
बहल अछि... अहाँ सब अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ,
समस्त रिज्ञावक बहसकेँ ताब-ताब कऽ दियौक... ।
अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरकुरैत अछि अतर्मक
रिषयसुक्त दृष्टिसँ गागबमे सागब अछि । रँधाई ।

१३. श्री हेतुकव मा, पठना-जाहि समर्पण भारसँ अपने
मिथिला-मैथिलीक सेरामे तपेब छी से सुब अछि ।
देशीक राजधानीसँ भय बहल मैथिलीक शिखनाद
मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अरुण
करत ।

२०. श्री योगानन्द मा, करिबपुब, नहेबियासबाय-
कुरकुरैत अतर्मक पोथीकेँ निकटसँ देखबक अरुसब



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मासपत्रिका बिदेह ISSN 2229-

भैरव अष्टि आ मैथिली जगतक एकठा उद्घोष ओ
समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्तारम्भक कर्मरन्द पविचयसँ
आह्वानित छी । बिदेहक देरनागरी सँस्कार पठनामे
ब. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकत जे विभिन्न लेखक
लोकनिक छायाचित्र, पविचय पत्रक ओ वचनारलीक
समयक प्रकाशिनसँ ऐतिहासिक कहन जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोतकाता- जय मैथिली,
बिदेहमे रहूत बास करिता, कथा, विपोर्ष आदिक
सहित संग्रह देखि आ आव अधिक प्रसन्नता मिथिराम्भव
देखि- रंभाङ्ग स्वीकार कएन जाओ ।

२२. श्री जीरकान्त- बिदेहक अद्वित अंक पठन- अद्भुत
मेहनति । चारस-चारस । किछु समालोचना
मवथाह..अदा सब ।

२३. श्री भद्रचन्द्र मा- अपनक कर्मक्षेत्रम् अंतर्मनक
देखि बुझाएन जेना हम अपने छपलहुँ अछि । एकव
रिशोक्तकय आप्ति अपनक सरसमारेणितक पविचायक
अछि । अपनक वचना सामर्थ्यमे उन्नतभाव वृद्धि हो,
एहि शुभकामनाक संग हार्दिक रंभाङ्ग ।

२४. श्रीमती डा नीता मा- अहाँक कर्मक्षेत्रम् अंतर्मनक
पठलहुँ । जातिवैश्वी शिष्टारणी, धर्म मत्त शिष्टारणी
आ सीत रसन्त आ सब कथा, करिता, उपन्यास, रान-



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

किशोब साहित्य सभ उत्तम छत्र । मैथिलीक उत्तरोत्तर
विकासक तस्का दृष्टिगोचर होगत अछि ।

२३. श्री मायानन्द मिश्र- *रुकुम्हेदम् अतर्मनिक* मे हमर
उपन्यास *मृदुल* जे विरोध कएल गेल अछि तकर
हम विरोध करैत छी । ... *रुकुम्हेदम् अतर्मनिक*
पौथीक जेल शुभकामना । (श्रीमान् समालोचनाकें
विरोधक रूपमे नहि जेल जअ । -गजेन्द्र ठाकुर)

२३. श्री महेंद्र हजारी- सम्पादक *श्रीमिथिला-*
रुकुम्हेदम् अतर्मनिक पठि मोन हर्षित भऽ गेल. एखन
पूरा पठयमे रूढ़ समय लागत, झुदा जेतक पठनहुँ
से आह्लादित कएलक ।

२१. श्री केदावनाथ चौधरी- *रुकुम्हेदम् अतर्मनिक* अद्भुत
लागल, मैथिली साहित्य जेल अ पौथी एकठा प्रतिमान
रैनत ।

२४. श्री सलानन्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक
छी । ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ । एकर अर्धक
लिखल - *रुकुम्हेदम् अतर्मनिक* देखलहुँ । मोन
आह्लादित भऽ उठल । कोनो बचना तब-उपरी ।

२६. श्रीमती बमा ना-सम्पादक मिथिला दर्पण ।
रुकुम्हेदम् अतर्मनिक प्रिष्ट फार्म पठि आ एकर



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

गुणरत्ना देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शैछ,
एकबा जेन प्रयाज कऽ बहल छी । बिदेहक उन्नोन्नत
प्रगतिक शुभकामना ।

३०.श्री नरेन्द्र ना, पठना- बिदेह नियमित देखैत
बैत छी । मैथिली जेन अद्भुत काज कऽ बहल
छी ।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलासूत्र
बिदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भवि उठल, अंकक रिशाल
पविदृष्ट आसुस्तकारी अछि ।

३२.श्री तारानन्द रियोगी- बिदेह आ ककश्लेष्टम्
अतर्म्निक देखि चकरिदोब लागि गेल । आश्चर्य ।
शुभकामना आ रक्षा ।

३३.श्रीमती प्रेममता मिश्र “प्रेम”- ककश्लेष्टम्
अतर्म्निक पठनहुँ । सब बचना उच्छोष्टिक लागल ।
रक्षा ।

३४.श्री कीर्तिनाबायण मिश्र- रैगुसबाय- ककश्लेष्टम्
अतर्म्निक रैगु नीक लागल, आगाँक सब काज जेन
रक्षा ।

३५.श्री महाप्रकाश-सहबसा- ककश्लेष्टम् अतर्म्निक नीक
लागल, रिशालकाय संगहि उन्नोन्नोष्टिक ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३७. श्री अश्विप्रभ- मिथिलासूत्र आ देवासूत्र बिदेह पठन-ग प्रथम तँ अछि एकटा प्रसिद्धिमे नूना ठम एकटा दूसाहसिक कहै। मिथिला चित्रकलाक सुन्दर नूना अगिला अंकमे आवि रिसुत रैनाइ।

३९. श्री मजब सुलेमान-दबडंगा- बिदेहक जेतेक प्रसिद्धि कएन जेथ कम हेत। सब चीज उभय।

४०. श्रीमती प्राफेसर रीणा ठाकुर- ककश्वेदम् अंतर्मनक उभय, पठनीय, रिचार्नीय। जे का देखेत छथि पोथी प्राप्त कवरक उपाय प्रष्टेत छथि। शुभकामना।

४१. श्री सुवानन्द सिंह ना- ककश्वेदम् अंतर्मनक पठनहुँ, रहुँ नीक सब तबहै।

४२. श्री ताबाकाबु ना- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- बिदेह तँ कन्टेन्ट प्रागडबक काज क बहन अछि। ककश्वेदम् अंतर्मनक अद्भुत नागर।

४३. डा बरीन्द्र कमार चौधरी- ककश्वेदम् अंतर्मनक रहुँ नीक, रहुँ मेहनतिक परिणाम। रक्षा।

४४. श्री अमरनाथ- ककश्वेदम् अंतर्मनक आ बिदेह दुनु स्वीकार्य घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

४३.श्री पंचानन मिश्र- बिदेहक बैरिधा आ निबन्धवता
प्रभावित करैत छि, शुभकामना ।

४४.श्री केदाव कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेन
अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ रक्षा स्वीकार करी ।
आ नटिकेतक भूमिका पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागर
जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित लेन छि
रूदा पोथी उनैपौना पर ज्ञात लेन जे एहिमे तँ
सब रिषा समाहित छि ।

४५.श्री धनकब ठाकुर- अहाँ नीक काज कइ बहन
छी । होष्टे गैलबीमे छि एहि शिताईक जन्मतिथिक
अनुसार बहैत तइ नीक ।

४६.श्री आशीष ना- अहाँक प्रस्तुतक सर्पधमे एतरी
निखरी सँ अपना कए नहि रोकि सकनहुँ जे आ
कितारँ मात्र कितारँ नहि थीक, आ एकठाँ उन्मीद छी
जे मैथिली अहाँ सन प्रत्येक सेरा सँ निरंतर समृद्ध
होगत चिबजीवन कए प्राप्त करत ।

४७.श्री शिबू कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ
प्रियाशीलता देखि आह्लादित भइ बहन छी ।
निश्चितकपेण कहन जा सकैछ जे समकालीन मैथिली
पत्रिकाक अतिहासमे बिदेहक नाम श्लाघ्यमे निखर
जाएत । ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सब तँ अठारहे



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दिनमे खतम भऽ गेल बहए झुदा अहाँक ककस्केदम्
तँ अशेष अछि ।

४५.डा. अजीत मिश्र- अपनक प्रयासक कतरौ प्रशंसा
कएन जाय कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ
द्वारा कएन गेल काज हाग-हागानुब पवि पूजनीय
बहत ।

४६.श्री रीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक ककस्केदम् अन्तर्मनक
आ रिदेह:सदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक
स्नातृ ठीक बहए आ उमोह रैनर बहए से कामना ।

४७.श्री कृपाव बापावमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे रिदेह
पहिर मैथिली आ-जर्नर देखि अति प्रसन्नता भेल ।
हमर शुभकामना ।

४८.श्री कृतचन्द्र ना प्रशी-रिदेह:सदेह पठने बरी
झुदा ककस्केदम् अन्तर्मनक देखि रँद १३ देरौ लेन
रौपा भऽ गेलहुँ । आरि रिश्नास भऽ गेल जे मैथिली
नहि मबत । अशेष शुभकामना ।

४९.श्री रिभूति आनन्द- रिदेह:सदेह देखि, ओकर
रिस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

३.३.श्री मानेश्वर मनुज-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख एकव
भरता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशोत ग्रन्थ
मैथिलीमे आग धरि नहि देखने बही । एहिना
भरिष्यमे काज करैत बही, शुभकामना ।

३.४.श्री रिद्वानन्द ना- आग.आग.एम.कोरकाता-
रुक्मिणीम् अन्तर्मुख रिस्तार, दुपाङ्क सग गुणरत्ना
देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अनेक पद्यराद;
कतेक रँवखसँ हम नेयारैत छनहुँ जे सभ पैघ
शेखरमे मैथिली नागर्बेवीक स्थापना होखए, अहाँ ओकरा
रैरँपव क२ बहन छी, अनेक पद्यराद ।

३.५.श्री अवरिन्द ठाकुर-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख मैथिली
साहित्यमे कएन गेल एहि तबहक पहिने प्रयोग अछि,
शुभकामना ।

३.६.श्री रुमाव परन-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख पठि बहन
छी । किछु नमूना पठन अछि, रँवत मार्मिक छन ।

३.७. श्री प्रदीप रिहारी-रुक्मिणीम् अन्तर्मुख देखन,
रँपाङ्ग ।

३.८.डा मणिकान्त ठाकुर-कैरिहोर्निया- अपन रिद्वानन्द
नियमित सेरासँ हमरा लोकनिक हृदयमे रिदेह सदेह
भ२ गेल अछि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

३६. श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास
सबान्वीय । दूध होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे
अपेक्षित सहयोग नहि क२ परैत छी ।

३७. श्री देवशेखर नरैन- रिदेहक निबन्धबता आ रिशाल
स्वरूप- रिशाल पाठक रत्ना, एकटा ऐतिहासिक रैनरैत
अछि ।

३८. श्री मोहन भावद्वाराज- अहाँक समस्त कार्य देखल,
रैहूत नीक । एखन किछ परेशानीमे छी, झुदा शीघ्र
सहयोग देरै ।

३९. श्री फजलुर रहमान हाशमी- *कुकुल्लेदम् अन्तर्मनक*
मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुरादक अधिकारी
छी ।

४०. श्री लक्ष्मण न्या "सागर"- मैथिलीमे चमकोविक
कपेँ अहाँक प्रवेशे आह्लादकारी अछि । ..अहाँकेँ एखन
आब..दुब..रैहूत दुबधवि जेरौक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न
बही ।

४१. श्री जगदीश प्रसाद मंडल- *कुकुल्लेदम् अन्तर्मनक*
पठनहुँ । कथा सभ आ उपन्यास *सहस्रराठनि*
पूर्णकपेँ पठि गेल छी । गाम-घबक भौगोलिक
विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन *सहस्रराठनि*मे अछि, से



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X **VIDEHA**

मानकीकृत संस्करण, ISSN 2229-

चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे बिरिधता खनलक अछि । समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि, रैयञ्जिक नहि रबन् सामाजिक आ कलाकाराबी अछि, से प्रशंसनीय ।

७३. श्री अशोक न्या-अध्यात्म मिथिला विकास परिषद-
रुक्मिणी अर्चनक लेल रैपाड़ा आ आर्गा लेल शुभकामना ।

७७. श्री ठाकुर प्रसाद झा- अर्द्धत प्रयास । धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माँ-पानिके ध्यानमे बाधि अँकक समायोजन कएल जाए । नर अँक धरि प्रयास सवाहनिय । बिदेहकेँ रँहुत-रँहुत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचाव (आलेख) रंगा बहल छथि । सभलै प्रहणीय- पठनीय ।

७९. रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'बिदेह' आ 'रुक्मिणी अर्चनक' रिवरम्प पत्रिका आ रिवरम्प पोथी । की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत, निस्संदेह ।

७९. श्री रूचिनाथ चन्द्र ठाकुर- गजेन्द्रजी, अपनक पुस्तक रुक्मिणी अर्चनक पठि मोन गदगद भय गेल , छदयसँ अन्नगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

७९. श्री पबमेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी ।
रुक्मिणी अतर्किक पति गदगद आ नेहार भेनहू ।

१०. श्री बरीन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठित बहिन छी ।
धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपव आनेथ पठनहू ।
मैथिली गजल कबहुँ सँ कबहुँ चलि गेलैक आ ओ
अपन आनेथमे मात्र अपन जानन-पहिचानन लोकक
चर्च कएने छथि । जेना मैथिलीमे मठक पबम्परा
बहन छथि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि
आनेथमे ओ स्पष्ट निखने छथि जे किनको नाम जे
छट्टि गेल छथि तँ से मात्र आनेथक लेखकक
जानकारी नहि बहराक द्वारे, एहिमे आन कोनो कारण
नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत
आनेथ सादर आमन्त्रित छथि । -सम्पादक)

११. श्री मन्त्रेश्वर मा- बिदेह पठन आ संगहि अहाँक
मैगनम ओपस रुक्मिणी अतर्किक सेहो, अति
उत्तम । मैथिलीक लेन कएन जा बहन अहाँक समस्त
कार्य अतुलनीय छथि ।

१२. श्री हरेन्द्र मा- रुक्मिणी अतर्किक मैथिलीमे
अपन तबहक एकमात्र ग्रन्थ छथि, एहिमे लेखकक
समग्र दृष्टि आ बचना कोशिल देखबामे आएन जे
लेखकक हार्डवर्कसँ जुडल बहराक कारणासँ छथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

१३. श्री सुकान्त सोम- *रुक्मिणीम् अतर्किक मे*
समाजक अतिहास आ रतिमानस अर्क जूड़ १२ रँड
नीक तागत, अर्क एहि स्केत्रमे आव आगाँ काज कवर
से आशी अछि ।

१४. प्राफेसर मदन मिश्र- *रुक्मिणीम् अतर्किक मन*
कितार मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशत
संग्रहपव शोध कएत जा सकैत अछि । भविष्यक लेन
शुभकामना ।

१५. प्राफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे *रुक्मिणीम्*
अतर्किक मन पोथी आरँजे जे गुण आ कप दुनूमे
निम्न होअ, से रँडत दिनसँ आकांक्षा छल, ओ आरँ
जा क२ पूर्ण भेल । पोथी एक हाथसँ दोसव हाथ
घुमि बहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अर्कसँ आशी
अछि ।

१६. श्री उदय चन्द्र ना "रिनोद": गजेन्द्रजी, अर्क
जतेक काज कएल अछि से मैथिलीमे आग धरि
कियो नहि कएल छल । शुभकामना । अर्कसँ एखन
रँडत काज आव कवरक अछि ।

१७. श्री छद्म कमार कथप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अर्कसँ
भैँठै एकठै स्थायी स्थाप रनि गेल । अर्क जतेक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

काज एहि रसमे क२ गेल छी तहिसें हजार गुणा
आब रैनीक आशा छि ।

१५. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा
जेन शिष्ट नहि भेटैत छि । अहाँक कवकक्षेत्रम्
अनुमनक सम्पूर्ण रूपे पठि गेलहूँ । ब्रह्महन्त रङ्ग
नीक लागल ।

१६. श्री हीरेन्द्र कुमार झा- बिदेह ई-पत्रिकाक
सब अंक ई-पत्रसें भेटैत बहल छि । मैथिलीक
ई-पत्रिका छेक एहि रातक गरि होगत छि । अहाँ
आ अहाँक सब सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना ।

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्करण, ISSN 2229-

(c)२००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि छटि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पारिषद ई-पत्रिका । ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडव । सहायक सम्पादक: शिर कमार सा आ झल्लाजी (मनोज कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन: नागेन्द्र कमार सा आ पञ्चिकाव रिहानन्द सा । कवि-सम्पादन: रानीता कमारि आ बमि रेखा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रम्या आ डा. बाजरीर कमार रम्या । सम्पादक- नाटक-वर्गमंच-चलचित्र- रेचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनर्गठन मंडव आ प्रियंका सा । सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत डोवर ।

बचनाकाव अपन मौखिक आ अप्रकाशित बचना (जेकर मौखिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छति) ggaj_endra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन सम्बन्धित परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल होतै पठेताह, से आशिा करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे आ बचना मौखिक छति, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पारिषद) आ पत्रिकाकेँ देल



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०२)

मासिक बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

जा बहल छि । मेन प्राप्त होयबैक रौद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पारिभाषिक ई पत्रिका छि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएल जायत छि । एहि ई पत्रिकालेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जायत छि ।

(c) 2004-12 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमे प्रकाशित सबैक बचना आ आकाङ्क्षिक सर्वाधिकार बचनाक आ संग्रहकर्ताक लगमे छि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंवा आकाङ्क्षिक उपयोगक अधिकार किनबैक हेतु ggajendra@videha.co.in पर सम्पर्क कर । एहि साङ्केतिकेँ प्रीति या ठाकुर, मधुलिका चौधरी आ बन्धि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबट्ट

